शतावधानी साध्वी जी म० श्री निर्मला श्री जी एम ए, साहित्यरत्न

गत वर्ष चातुर्मासार्थ राजस्थान में पहली बार आपश्री का पदार्पण हुआ। और वह लाभ जयपुर को मिला। मूल गुजराती होने पर भी संस्कृत और हिन्दी पर आपका पूर्णाधिकार है। गत चातुर्मास में इस हिन्दी भाषी क्षेत्र में आपश्री ने ज्ञान की अपूर्व गंगा बहाई।

इसे भी जयपुर संघ का सौभाग्य कहें कि आपकी निश्रा में श्री संस्कार अध्ययन सत्र (बहिनों के शिविर) का आयोजन भी राजस्थान में पहली बार जयपुर में ही हुआ।

आपके इस साल दूसरे चातुर्मास का लाभ भी जयपुर को मिला है। आप सदृश विदुषी साध्वी जी म० से राजस्थान बराबर लाभान्वित होता रहे इसी शुभ कामना के साथ।

※ सांचो जैन ※

सांचो जैन तो तेने कहिये, जे जीव दया ने जाणे रे।
निर्लोभी ने कपट रहित जे, राग रीश नवि राखे रे।
मन वचन काया ये निरमल, तृष्णा ने जे जीत रे ॥सांचो ॥१॥

हिंसा झूंठ ने चोरी छोड़े, परनारी नवि पेखे रे।
पर द्रव्य ने तृण सम माने, विषयासक्ति वारे रे ॥सांचो॥२॥

समभावी ने आतमरामी, पर निन्दा नो त्यागी रे।
मोह माया ने जीती जाणे, श्रद्धा हृदये धारे रे ॥सांचो॥३॥

धैर्य अनुपम वाणी गम्भीर, मान निवार्यु जेणे रे।
अरिहंत प्रतिमा प्रेमे पूजे, धन धन आतम तेने रे ॥सांचो॥४॥

※ ※ ※

मानव जैन तो तेने कहिये, जे आत्मसम जग जाणे रे।
परहित कारण प्राण ने अर्पे, पर सुख मां सुख माणे रे ॥१॥

सत्य दया शान्ति उर धारें, हिंसा दोष ने टाले रे।
ब्रह्मचर्य संयम वैराग्ये, अन्तर ने अजुवाले रे ॥२॥

विषय कषाय ने दूर निवारे, प्रभु भक्ति मां चित्त स्थापे रे।
तन मन धन जीवन ना भोगे, परनां दुःखड़ा कांपे रे ॥३॥

आशा तृष्णा ममता त्यागी, पर धन हाथ न लेवे रे।
आतमज्ञान अन्तर मां पामें, सकल तीरथ ने सेवे रे ॥४॥

महावीर मूर्ति ने पगले चाली, धर्म दाज दिल धार रे।
आत्म स्वराज्य हृदये प्रकटावे, जय अरिहंत उच्चारे रे ॥५॥

सम्पादकीय :

※ ज्ञान का मरोड़ ※

"कुछ वर्षों पूर्व एक ज्ञानी सत के प्रवचन में ज्ञान की महिमा और महत्ता पर कुछ सुन कर समझने को मिला। ज्ञानी गुरुवर्य ज्ञान और ज्ञानी के गुणो का विस्तृत विवेचन कर रहे थे। मुझे याद है तब उन्होंने ज्ञानी के लक्षणो पर प्रकाश डाला था, ज्ञान को प्राप्त कर लेने से ही कोई ज्ञानी नही माना जा सकता। यदि ज्ञान को जानकर कोई अपने जीवन में उतारे तो ही वास्तविक ज्ञानी वह बन सकता है। ज्ञान के गुण उसके जीवन में दृष्टिगोचर हो, यानी विनय, विवेक और व्यवहार दर्शन उस व्यक्ति के जीवन में उस ज्ञान के माध्यम से आवे तो अवश्य ज्ञानी है, और कितना ही ज्ञान पढ लिख कर सत्ता का मद, ज्ञान का अभिमान आ जाये तथा कृत्य अकृत्य का बोध जीवन से निकल जावे तो वह ज्ञानी कहला नही सकता क्योकि उसे ज्ञान का मरोड आ गया है यानी अहंभाव व्याप्त हो गया है।

बहुत सरलता से ज्ञान की गरिमा का यह विवेचन था। वैसे तो ज्ञान प्राप्त करने की कोई सीमा ही नही है पर आज किसी भी क्षेत्र मे थोडा भी ज्ञान हो गया तो वह व्यक्ति ज्ञान के गुण को भूल कर ज्ञान से ज्ञानी बनने के बजाय ज्ञान का गुबारा बनाने को ही तैयार हो जाता है। धन का मद तो आ जाना स्वाभाविक है कारण शास्त्रकारों ने धन को पाप का मूल बतलाया है, पर ज्ञान का मद यदि आ जावे तो वह स्वयं-समाज परिवार और राष्ट्र के लिए घातक बन जाता है। इस मद से न साधु बचते हैं न श्रावक, कई-कई बार तो ऐसा भी देखा जाता है कि अपनी विचारधारा की पुष्टि में कृत्य-अकृत्य का विचार किये बगैर ही ऐसी प्ररूपणायें की जाती हैं जो शासन के उत्थान के बदले नई पीढी की श्रद्धा को गिराने व शासन व समाज को हेय बनाने का कारण भूत भी बन जाती है।

अनेकान्तवाद का पोषक जिनशासन कई प्रश्नो पर आज इसी तरह की विवादास्पद स्थिति से गुजर रहा है। भगवान महावीर की व उनके सिद्धान्तों की दुहाई देकर हम आज उनके अहिंसा-अपरिग्रह और अनेकान्त का जनाजा निकालते भी नहीं चूकते—किसी भी वस्तु को सर्वदृष्टि से दृष्टिपात करने की बुद्धि आज कहां लोप हो गई? दृष्टि राग का विरोधी जिन शासन आज दृष्टि राग का पोषक बन रहा है।

जैन शासन में कुछ ज्वलंत प्रश्न इस समय ऐसे रूप में उपस्थित है जिससे नई पीढ़ी की श्रद्धा डिग रही है। भगवान महावीर की २५००वीं तिथि को आज विवाद का प्रश्न बना दिया गया है। विचारों के भेद स्वाभाविक है पर व्यवहारिकता और दूर-दृष्टि से परे रहकर केवल हम मानें वही ठीक है बाकी सब जैन शासन विरुद्ध है क्या स्याद वाद है ? एक अवसर के लिये भिन्न-भिन्न तरह के आयोजन हो सकते है पर उनके लिये कटुता लाकर क्या वे महावीर भगवान का अनादर नहीं कर रहे ! यदि दो विचार-धारा है भी, दोनों अपनी-अपनी विचारधारा मुजब कार्यक्रम अवसर के अनुकूल जनता के सामने रखे और उनको कार्यरूप में परिणित करने का प्रयास करे। कुछ विचार ऐसे भी हो सकते है जो दोनों विचारधारा वालों को मान्य हों। क्या वे दोनों मिलकर उसे सम्पन्न नहीं कर सकते, विध्वन्सात्मक और विरोधात्मक रुख के बजाय यदि दोनों ही पक्ष रचनात्मक व सृजनात्मक दृष्टिकोण अपना लें तो कितना सुन्दर हो। भारत के सभी प्रान्तों की राजधानियों में इस अवसर पर महावीर भवनों का निर्माण कराया जाय। भगवान महावीर का साहित्य वहां संगृहीत किया जाय। शोध खोज के जिज्ञासुओं को वहां ठहरने की व अभ्यास की सुविधा मिले।

इसी तरह भगवान महावीर के मुख्य उपदेशों का सर्वसम्मत लेख तैयार कराया जावे। वे ताम्र पत्रों पर खुदवाया जावे व सारे देश मे २५०० वी जयन्ती के अव[सर] २५०० स्थानों पर लगाये जावे। भार[त] के जैन मंदिरो को जिनकी हालत ठी[क] हो अच्छी हालत मे बनाने के लिए जी[र्णोद्धार] कराया जावे। जनता को भगवान म[हावीर] के सिद्धान्तों का ज्ञान साहित्य प्रक[ाशन] प्रवचनों द्वारा कराये जावे। इसी तर[ह] मुद्दों पर कार्य किया जावे, तो शा[सन का] कितना भला हो।

इसी भांति तिथि का प्रश्न भी मु[ँह बाये] खडा है। सोमवारियां—मंगलवारि[यों को] अभवी कहने से नहीं चूकते और [मंगल]वारिया सोमवारिया को समकित[ी नहीं] मानते। कैसी विडम्बना है जैन शास[न में] क्या महावीर ने यही सिखलाया है [कि मेरे] बाद मेरे नाम पर तुम ये सब कृत्य कर[ो।] हृदय की कोमलता जिनशासन के प्र[ति] की धगस कहां चली गई है। ज्ञान का [मद] इतना अधिक बढ़ गया है कि अपनी [विचार]धारा के मुकाबले दूसरे की कोई सु[नने को] तैयार नहीं। जैन शासन की खाल ह[म उधेड] रहे है और वह भी सिद्धान्त और शा[सन के] नाम पर। समय का ध्यान नही र[खकर] चलने वालों को जमाना भी मा[फ नहीं] करता, ज्ञान की एक सीढ़ी पर चढ़क[र] के मालिक बन बैठने वाले अपनी मा[न्यता] के प्रति चाहे कितनी ही उपलब्धि प्रा[प्त कर] ले पर नई प्रजा में श्रद्धा और सम[्यक्त्व] खत्म कर देने के निमित्त बनने से वे [बच नहीं] सकेंगे। और आज तो इस तिथि [...]

आड में यह प्रयत्न भी हो रहा है कि जो क्षेत्र हमारी मान्यता मे नही है उनके लिये जितना भी विरोधात्मक कार्य हम कर सकें करें। तिथि चर्चा को तो एक निमित्त बनाया जा रहा है पर उस आड में दूसरे उन सब ही भेदपूर्ण मान्यताओ को उकसा कर अपनी विचारधारा वालो से अनर्गल कार्य कराने से भी चूका नही जाता।

ऐसी ही कुछ स्थिति जयपुर के तपागच्छ सघ के नाम पर बनाई जा रही है। जयपुर का यह सघ गत वर्षो मे अपनी एकता, सूझ-बूझ योग्य मुनिराजो और साध्वीजी महाराजो के चातुर्मास—धार्मिक आराधनाओ व हिसाबो के सर्वसाधारण के लिये प्रकाशन के कारण सारे सघो में अपना अच्छा स्थान बना पाया है। गत वर्ष यहा विदुषी साध्वी श्री निर्मलाश्री जी एम ए का चातुर्मास था। इस चातुर्मास मे हुई धार्मिक आराधना को देखकर कुछ विघ्न सन्तोषी लोगो का सन्तुलन खराब होना स्वाभाविक था, फिर सन्तवर्ग मे भी ऐसी मान्यता वाले तो हैं ही, जिनको साध्वी समुदाय का उत्कर्ष सुहाता नही, बेबुनियाद प्रश्न खडे किये गए, उनको पीठ भी मिली ही और समाचार पत्रो के जरिये बेबुनियाद प्रचार किया गया। हजारो रुपये इस कार्य के लिये खर्च कराये गये। पर इसका असर इस सघ पर कुछ न हुआ और इसके साथ ही साध्वी जी के सानिध्य में बहनो के लिये अध्ययन सत्र की योजना बना कर कार्यरूप में परिवर्तित की गई। इसका भी इन लोगो द्वारा भरसक विरोध किया गया, पर यह शिविर जिन विशेषताओ के साथ सम्पन्न हुआ उसका अन्दाज 'मणिभद्र' के सलग्न विशेषाक से आप जान सकते है। साध्वी समुदाय के हाथो यह सफल कार्य सम्पन्न होना तो उस विचारधारा वालो के लिए और भी दुखदायी बन गया—ऊपर भी यह बताया जा चुका है कि यह कार्य यहा के कुछ बन्धुओ का ही नहीं था अपितु कुछ ज्ञानी वृन्दो की भी प्रेरणा इसमें सन्निहित थी।

जयपुर के सघ ने इस सबध में काफी उदारता व सहनशीलता व व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया। इसके कारण विघ्न सतोषी अपने को सफल न मानकर जयपुर सघ के खिलाफ अनर्गल प्रचार करने से भी नही हिचकिचाये। जैन समाज के एक पत्र 'कल्याण' के पर्युषण पर्वाङ्क मे एक लेख फिर प्रकाशित कराया गया, जिसमे साध्वीश्री व यहा के सघ को घसीटने का दुप्रयास किया गया है। इस पत्र ने जिस ढङ्ग से इस लेख को छापा है उसमें भी चतुराई बरतने का प्रयास किया गया है। लेख के ऊपर जो टिप्पणी लेखक महोदय की प्रशस्ति के रूप मे दी गई है उसमें नीचे कही भी सम्पादक का हवाला नहीं दिया गया है। लेखक महोदय का जो गुण गान किया गया है उसमे हमें कोई प्रयोजन नही है पर आश्चर्य तो यह है कि लेख के ऊपर के बाक्स में जो लिखा गया है उस सम्बन्ध में लेख मे एक शब्द भी नहीं है।

इससे जाहिर होता है कि सम्पादक महोदय ने लेख के सम्बन्ध में यह टिप्पणी नहीं की है अपितु इस लेख के प्रेरक (जो भी हो ?) उनके लेखन को उद्धृत किया है। हमें दुःख है किसी भी संघ के सम्बन्ध में कुछ भी लिखने या प्रकाशित करने से पूर्व उस संघ के कार्यकर्ताओं से भी जानकारी तो ले लेनी चाहिये। साथ ही जिनके सम्बन्ध मे यह लेख लिखा गया है क्या सम्पादक महोदय ने उनसे भी इस सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करली है। पत्रकारिता का कार्य बहुत ऊंचा और पवित्र समझा जाता हैं। इस पर भी इस पत्र और उसके संचालकों ने जो यह मार्ग अपनाया है वह कितना उचित है वे स्वयं हृदय को टटोल कर देख लें। विचारों का भेद हो सकता है, होता आया है पर इस तरह किसी संघ या साधु साध्वी को व्यर्थ में बदनाम करने की दृष्टि से लिखे गये लेख को प्रकाशित कर उन्होंने मर्यादा का उल्लंघन ही किया है ? प्रकाशित करने से पूर्व अच्छा होता यदि वे साध्वीश्री जी से इस सम्बन्ध में सारी वस्तुस्थिति की जानकारी कर लेते, इस तरह के प्रकाशन का कितना नुकसान हो सकता है इसकी कल्पना सम्पादक महोदय जयपुर में आवें तो हो सकती हे। किसी भी संघ के वैमनस्य को निकाल कर एकता कराने का प्रयास श्रेय है और एकता को तोड़ कर वैमनस्य पैदा कराने का कार्य हेय है। इस लेख में साध्वीजी के नाम पर जो प्रचार किया गया है वह केवल उस वर्ग की सूझ का कारण है जो साध्वी समुदाय को निम्न स्तर पर रखना चाहते हैं तथा उनके उत्कर्ष में बाधक है। हम मानते हैं कि इन लेखक महोदय के लेख इन पत्रों में हमें कभी देखने को नहीं मिले और सम्पादक महोदय का उनका निकट का सम्बन्ध हो यह भी नहीं जंचता नहीं। इससे स्पष्ट है कि सम्पादक महोदय ने प्रभावशाली दबाव से ही यह सब कुछ छापा है। पर इससे जयपुर संघ और शासन का कितना भला वे कर सके है वे खुद विचार लें। इस तरह के कार्यो से जगह-जगह संघों में फूट के बीज बोये जा रहे है। अपने विचारों की और स्वार्थों की पुष्टि के लिये धार्मिक क्षेत्र में भी आज राजनैतिक क्षेत्रों के से हथियार प्रयोग किये जाते हैं। यह ज्ञान का मरोड नहीं तो और क्या है। देश के भिन्न-भिन्न नगरों मे जैन संघों की स्थिति इन विवादों से दुःखद बन चुकी है। हमारी ज्ञानी संतों से विनती है कि वे गम्भीरता से इस सम्बन्ध में विचार कर अपनी मान्यताओं को मनवाने का दुराग्रह छोड कर सरल और सुबोध विचारधारा से काम लें तो गलत रास्ते पर चले हुये भी सही रास्ते पर एक दिन आ जावेंगे अन्यथा सही व श्रद्धावान संघ भी इस वैमनस्य की आग में स्वाहा हो जावेंगे।

आज तक कभी भी पुरुष प्रधानता के सम्बन्ध में कोई बात हुई ही नहीं। लेखक महोदय को जयपुर संघ की लोकप्रियता भाई नहीं तथा जिस विचारधारा के वे पोषक हैं

। एकान्त दृष्ठिकोण पर चलने के आग्रह जयपुर सघ ने माना नही, इसलिये ;नियाद चीज को हिटलर के गोयवल्स की :ह बार-बार प्रचारित कर वे अपनी बात । सत्य को जामा पहिनाते हैं और जयपुर र को अपनी नीतियो से फेरने के लिये कुछ ! लोग यह सब खेल-खेल रहे हैं यह सत्य र अहिसा का गला घोटना नही तो और ा है ?

आशा है "कल्याण" पत्र के सम्पादक होदय वस्तुस्थिति को समझकर भविष्य मे सी भी सघ, कार्यकर्ता व श्रमण के लिये गैर पूरी जानकारी के इस तरह के प्रका- नो से दूर रहेगे। पत्रकारिता की गरिमा को कायम रखेंगे और अपने पत्र के अगले अङ्क मे इस सम्बन्ध मे स्पष्टीकरण करेंगे।

साथ ही लेखक महोदय से भी मेरी नम्र विनती है कि वे अपने मान्य विचारो के प्रति इतने निश्चित न बनकर व्यावहारिक दृष्टि-कोण अपनावें। शासन की एकता और शासन की गरिमा के लिये बड़े-बड़े त्यागी महात्माओ ने भी समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया है, ज्ञान का मरोड अपने मे नही आने दिया है अत रचनात्मक विचारधारा को अपना कर सघ के उत्थान में अपने ज्ञान का उपयोग करे तो शासन की बहुत बड़ी सेवा होगी।

—हीराचन्द बैद

-●-

मदनरेखा "

मदनरेखा की इच्छा देख कर युगबाहू देव ने हासती को मिथिला मे पहुँचाया। पहले जिनेश्वर गवत को वन्दना करके पीछे मदनरेखा और युगबाहू—ये दोनो साध्वीजी महाराज के उपाश्रय र पहुँचे। वहाँ साध्वीजी म० को वन्दना करके उनके पास बैठे। मुख्य साध्वी जी म० ने उपदेश दिया—"इस ससार मे धन, स्वजन और देह अशाश्वत है, केवल धर्म शाश्वत है। पुण्य-पाप के विपाक को समझ कर उत्तम व्यक्ति को धर्म की शरण लेनी चाहिये।"

साध्वी जी म० का उपदेश सुन कर मदनरेखा पुत्र-मोह से भी उदासीन हो गई। उसने युगबाहू देव से कहा—"मेरा मन साध्वी बनने का निश्चय कर चुका है। अब मुझे पुत्र दर्शन की लालसा नही रही। जब मन विरक्त हो गया तो पुत्र परिवार का मोह कैसा ? और किस लिये ? मैं अभी सयम ग्रहण करूगी। आप अपना इष्ट कीजिये।" ऐसा सुन कर युगबाहू-देव, सब साध्वी जी म० तथा मदनरेखा को नमस्कार करके स्वर्ग मे गया। मदनरेखा दीक्षित होकर साध्वी सुव्रता के रूप मे कठोर तपश्चरण मे जुट गई।

—*×*—

श्री आबू राणकपुर जैन बाल तीर्थयात्रा संघ, जयपुर

मंत्री श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल, जयपुर

गत् ४ सघों से प्रेरित होकर गत् वर्ष साध्वीजी श्री निर्मला श्रीजी एम. ए., साहित्यरत्न के सद उपदेश से हमने भी राजस्थान के प्रमुख तीर्थो की यात्रा का दृढ निश्चय किया ।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के पावन प्रसग पर तीर्थाधिराज श्री शत्रुञ्जय महातीर्थ की नयन रम्य झाकी का प्रदर्शन किया जिसका उद्घाटन सघ मन्त्री श्री हीराचद जी बैद ने करके श्रीसंघ को दर्शनों के लाभ से लाभान्वित किया । इस नयन रम्य झाकी से हमारे मे नयी चेतना प्रादुर्भाव हुआ ।

शाश्वती अट्ठाई (नवपद ओली) में राजस्थान के प्रमुख तीर्थों की यात्रा का निश्चय था। इस हेतु यहाँ के सघ के प्रतिनिधियों के पास हमारे कुछ सदस्यगणो ने स्वयं की भावनाओं को प्रस्तुत करते हुये शुभाशीर्वाद प्राप्त किया एवम् प्रतिनिधियों ने उदारता दिखाकर हमारे उत्साह में अभिवृद्धि की। एक वस द्वारा मण्डल के सभी सदस्यों को यात्रा करने हेतु टिकिट ३१) रु० रखा जिसमे यात्रा भोजन खर्च भी सम्मिलित था।

आश्विन सुद ७ सोमवार २७–९–७१ की सायंकाल ४ वजे आत्मानन्द जैन सभा भवन मे पूज्य साध्वीजी म. आदि समस्त श्री संघ से आशीर्वाद प्राप्त कर मन्दिरजी के दर्शन करते हुये, जुलूस के रूप में नगर के प्रमुख वाजारो मे होता हुआ साँगानेरी गेट पहुँचा जहां से सायंकाल ६ वजे प्रस्थान कर रात्रि बस सफर में व्यतीत करते हुये प्रथम मुकाम चित्तौड़गढ़ पहुँचे, जहा केसरियाजी गुरुकुल मे सामायिक प्रतिक्रमण दर्शन नवकार सीकर गढ़ पर पहुँचे जहा पूजा सेवा कर प्रभु भक्ति का अपूर्व आनन्द प्राप्त करते हुये वहां के ऐतिहासिक भवनों को देख कर गुरुकुल मे भोजनादि से निवृत होकर करेड़ा पार्श्वनाथ हेतु प्रस्थान किया ।

मार्ग में सर्पराज (नागदेवता) ने साक्षात दर्शन दिए। तत्पश्चात् वर्षा ने अपना रंग जमाना शुरू किया मानो कमठ ने जिस प्रकार उपसर्ग किया हो। करेड़ा पार्श्वनाथ पहुंचते-पहुंचते वर्षा काफी हुई और वर्षा का सामना करते हुए हम सब को तीर्थ की यात्रा व प्रभु के दर्शनो के लिये जाना पड़ा ।

दर्शनो के पश्चात् उदयपुर नगरी में पहुंचे जहां हाथी पोल धर्मशाला मे रात्रि विश्राम किया। पूज्य पुण्डरीक सागरजी, महायश सागर जी की निश्रा में सध्या प्रतिक्रमण किया । अगले रोज प्रातः केसरीया तीर्थ की यात्रार्थ प्रातः प्रतिक्रमणादि से निवृत होकर ५।। वजे उदयपुर से प्रस्थान किया। केसरिया जी मे दर्शन कर नवकारसी करके पूजा में लवलीन वने । लगभग घण्टों तक प्रभु भक्ति मे मग्न हो नाचने लगे एवं भक्ति का वास्तविक आनन्द प्रात करने लगे। दिन को ११।। वजे प्रस्थान कर उदयपुर पहुंचे। यहाँ पहुंचकर भोजनादि से निवृत होकर शहर के मुख्य रमणीय स्थान को देखे संध्या के वक्त ४० जिन मन्दिरों के दर्शन का लाभ प्राप्तकर पू० म० महायशसागरजी के आर्शीवाद

प्राप्त करने गये। सध्या का प्रतिक्रमण म के सानिध्य मे किया। रात्रि मे प्रभु भक्ति का कार्यक्रम पद्मनाभ जी तीर्थ मे रखा। रात्रि विश्राम कर प्रात दर्शन कर नवकारसी आदि मे निवृत होकर राणकपुर जी के लिये प्रस्थान किया।

मार्ग बडा विकट था। अत मध्याह्न ११ बजे राणकपुरजी पहुँचे जहा १४४४ स्थम्भो आदि की राजस्थानी अनुपम कला की कलाकृति निर्मित देव विमानतुल्य देरासर मे विराजित प्रभु आदिनाथ के दर्शन, वदन, पूजन कर प्रभु भक्ति का आनंद प्राप्त कर ऐतिहासिक घटनाओ को ध्यान में रखते हुय भोजन कर रवाना होकर सादडी पहुँचे। जहा पू० आ० पूर्णानन्द सूरीजी म० आदि के दर्शन-वदन कर व आशीर्वाद प्राप्त कर शहर के सभी मन्दिरो के दर्शन करते हुए मुछाला महावीर जी पहुँचे, जहा दर्शन वदन कर प्रभु की चमत्कारिक घटनाओ को ध्यान मे रखते हुए रात्रि सफर करते हुए प्रात ५ बजे आबू रोड पहुँचे जहा सामायिक प्रतिक्रमण प्रभु दर्शन कर रवाना होकर अचलगढ पहुँचे जहा १४४४ मन स्वर्ण मिश्रित धातु आदिनाथ आदि के दर्शन पूजन कर नवरात्रि आदि मे निवृत्त होकर देलवाडा के लिए प्रस्थान किया। प्रात १०॥ बजे देलवाडा पहुँचे, जहा पूजा-सेवा कर प्रभु भक्ति का आनन्द प्राप्त कर, भोजनादि से निवृत्त होकर जग-प्रसिद्ध देलवाडा के जैन मन्दिर की कला-कृति का अवलोकन किया, तत्पश्चात यहा के रमणीय स्थानो का निरीक्षण कर सध्या के समय सामायिक प्रतिक्रमण आदि कर रात्रि मे प्रभु भक्ति का कार्यक्रम आदिश्वर दादा के यहा रखा, जिसमे मडल के नन्हे-मुने कलाकारो ने अपनी सगीत कला का प्रदर्शन किया। रात्रि विश्राम, प्रात नित्य नियम करके रवाना होकर मध्याह्न १२ बजे जीरावला जी महान तीर्थ की यात्रार्थ वहा पहुँचे।

जीरावला मे पूजा सेवा एवम् प्रभु भक्ति का आनन्द प्राप्त करते हुए भोजनशाला मे भोजनादि से निवृत्त होकर स्वदर होते हुए वामनवाड पहुँचे जहा जीवत स्वामी की प्रतिमा के दर्शन किये, प्रभु के २७ भवो के पट्टो के दर्शन कर उपसर्ग स्थान एवन् समेत शिखर जी की झाकी के दर्शन कर पिंडवाडा (जो कि विजय प्रेम सूरि म० की जन्म-भूमि है) पहुचे। जिन मन्दिर के दर्शन कर पूज्य प० भद्रकर विजयजी महाराज के दर्शन किये। आशीर्वाद प्राप्त कर नमस्कार मन्त्र के नियम लेकर रात्रि विश्राम किया। प्रात नवकार शीपिंडवाडा श्री सघ की ओर से कराई गई थी। प्रात अर्ध शत्रुजय तीर्थ सिरोही नगर पहुँचे जहा १४ जिन मन्दिरो के दर्शन कर यहा विराजित कोटि नवकार समाराधक आ० यशोदेव सूरी के दर्शनो का लाभ प्राप्त कर प्रात ११ बजे शिवगज पहुँचे, सघ के आगेवानो ने स्वागत किया। भोजनादि से निवृत्त होकर जिन मन्दिरो के दर्शन के साथ-साथ आचार्य निरुपमसूरी म० के दर्शनो का लाभ प्राप्त करके तखतगढ पहुँचे, जहा उपाध्याय दर्शनसागर जी म० से आशीर्वाद प्राप्त किया। जिन मन्दिरो के दर्शनों के पश्चात् एक क्षमा याचना सभा का आयोजन किया। जिसमें क्षमा याचना की। तद्पश्चात सघ पूजा करके १ रु० प्रत्येक यात्री को दिया। पाक्षिक प्रतिक्रमण पू० म० के सानिध्य मे किया। रात्रि मे १० बजे पाली पहुँचे। जहा जिन मन्दिरो के दर्शन करने के पश्चात् जैन धर्म्म दिवाकर आचार्य विजयसुशील सूरि म० के दर्शनार्थ गये। पूज्य आ० श्री से शुभाशीर्वाद प्राप्त कर रात्रि मे सफर करते हुये प्रात काल राजस्थान की राजधानी गुलाबी शहर जयपुर नगर मे पहुँचे जहा सामूहिक रूप मे जिन मन्दिर तक गाते-बजाते प्रभु के गीत गाते हुए श्री सुमतिनाथ भगवान के मन्दिर मे पहुँचे। पू० साध्वीजी से आशीवाद प्राप्त कर स्व स्थान पहुँचे।

इस प्रकार मे शासन देव की असीम कृपा से यात्रा सानन्द सफल हुई। समय की प्रतिकूलता के कारण हमारे कुछ सदस्य अस्वस्थ भी हो गये। चिकित्सा की पूर्ण व्यवस्था मण्डल की ओर से रही। हमारी इस प्रकार की यात्रायें बार-बार सम्पन्न होती रहें, ऐसी ही शासन देव से प्रार्थना— ❀❀❀

महासती मदनरेखा और कृतज्ञ-देव

* साध्वी निर्मलाश्री जी M. A., साहित्यरत्न

मणिरथ सुदर्शन नगर का राजा था। युवराज युगवाहु उसका छोटा भाई था। मदनरेखा उसकी धर्मपत्नी थी। वह रति के समान रूपवती और लावण्यवती थी एवं गुलाव के फूल के सदृश सुकुमार। सौन्‍ ... सत्ता पाकर भी वह वड़ी विवेकशीला, धर्मनिष्ठा और पतिव्रता थी। उसे चन्द्र सदृश आनन्ददायक पुत्र था कुमार चंद्रयश। ऐसी रूप-गुणवती जीवन-संगिनी पाकर युगवाहू अपने को परम भाग्यशाली मानता था।

एक वार मदनरेखा के दिव्य-सौन्दर्य को देखते ही राजा मणिरथ का चित्त व्याकुल हो गया। उसने मन मे सोचा "कैसा अद्‌भुत सौन्दर्य।" यह मेरी पटरानी वनने योग्य सर्वथा उपयुक्त है।

मणिरथ ने मदनरेखा को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये सैंकड़ो विफल प्रयत्न किये। विश्वस्त दासियों के साथ सुन्दर भोग-सामग्रिया और मिठाइयां उसे भेजनी शुरू की। मदनरेखा ने उसे मणिरथ का पितृ-प्रेम और वात्सल्य समझ कर स्वीकार किया। मणिरथ ने इस स्वीकृति को मदनरेखा की प्रणयेच्छा समझ लिया और वह एक दिन मौका देख कर सीधा मदनरेखा के महलों मे चला आया।

मदना चौंक उठी। मणिरथ के अनुचित रंग-ढंग को देख कर वह खड़ी हो गई और दृढ स्वर में पूछा—"महाराज! इस समय! आप अकेले यहा? मैं तो आपकी पुत्री हूँ, जो भी आज्ञा थी, सूचना करते, आपको यहाँ आना उचित नही है।" मणिरथ ने निर्लज्जता पूर्वक कहा—"मदना! मैं तेरे सौन्दर्य का पिपासु हूँ। प्यार मे कभी भी असमय नही होता।" "महाराज! पुत्री पर बुरी नजर! फिर धर्म कहा रहेगा? आप चुपचाप चले जाइये, नही तो अनर्थ हो जायगा।"

मदनरेखा की फटकार से मणिरथ का नशा तो उतर गया। किन्तु मदनरेखा को पाने की गुप्त योजनाएं वनाने लगा। मदनरेखा इस जहर को पी गई। भाई-भाई में वैमनस्य न हो जाय, इसलिये उसने पति से भी इस वात की चर्चा नही की।

मणिरथ ने एक वार युगवाहू से कहा—"वंधु! सीमा पार के क्षेत्रों मे कुछ अशान्ति वढ़ रही है, अतः मुझे वहा जाना आवश्यक है।" युगवाहू ने विनयपूर्वक कहा—"महाराज! आप यहां रहिये। मैं ही जाकर कार्य पूर्ण करके आऊगा।" मणिरथ तो यही चाहता था। प्रयाण की तैयारी होने लगी। मदनरेखा से जव युगवाहू से अपने युद्ध-प्रयाण की स्वीकृति मांगी, तव वह चौक गई। उसे षडयन्त्र की गंध आने लगी। युगवाहू ने कहा—प्रिये! वड़े-वड़े युद्धों में विजय प्राप्त करके ही लौटा। आज इस छोटी-सी युद्ध की वात पर तुम इतनी उदास क्यों हो गई?

युगवाहू के वार-वार पूछने पर मदना ने उस दिन की घटना सुनाई। सुनते ही युगवाहू का हृदय विचलित हुआ। किन्तु मदना को आश्वासन देने

के लिए कहा—"प्रिये ! मेरे भ्राता इस प्रकार का नीच विचार नही कर सकते, अत उनके प्रति किसी प्रकार का वहम मत करो।"

मदनरेखा ने समझ पूर्वक कहा—"प्रिय ! हो सकता है आपका ही अनुमान ठीक हो, फिर भी युद्ध मे सावधान रहना।" मदनरेखा की अश्रुभीनी विदाई लेकर युगवाहू ने सीमा पार युद्ध के लिए प्रयाण किया। पीछे मे मणिरथ की मदनरेखा को ललचाने की अनेक व्यर्थ चेष्टाए हुई। इधर युगवाहू भी विजय प्राप्त कर सुदर्शनपुर को लौट आया।

एकदा मदनरेखा ने स्वप्न मे चन्द्र देखा। प्रात काल उसने युगवाहू से कहा। युगवाहू ने कहा—"प्रिये पुन रत्न की प्राप्ति होगी। कुछ समय बाद मदनरेखा गर्भवती हुई। गर्भ वृद्धि के साथ उसे जिनेश्वर देव की पूजा, गुरुवर के दर्शन तथा शास्त्र श्रवण का दोहद हुआ। युगवाहू ने दोहद पूर्ण किये।

रागीजनो को प्रिय वसत ऋतु का सुहावना समय आया। युगवाहू अपनी प्रिया सह नगर के बाहर उपवन मे गया। विविध क्रीडा पूर्वक दिन को निगमन कर रात्रि मे अपनी प्रिया सह कदली वन मे सोया। इधर मणिरथ मदनरेखा को पाने के लिये बहुत बेचैन हो गया। और कोई रास्ता नही देख कर उसने युगवाहू को मारने का निश्चय किया।

रात्रि के गहन अधकार में मणिरथ तलवार को लेकर उपवन की ओर चल पडा। उसने पहरेदार को पूछा—"युगवाहू कहा है ?" वे बोले—"कदली गृह में", वन मे रहा हुआ मेरे अनुज को कोई उपद्रव न हो इसलिए मैं उसे लेने के लिए आया हूँ"—ऐसा कह कर मणिरथ ने उसमे प्रवेश किया। युगवाहू अपने बडे भाई को देखकर एकाएक उठा और प्रणाम किया। मणिरथ ने कहा—"वधु ! रात्रि के समय यहा रहना उचित नहीं है, नगर मे चलो।" पिता तुल्य बडे भ्राता की आज्ञा को मान कर युगवाहू जैसे ही जाने के लिए उद्यत हुआ वैसे ही मणिरथ ने पाप और अपकीर्ति के भय को बिना गिने ही उसकी ग्रीवा पर खड्ग का प्रहार किया। युगवाहू धडाम से गिर पडा। "अन्याय-अन्याय" कहती मदनरेखा चीख उठी। पहरेदार दौड़े। मणिरथ, तलवार गिर गई, कह कर कही भाग छूटा। इस दुर्घटना का समाचार पाते ही चन्द्रयश वैद्यो को लेकर आया, किन्तु घाव से खून अधिक बह जाने के कारण सारे प्रयत्न विफल रहे।

मदनरेखा ने देखा कि घाव मरणान्त लगा है। बचने की कोई आशा नही, मृत्यु की तैयारी है। उसने हृदय को मजबूत बना कर सोचा—अभी रोने का समय नही है। पति क्रोध मे हैं और अतिम सास ले रहे है। यह मूल्यवान घडी उनके अन्तिम उद्धार की घडी है। वे शान्त होकर प्रयाण करेंगे तो परलोक मे भी शान्ति मिलेगी। अगर ये इसी क्रोध मे मरेंगे तो नरकगति प्राप्त होगी और नरक मे तो शरीर पर एक नही अनेक घाव होंगे, वहा तो अनेक प्रकार के कष्ट सहन करने पडेंगे।

मदनरेखा पति के पास बैठ कर धीरे-धीरे कोमल वचन पति को कहने लगी—"हे धीर ! शान्त रहिये, भूल जाइये, आपको किसी ने मारा है। सोचिये, अपना आयुष्य ही क्षीण हो गया है। हे बुद्धिमान् ! भाई पर क्रोध मत रखिये। भाई को क्षमा दीजिये, क्षमा वीरो का भूषण है। मुझ पर मोह मत करिये, मृत्यु की घडी तो एक दिन आने ही वाली थी। परभव मे या इस भव मे किये हुए कर्म को भोगना ही पडता है। दूसरे लोग तो निमित्त मात्र होते हैं। आप इसी समय अरिहत, सिद्ध, साधु और जिनोक्त धर्म की शरण स्वीकार कीजिये। अठारह पाप स्थानक, चारो प्रकार के आहार और सावद्य कर्म का त्याग कीजिये। पच परमेष्ठि नवकार मत्र का

स्मरण कर मन को प्रसन्न बनाइये। प्राणीमात्र से क्षमा याचना कर सबको अपना मित्र समझिये।" मदनरेखा की प्रेरणादायी आराधना ने युगवाहू के हृदय को बदल दिया। उसने अन्तिम समय मे मदनरेखा के उन सब वचनों को मस्तक पर हाथ जोड कर भाव-पूर्वक स्वीकार किया, और प्रभु का स्मरण करते हुए प्राण त्याग दिये।

शोकातुर मदनरेखा ने सोचा कि मणिरथ ने जिस दुष्ट उद्देश्य से युगवाहू की हत्या की है, अब वह मेरे शील पर आक्रमण किये विना नही रहेगा। मेरा शील-धर्म खतरे में है ही, परन्तु चन्द्रयश का जीवन भी सुरक्षित नही है। अतः अपने शील की रक्षा के लिए और चन्द्रयश की भलाई के लिए मुझे यहां से भाग निकलना ठीक है। ऐसा सोच कर महापराक्रमी महासती मध्य रात्रि मे ही पूर्व दिशा की ओर निकल पड़ी। चन्द्रयश आदि शोकातुर होने के कारण किसी ने उसे जाते नही देखा। भयंकर रात! चारों ओर फैला घोर अंधकार! गर्भ की पूर्ण स्थिति में भी जंगल की पगडंडियों पर अकेली चल रही है। अब मणिरथ की ओर से शील पर आक्रमण नही हो सकता है— यह सोच कर, प्रातः होते अरण्य में पहुँची। मध्यान्ह होने पर एक सरोवर आया, वहां हाथ-मुंह धोकर फलादि लेकर प्राण वृत्ति की। बहुत चलने से श्रमित हो जाने के कारण वह सागारी अनशन करके कदली गृह मे सोयी। सायंकाल हो जाने के कारण घोर अंधकार फैला। शेर, चीते आदि हिंसक पशुओं की चीत्कारे (आवाजे) आने लगीं। सती जग गई और नवकार मंत्र का स्मरण करने लगी।

मध्य रात्रि में मदनरेखा के उदर मे भयंकर दर्द उठा। कुछ काल के अनन्तर वही उसने एक तेजस्वी पुत्र-रत्न को जन्म दिया। पुत्र को युगवाहू के नाम की मुद्रिका (अंगूठी) पहना कर रत्न कम्वल में लपेट कर मन की साक्षी से उसने वहां छोडा। शरीर को शुद्ध करने के लिए सरोवर की ओर गई। कपड़े धोकर, जैसे ही स्नान के लिए सरोवर मे प्रवेश किया वैसे ही जल-हाथी ने मदनरेखा को सूंड में पकड कर आकाश मे उछाल दिया। इसी समय कोई विद्याधर विमान में बैठ कर नदीश्वर द्वीप जा रहा था। मदना को गिरते देखकर बीच में ही झेल लिया और वैताढ्य पर्वत की ओर ले गया। मदनरेखा को लगा—खाड़ से निकली और कुएं मे जा गिरी। फिर भी साहस के साथ उससे कहा—"मेरा नवजात पुत्र वन मे अकेला पडा है। वह दूध विना यो ही मर जायेगा, आप मुझे उसके पास ले जाइये अथवा कृपया बालक को यहा ला दीजिये।"

विद्याधर ने कहा—"सुमुखि! तू मुझे पतिरूप में स्वीकार करे तो दास के समान तेरा सब कार्य मैं कर दूंगा। मेरा नाम है मणिप्रभ विद्याधर! मैं अनेक विद्याओं का स्वामी और रत्नावह नगर का राजा हूँ। मेरे पिता ने दीक्षा ली है। वे आज नंदीश्वर द्वीप की यात्रा करने को गये है। मैं भी उनके दर्शनार्थ जा रहा था कि तुम्हारे जैसी सुन्दरी का अचानक दर्शन हो गया। अब तुम्हारे दुःख के दिन दूर हो गये। तुम चलो, मेरी महारानी बन कर संसार के सब सुख भोगो और पुत्र की क्या चिन्ता है? वह तो बड़ा भाग्यशाली है। अब वह जगल में नही है, किन्तु मिथिलापति पद्मरथ राजा के राजमहल में पहुँच गया है। वह सुखी है।

पुत्र का सुख-संवाद सुन कर मदनरेखा का मन आश्वस्त हुआ। परन्तु स्वयं को जाल मे फंसी देख कर वह घवरा रही थी। शील की रक्षा के लिए कुछ कालक्षेप करना चाहती थी, अत उसने कहा—"हे दक्ष! आज मुझे पहले नन्दीश्वर द्वीप मे जिनेश्वर भगवान् के दर्शन करवाइये, बाद में मै सोचूंगी।

विद्याधर—"सुदरी ! जैसा तुम चाहती हो वैसा ही सही। चलो, मैं तुम्हें नन्दीश्वर द्वीप ले चलू। मदनरेखा की आत्मा खिल उठी। विमान मे बैठ कर नन्दीश्वर द्वीप मे पहुँचे। विद्याधर के साथ मदनरेखा ने भी हर्षपूर्वक ऋषभादि शाश्वत जिनेश्वरो की भक्ति पूर्वक वदना की। अब मेरे ससार सम्बन्धी पिता चतुर्ज्ञान धारक श्री मणिचूड मुनि के पास हम चलें। उनके उपदेश से जरूर तुम्हें शान्ति मिलेगी।" मुनिवर्य की वदना करके दोनो उनके पास बैठे।

मुनि ने ज्ञानोपयोग से देखा—"एक ओर यह महासती ! जो शील रक्षा की इच्छुक है और दूसरी ओर यह विलासी पुत्र ! उसे महारानी बनाना चाहता है।" मुनि ने अवसरोचित सुदर उपदेश दिया। मणिप्रभ का मन विवेकी बना। उसे अपने दुर्विचारो पर पश्चाताप होने लगा। उसने पिता-गुरु के पास ही पर-स्त्री गमन का त्याग किया, और मदना को बहन कह कर पुकारा तथा अपने भूल की क्षमा-याचना की।

इतने मे आकाश से देवियो के जय जय उद्घोष से आनदित दिव्य रूपधारी एक देव उतरा। उसने पहले महासती मदनरेखा को तीन प्रदक्षिणा देकर चरण में पड कर नमस्कार किया, फिर ज्ञानी मुनिवर को नमस्कार करके उचित स्थान मे बैठा।

विद्याधर मणिप्रभ ने अनुचित वदन क्रम देख कर कहा—"हे देव ! नीति के समर्थक यदि आप स्वय ही नीति का नाश करें, तब दूसरो को क्या कहें ! आपने ज्ञानी मुनिवर को छोड़ कर इस स्त्री को पहले नमस्कार क्या किया ?"

देव ने कहा—"आपने ठीक कहा है, परन्तु ऐसा करने का कारण सुनिये। इस महासती मदना के [illegible] का पति था—युगबाहु। मदनरेखा के [illegible] आसक्त होने के कारण राजा मणिरथ ने [illegible] बाहु के ऊपर खड्ग का प्राण-घातक प्रहार किया। युगबाहु मृत्यु के समय अत्यन्त क्रोध मे आ गया। अतिम समय मे सती ने अपने पति को क्षमा-समता की हितशिक्षा दी, कर्म सिद्धात समझाया और नमस्कार महामत्र के ध्यान मे लीन कर पति को शान्ति और समाधि पहुँचाई, उस कारण वह दिव्य ऋद्धि वाला देव बना। वही युगबाहु देवरूप मे तुम्हारे सामने खडा है। यही उपकारिणी मदनरेखा है। यह मेरी धर्मपत्नी नही, परन्तु सच्चे रूप मे मेरी धर्मदाता गुरु है। अपने उपकार का स्मरण कर निकटतम धर्मगुरु के रूप मे पहले महासती मदनरेखा को नमस्कार किया, इसमे कोई अनुचितता नहीं है। क्योकि शास्त्र मे लिखा है—"जो जेण सुद्ध धम्ममि ठाविओ सजएण गिहिणा वा। सो चेव तस्स जायइ धम्मगुरु धम्मदाणाओ।" सयति हो या गृहस्थ जिस व्यक्ति ने जिस आत्मा को धर्म मार्ग पर (शुद्ध धर्म मे स्थापित किया) चढाया वह व्यक्ति उसके धर्म गुरु होते हैं।

इस तरह सुनकर विद्याधर ने सोचा—"अहा ! धर्म का प्रभाव कितना अद्भुत है। जो क्षणमात्र सेवन से आत्मा ऊर्ध्वगामी होता है।"

युगबाहु देव ने नमस्कार कर कहा—महासती ! तुम्हारे उपकार से कभी मैं ऋण-मुक्त नही हो सकता, फिर भी मैं तुम्हारा क्या इष्ट (वाछित) करू ?

मदनरेखा ने कहा—"देव ? तत्त्व से मुझे वाछित देने मे आप समर्थ नही हैं। ससार का यह असार रूप मैं देख चुकी हूँ, जन्म-जरा-मरण से रहित मोक्ष सुख मेरा वाछित है, परन्तु वह तो अपने पुरुषार्थ से ही प्राप्त होगा। तथापि हे देव ! मुझे मिथिला नगरी ले जाइये। अब मेरी इच्छा है सयम लेकर आत्म कल्याण करू, किन्तु इससे पूर्व एक बार पुत्र का मुह देखना चाहती हू।"

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

वार्षिक कार्य विवरण

(भादवा वद ऽऽ स० २०२६ तक)

श्री जैन श्वेताम्वर तपागच्छ संघ जयपुर का मौजूदा संगठन आज से करीब ३० वर्ष पूर्व बन पाया जब मंदिरजी व उपाश्रय के संचालन का दायित्व एक समिति पर आगया। इससे पूर्व कुछ परिवार ही अपनी लागणीपूर्वक इस संस्थान का कार्य चलाते आ रहे थे। उस वक्त जो भाई व्यवस्था सम्हाल रहे थे, उन्होंने बाहर से आने वाले परिवारों का पूर्ण सहकार लेने की दृष्टि से ही यह सूझ-बूझ पूर्ण निर्णय किया और एक समिति ने दायित्व वहन किया।

सौभाग्य से इस संघ की मान्यता वाले परिवार देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों से काफी संख्या में जयपुर आकर बसने लगे। इससे स्थानीय वन्धुओं का उत्साह बढ़ना स्वभाविक ही था। संस्था के विकास के लिये अधिकाधिक जन सहयोग प्राप्त करने का लक्ष्य उत्तरोत्तर आगे बढ़ता गया। बढ़ते हुये संघ की आराधना के लिये स्थान व प्रवृत्तियों का विकास जरूरी था ही। अत: भविष्य को ध्यान में रखकर स० २००८ में आत्मानन्द सभा भवन की नींव रखी गई और २०११ में वर्धमान आयम्बिल शाला की स्थापना की गई।

विकास के बढ़ते चरणों को सुव्यवस्थित रखना—उनका सफल संचालन करना, उन्हें जन-जन का प्रिय बनाना जरूरी मानकर स० २०१४ में संघ का विधान बनाया गया। जिसमें संघ की विभिन्न प्रवृतियों के संचालन, संस्था के अर्थ की सुव्यवस्था हेतु ठोस नियमोपनियम बनाये गये। लोकतांत्रिक आधार पर संघ का हरेक परिवार और व्यक्ति संस्था में अपना-पन महसूस कर सके इस हेतु महासमिति के हर तीसरे वर्ष निर्वाचन की व्यवस्या रखी गई। उस विधान की धाराओं के तहत अब तक पांच निर्वाचन हो चुके है और इनके माध्यम से वनी पांचों महासमितियों ने गत १५ वर्षों के अपने कार्य काल में संस्था को उत्तरोत्तर गतिशील बनाने में हर सम्भव प्रयत्न किया है। इन पांचों महासमितियों के कुछ सदस्य तो आज इस संसार में भी नहीं रहे हैं, पर उनके कार्य सदैव प्रेरणा देते रहे है। इन महासमितियों में स्थानीय व वाहर का वृद्ध व युवक का श्रीमंत व सामान्य का कभी भेद रहा ही नहीं सबने एक जुट होकर एवं रचनात्मक दृष्टिकोण को अपना कर इस संस्था की सेवा की है, और यही कारण है कि गत वर्षों में इस संस्था ने हर दृष्टि से अपना

स्थान वनाया है, न केवल जयपुर की धार्मिक व सामाजिक सस्थाओ मे अपितु देश की इस तरह की अन्य सस्थाओ के वीच भी इस सस्था का स्थान सही जगह वन चुका हैं।

श्रीमदिरजी के जीर्णोद्धार कार्य के साथ ही ऊपर के कक्ष मे श्रीमहावीर स्वामी के नव मदिर के निर्माण का यशस्वी कार्य इन वेर्षो मे हुआ है। चित्र कला दीर्घा तो अव भी अपनी सानी नही रखती। गत वर्षो में योग्य साधू साध्वियो के लगातार कराये गये चार्तुमास व उनकी उपलब्धियो से जयपुर का धार्मिक जगत मे अच्छा स्थान वना है। आयम्विलशाला, पाठशाला, पुस्तकालय भी इसमे सहायक वने हैं। 'मणिभद्र' तो जयपुर के इस सघ की गतिविधियों को चारो ओर प्रसारित करने मे अग्रदूत का काम कर रहा हैं। उस सवसे ऊपर सघ का आपस का सौजन्य व सस्था के लिये एक जुट होकर कार्य करने की तीव्र भावना कम ही जगह देखने को मिलती है।

पाचवी महासमिति का कार्यकाल समाप्त हो रहा है और छटी महासमिति का निर्वाचन हो गया हैं। अगले तीन वर्षो के लिये इस सस्था के सचालन का दायित्व नई महासमिति पर होगा। इस निर्वाचन में पुरानी महासमिति के भी सदस्य हैं और नये साथी भी इसमे भाग ले रहे हैं। इस सस्था के कार्य मे रुचि लेने की यह भावना जो प्रदर्शित हो रही हे वह शुभ लक्षण हैं। अव तक की महासमितियो के सदस्यो ने अर्थ व समय का भोग देकर तथा सस्था के प्रति श्रद्धा व निष्ठा रखकर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। नई महासमिति के लिये भी आशा है आप सव सघ के सदस्यगण निष्ठावान व सेवा की रुचि व भावना रखने वाले इन महानुभावो का चुनाव कर और भी ज्यादा स्फूर्ति व लगन से काम करने का मार्ग प्रशस्त करेंगे। मौजूदा महासमिति की तो यही प्रवल उत्कठा है।

इस महासमिति के कार्यकाल के प्रथम दो वर्षो का विवरण सघ के वार्पिकोत्सव दिवस (महावीर जन्म वाचना दिवस) पर 'मणिभद्र' के वारहवे व तेरहवे पुष्प मे प्रकाशित किया जा चूका है तीसरे व मौजूदा वर्ष का कार्य विवरण यहा प्रस्तुत कर रहे हैं।

गत वर्ष यहा साध्वी जी म श्री निर्मला श्रीजी एम, ए, साहित्य रत्न की निश्रा मे पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना वहुत ही शालीनता पूर्वक सम्पन्न हुई। उस वर्ष जयपुर नगर मे करीव १६ मास क्षमण सम्पन्न हुये, इससे धार्मिक क्षेत्र में अभूतपूर्व उत्साह की लहर आई हुई थी।

पर्युषण पर्व मे व्याख्यान-पूजाओ व प्रतिक्रमणो मे, साथ ही रात्री भावनाओ में गत वर्ष रिकार्ड उपस्थिति रही। कलकत्ते से पधारे विशिष्ट अतिथि श्री पारस कान्त भाई व उनकी पुत्री कु० पन्ना वहन द्वारा की गई सभा भवन की सजावट दर्शनीय रही। पर्यूषण पर केकडी से सगीतकार गोपालजी की मडली सहित आमन्त्रित किया गया था। इससे खूव रौनक रही आत्मानन्द सेवक मण्डल, जयपुर द्वारा शत्रु जय महातीर्थ की रचना की गई। जो इतनी सुन्दर थी कि सुवह शाम मदिर जी में दशनार्थियो की भीड वनी ही रही।

पयुर्षण के प्रथम तीन दिन दोपहर मे मास क्षमण तप के तपस्वियो के परिवारीजन श्री चम्पालालजी कोचर, श्री इन्द्रचद जी

गोपीचंदजी चोरडीया व श्री बुधसिंहजी हीराचंदजी वैद की ओर से खूब ठाठ से पूजायें पढ़ाई गई। आज तक उत्सव महोत्सवों में भी ऐसी उपस्थिति देखी नहीं गई।

पुस्तक जी के जुलूस का लाभ श्री सुशील कुमार जी छजलानी ने लिया।

महावीर जन्म वांचना दिवस पर विशाल जन समुदाय के वीच, जयपुर के महान तपस्वी सद्गृहस्थ व गत १५ वर्षों से मौन आराधक श्री अमरचंदजी नाहर के हाथों मास क्षमण तप के सवही तपस्वियों का वहुमान संघ की ओर से किया गया। रजत की रकेवी व प्याले के साथ जयपुर मण्डन भगवान महावीर के सुन्दर जड़ित चित्र भेट किये गये।

'मणिभद्र' के तेरहवें अङ्क का अनावरण मास क्षमण तप के तपस्वी श्री इन्द्रचंद जी चोरड़ीया के हाथों सम्पन्न हुआ।

गत वर्ष चातुर्मास में विराजित पन्यास प्रवर श्री विनय विजयजी महाराज के शिष्य असाध्य रोग से पीड़ित होगये थे। काफी चिकित्साओं के बाद जयपुर के प्रमुख जन सेवी वैद्य श्री रामदयालजी ने महाराजश्री को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कराने का यश प्राप्त किया था। इस हेतु संघ की ओर से आपश्री का अभिनन्दन भी किया गया।

संघ के उपाध्यक्ष श्री हीराचंदजी एम. शाह के पिता श्री, उच्चकोटि के धार्मिक आराधक व दाता स्व० श्री मंगलचंदजी चौधरी जिनका इस संस्था से वहुत निकट का सम्वन्ध रहा था, के चित्र का अनावरण संघ के अध्यक्ष शाह कस्तूरमलजी के हाथों सम्पन्न हुआ।

जन्म वांचना समारोह का उत्साह देखने योग्य था स्वपनजी की वोलियों के प्रति दृष्टिगोचर होने वाला उत्साह इस संस्था के प्रति अनन्य विश्वास का प्रतीक वन गया था। लक्ष्मीजी की बोली का लाभ श्री सरदारमल जी छाजेड़ ने लिया। चार हजार की उपस्थिति के बीच यह समारोह सम्पन्न हुआ जन्म की प्रभावना श्री हीराचंदजी एम. शाह की ओर से हरवर्ष की भांति ही हुई!

भादवा सुद २ को उपाध्यक्ष श्री हीरा चंद जी एम. शाह के हाथो आत्मानन्द सेवक मण्डल व धार्मिक पाठशाला के विद्यार्थियों को पारितोषक वितरित किये गये।

भादवा सुद ३ को मास क्षमण तप के तपस्वी श्रीमती भवंरवाई वैद (धर्मपत्नि श्री बुधसिंहजी वैद) श्री इन्द्रचंदजी चोरडीया व श्रीमती शीतलवाई भंसाली (धर्मपत्नि श्री नेमीचंदजी भंसाली) का भव्य वरघोड़े का कार्यक्रम रहा। इस अवसर पर जयपुर नरेश महाराज श्री भवानीसिंहजी इस संस्थान में पधारे श्रीमंदिरजी में भेट चढ़ाने के बाद सारे मंदिर व आर्ट गैलरी का अवलोकन कर अतिप्रसन्नता जाहिर की फिर आप आत्मानन्द सभाभवन में पधारे। आपने मास क्षमण तप के तपस्वियों को माला पहिनाई व साध्वीजी म. श्री निर्मलाश्रीजी से तप के महत्व पर प्रवचन सुना, संघ की ओर से जयपुर नरेश का स्वागत किया गया उन्हे भगवान महावीर का सुन्दर जड़ित चित्र व साहित्य भेट किया गया। यह पहला अवसर था जव नरेश इस संस्था मे पधारे थे। आपने इस संस्था का इतिहास जानने की जिज्ञासा प्रकट की। आर्ट गैलरी व सेवक मण्डल द्वारा निर्मित श्री शत्रुंजय की रचना से अत्यधिक प्रभावित हुये। आपने फिर भी यहां आने की भावना जाहिर की। इस आयोजन के वाद तपस्वियों का विशाल जुलूस रवाना हुआ।

जिसमें सुन्दर पालखी में जिनेश्वर भगवत की प्रतिमा विराजित थी, साध्वीजी म० भी साथ ही थे। हाथी, घोडा ऊंट, निशान वैंड वाजे, भजन मण्डलिया व भाकियों से सज्जित इस जलूस की शोभा अनोखी थी। विशाल जन मेदनी व श्वेताम्बर जैन हाईस्कूल व वीर वालिका उच्चमाध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओ से युक्त यह जुलूस जयपुर में विराजित सब सन्तो के रहा होता हुआ बुलियन पहुचा। जहा तपस्वियो के परिवारी जनो की ओर से मोदक की प्रभावना की गई।

इस वार सघ की विभिन्न प्रवृतियो की जानकारी कराने व उनके लिये आर्थिक सहयोग प्राप्त करने के लिये परिपत्र (फोल्डर) छपवाया गया। उसके माध्यम से सस्था को अच्छा आर्थिक सहकार प्राप्त हुआ।

सम्वतसरी दिवस को सूत्र वाचन के वाद चैत्य परिवाडी का विशाल वरघोडा प्रमुख वाजारो मे होता हुआ शहर के सब मन्दिरो में दर्शन करने हेतु निकला।

श्री वीर वालिका विद्यालय मे क्षमत क्षमापना दिवस के आयोजन पर वहा साध्वी जी महाराज का प्रवचन हुआ। इस अवसर पर वालिकाओ को श्रीहीराचन्दजी एम शाह व श्री बुधमिहजी हीराचन्दजी वैद की ओर से मोदक की प्रभावनायें भी गई।

इम प्रकार पर्वाधिराज की आराधना भव्य व आकर्षक ढङ्ग से सम्पन्न हुई।

भादवा सुद ११ को सम्राट अकवर प्रति वोधक जगत्गुरु श्री हीरविजय सूरीश्वरजी महाराज की स्वर्गतिथि पर गुणानुवाद सभा व पूजा का आयोजन हुआ।

पर्वाधिराज की आराधना के वाद पूज्य साध्वीजी म० सा प्रवचनो से, साधर्मी उत्कर्ष की योजनाओ की ओर महासमिति ने ध्यान दिया और एक कल्याण केन्द्र की स्थापना की गई। जिसमे एक वहिन ने स्वेटर आदि वुनने की मशीन भेट की। समाज की करीव ८१० वहिनो को इस मशीन के माध्यम से स्वेटर आदि बुनने को शिक्षा दी गई। इस कार्य को और भी वढाने की भावना है जिससे इस उद्योग के माध्यम से वहिनें राशि अर्जित कर सकें।

जयपुर से गत् वर्षो में देश के विभिन्न भागो की यात्रा हेतु लगातार चार सघ निकल चुके है जिनके द्वारा अनेकानेक आत्माओ को तीर्थ भक्ति का लाभ प्राप्त हो चुका हैइस वर्ष आसोजवद ६ को श्री आत्मानन्द सेवक मडल के द्वारा युवको व विद्यार्थियो का एक य त्रा प्रवास राजस्थान के तीर्थो के हेतु निकाला गया। यात्रियो का सघ की ओर से सत्कार व वहुमान किया गया।

महावीर निवार्णोत्सव (दीपावली) के अवसर पर पूज्य साध्वीजी म० सा की प्रेरणा मे आत्मानन्द सेवक मण्डल के सदस्यो ने पावापुरी तीर्थ की भव्य रचना की जिसका उद्घाटन श्री फतेहसिहजी करनावट द्वारा किया गया।

ज्ञान पचमी को श्रुत भक्ति का सुन्दर आयोजन कर, आराधना सघ ने की।

इसके तुरन्त वाद ही प्रभु भक्ति निमित्त अट्ठाई महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमे अहमदावाद से वीर मण्डल की २३ वहिनो का एक ग्रुप यहा आया। उनके ठहरने व भोजन की सुव्यवस्था की गई, अगरचनायें हुई। दिन मे पूजायें और रात्रि को भक्ति का रग खूव जमा। श्री जैन नवयुवक मण्डल के कार्यक्रम भी इस अवसर पर सम्पन्न हुये। उत्सव के समापन अवसर पर

वीर मण्डल की आगेवान सुभद्रा वहन और क्रियाकारक श्री चीमनभाई का संघ की ओर से अभिनन्दन किया गया। वीर मण्डल को शील्ड व नकद राशि भेंट दी गई। पावापुरी की भव्य रचना के लिये श्री सुनील चोरडीया को वीर मण्डल की ओर से शील्ड प्रदान की गई।

इस वर्ष में मेवाड़ रत्न पूज्य विशाल विजयजी महाराज सा० की प्रेरणा से भगवान महावीर स्वामी के कक्ष के नव निर्माण कार्य हेतु ३०००) की राशि चौपाटी जैन श्वे० मन्दिर वम्वई की ओर से सहायतार्थ प्राप्त हुई। महासमिति इसके लिये वहां के व्यवस्थापकों व पू० महाराज सा के प्रति अभारी है।

इस वर्ष की कमी पूरी नहीं होने वाली क्षति श्री जतनमल जी लुनावत का वियोग है। गत वर्षों में निवृत जीवन में इस संस्था के लिये की गई उनकी सेवायें कभी भुलाई ही नहीं जा सकती। महासमिति ने उनका चित्र सभाभवन में लगाने का निश्चय करते हुये शोक प्रस्ताव पारित किया। वे महासमिति में हिसाव निरीक्षक के पदपर आसीन थे। उनके स्थान पर हिसाव निरीक्षक पद पर श्री जसवन्तमलजी सांड की नियुक्ति की गई।

भारत पाकिस्तान युद्ध के कारण साध्वी जी महाराज सा. को जो जेसलमेर की यात्रार्थ पधारने हेतु विहार करने वाले थे संघ ने आग्रह कर रोका। वाद में यकायक पूज्य साध्वीजी म. का स्वास्थ्य खराव होगया एक लम्वे उपचार के वाद ठीक हो सका। स्वास्थ्य खराव होने से संघ को चिन्ता होना स्वाभाविक था! पर कई वक्त इस तरह की परिस्थितियों में भी संघ को लाभ प्राप्त हो जाता है। ऐसा ही हुआ। गत वर्षों में पूज्य साध्वी जी म० सा० के सानिध्य में गुजरात मे वहिनों के लिये कई 'संस्कार अध्ययन सत्रों' का आयोजन हुआ था और गत वर्ष ही जयपुर में इस तरह के सत्र का कराना निश्चित था। पर महाराज श्री के जयपुर देर से पहुँच पाने के कारण यह सम्भव नहीं हो सका, अवसर को अनुकूल जान कर संघ नें संस्कार अध्ययन सत्र का आयोजन जयपुर मे कराने का निश्चय किया और साध्वी जी म० सा० को यही विराजने का आग्रह किया। संघ के सौभाग्य से पूज्य महाराज सा० ने स्वीकृति दी। इसके लिये एक परिपत्र निकाला गया। इसी वीच महावीर जयन्ती के सार्वजनिक समारम्भ मे पूज्य साध्वी जी म० सा० का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। ओर मुख्यमन्त्रीजी राजस्थान, अनेक विधायकों व समाज के कार्यकर्ताओं ने इस आयोजन के प्रति गहन रुचि प्रदर्शित की।

जयपुर नगर के वीर बालिका विद्यालय के प्रांगण में पहली बार संस्कार अध्ययन सत्र का आयोजन किया गया। इसकी व्यवस्था समिति के संयोजक श्री शिखरचंद जी पालावत वनाये गये। लाभालाभ को नहीं समझ पा सकने वाले एक दो व्यक्तियों की ओर से इसका उग्र विरोध भी किया गया, पर यह आयोजन सब के सहयोग से काफी सफल रहा। कई मामले में तो वह गुजरात के सत्रों से भी आगे वढ़ गया। गुजरात की करीव ४० वहिनों ने व स्थानीय १०० वहिनों ने इसमें भाग लिया। एक माह के लिये आयोजित इस शिविर में स्थानकवासी, तेरहपंथी साधु साध्वियों के अलावा अनेक विद्वान व सामाजिक कार्यकर्ता आये और अपनी सम्मतियां देकर यह वताया कि इस तरह का आयोजन प्रतिवर्ष ग्रीष्मावकाश में हो तो

काफी लाभ हो। इस सत्र के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि पद्मश्री खेलशङ्कर दुर्लभजी थे व उद्घाटन समाज रत्न श्री राजरूप जी टाक के हाथो सम्पन्न हुआ था। समापन समारोह के अध्यक्ष व मुख्य अतिथि राज्य के वित्तमत्री श्री चन्दनमलजी वैद व भू० पू० मुख्य न्यायाधीश श्री दौलतमल जी भण्डारी थे। इस सत्र मे जैन, जैनतर सब ही बहिनो ने भाग लिया था। इसके समापन समारोह में एक स्मारिका 'मणिभद्र' के विशेषाक रूप मे, निकाली गई थी जिसमें काफी लेख-सस्मरण व कार्यविवरण प्रकाशित किया गया है। यह विशेषाक इस अङ्क के साथ सम्मिलित किया जा रहा है।

इस स्मारिका के प्रकाशन में महासमिति के सदस्य श्री शान्तिलाल जी वाफना एवं सम्पादक मण्डल के अन्य सदस्य श्री मोती लालजी भडकतीया, श्री सुशील कुमारजी छजलानी, श्रीपारस मलजी कटारीया व श्री पारसजी वाफना का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ। भोजन आदि की व पठन-पाठन की सारी व्यवस्था श्री वीर बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में की गई थी। वीर बालिका विद्यालय के सचालक मण्डल की अध्यापिकाये व कर्मचारी वर्ग का सहयोग अत्यधिक प्रशसनीय रहा। महासमिति के सहयोग के लिये आभारी है। इस सत्र के हिसाब लेखन का कार्य श्री जसवन्तमलजी साड के जिम्मे था। उनके जयपुर से बाहर होने के कारण वह प्रकाशित नही किया जा सका। अत भविष्य में प्रकाशित कर दिया जावेगा।

इस वर्ष में यहा श्री मनोहरविजयजी म० ठाणा २ व साध्वी जी म० ठाणा ५ पधारे।

शिविर के बाद चातुर्मास काल निकट आने के कारण लाभ का अवसर जानकर सघ की ओर से पूज्य साध्वी जी म० सा० को इस चातुर्मास हेतु भावभरी विनती, की गई। सघ के सौभाग्य से मजूरी मिल गई। इस तरह इस वर्ष में शेष काल मे भी साध्वी जी म० सा० के विराजने से आराधन का खूब लाभ मिला। आत्मानन्द सभाभवन में स्व० आचार्य देव विजयनीति सूरीश्वरजी म० के चित्र का अनावरण पद्मश्री खेलशङ्कर दुर्लभजी के हाथो सम्पन्न हुआ।

इस वर्ष में यहा से बाहर के मदिरो व सस्थाओ को भी अच्छी सहायता दी गई। अरई (राजस्थान) के मदिर हेतु ध्वजादण्ड व यक्ष-यक्षिणी की मूर्तिया भी बनवा कर भेंट की गई।

इस वर्ष आयम्बिल शाला के लिये स्टेनस्टील के १०० सैट खरीदे गये। वर्ष गांठ के अवसर पर हरेक को पूजा का लाभ मिले इस हेतु ११) रोज की मितीथी। पूरे वर्ष के लिये भराई गई।

इस वर्ष आर्थिक क्षेत्र में भी कुछ महत्वपूर्ण निर्णय किये गये। उसी अनुसार इस बार हिसाब प्रकाशित किये जा रहे है। जेठ वद ऽऽ स० २०२६ तक की बाकी उगाही जमा कराने के लिये जेठ वद ऽऽ स० २०३० तक की अन्तिम अवधि निर्धारित की गई है। बाद में भी रह जाने वाली बाकी उगाही के लिये नई महासमिति भविष्य मे निश्चय करेगी। अत आप उन सब महानुभावों से जिनमे इन सस्थाने की राशि बकाया है जल्दी से जल्दी जमा कराने की सादर विनती है।'

आयम्बिल खाते में महगाई की वजह से काफी नुकसान लग रहा है। इसलिये नये वर्ष में ३१)—६) व ५) वाली मितियो की राशि ३५)—११) व ७) करने का निश्चय किया गया।

जीव दया विभाग से रोजाना कबूतरों को डाली जाने वाली ज्वार की राशि भी ५ किलो करने का निश्चय हुआ।

पुराने समाजसेवी एवं इस संस्थान से निकट के सम्बन्धित स्व० श्री रतनचंदजी कोचर का चित्र पुस्तकालय में लगाने का निश्चय कर ,लगा दिया गया।

महासमिति ने चुनाव कराने की व्यवस्था हेतु श्री चांदमलजी वच्छावत को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया, और उनकी देख-रेख में छठीं महासमिति के लिए दिनाङ्क २७-८-७२ को चुनाव सम्पन्न हो चुके है। आप सबने अपने अधिकारों का उपयोग कर योग्यतम, निष्ठावान व्यक्तियों को चुनकर इस संस्था को और मजबूत बनाया है।

इन २१ निर्वाचित सदस्यों ने चार अन्य सदस्यों का सहवरण कर महासमिति का पूर्ण चयन कर लिया है। पदाधिकारियों का निर्वाचन भी हो गया है। नई महासमिति के सदस्यों व पदाधिकारियों की सूची अलग से प्रकाशित की जा रही है। नई महासमिति में १३ सदस्य पुरानी महासमिति के हैं व १२ सदस्य नये हैं। करीब-करीब सब ही पदाधिकारी भी नये है। इस नई महासमिति ने संस्था का कार्यभार सम्हाल कर पर्वाधिराज की भव्य उत्तम आराधना हेतु कार्यक्रम संघ के सन्मुख प्रस्तुत किया है।

पूर्ववत ही आप सकल संघ का सहयोग नई महासमिति को पूर्ण रूपेण मिलेगा, इसी आशा के साथ मौजूदा महासमिति नई महासमिति का अभिनन्दन करती है।

—महासमिति द्वारा स्वीकृत

—हीराचंद वैद संघमंत्री द्वारा प्रकाशित

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

नव निर्वाचित छठी महासमिति

(१९७२-७५)

१	श्री हीराचदजी, एम शाह मण्डार वाले	अध्यक्ष
२	,, कपील भाई केशव लाल जी	उपाध्यक्ष
३	,, जवाहरलालजी चोरडिया	सघ मत्री
४	,, फतेहसिंह जी करनावट	भण्डाराध्यक्ष
५	,, आत्मा चदजी भण्डारी	अर्थमंत्री
६	,, शान्तिमलजी भण्डारी	हिसाब निरीक्षक
७	,, शिखर चदजी पालावत	मदिर व्यवस्था मत्री
८	,, मनोहरमलजी लुनावत	उपाश्रय मत्री
९	,, इन्द्रचदजी चोरडिया	व० आयम्बिलशाला मत्री
१०	,, सूशील कुमार जी छजलानी	शिक्षण मत्री
११	,, शाह कस्तूरमलजी	सदस्य
१२	,, शान्तिलालजी वाफना	,,
१३	,, कन्हैयालालजी जैन	,,
१४	,, वाबुलालजी पजावी	,,
१५	,, चादमलजी बच्छावत	,,
१६	, जसवतमलजी साड	,,
१७	,, धनरूपलजी नागौरी	,,
१८	,, मदनराज जी सिंघी वकील	,,
१९	,, लक्ष्मी चद जी मसाली	,,
२०	,, हजारी चद जी मेहता	,,
२१	,, चिन्तामणि जी टड्ढा	,,
२२	,, पदम चद जी छजलानी	,,
२३	,, उमरावमल जी पालेचा	,,
२४	,, मोतीलाल जी भडवतीया	,,
२५	,, हीराचद जी वैद	,

श्री जैन श्वेतांबर तपागच्छ संघ, जयपुर

महासमिति द्वारा स्वीकृत आय-व्यय प्रतिवेदन

(जेठ वद ऽऽ सम्वत् २०२६ तक)

परिशिष्ट १

आंकड़ा श्री जैन श्वेताम्वर तप।गच्छ मन्दिर जी, जयपुर

८४६५०)४८ श्री भण्डार खाते जमा

१५८४६)४६ श्री मणिभद्रजी भण्डार खाते जमा

५०६)७२ श्री गुरुदेवजी भण्डार खाते जमा

४७६)३८ श्री शासनदेवी भण्डार खाते जमा

१०७५)२० श्री सम्मेतशिखर जी तीर्थ यात्री संघ उदरत जमा।

४)२० श्री भीलवाडा जैन श्वे० मू० संघ खाते जमा।

२०००) श्री वरखेडा तीर्थ के जमा

१०४८६५)४४

७६४७)०१ श्री वर्धमान आयम्विल शाला, जयपुर खाते लेने।

५१४१७)३८ श्री फिक्सडिपाजिट खाते

९४१७)३८ स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर में।

४२०००) बैंक आफ वड़ौदा में।

५१४१७)३८

---

२३२)६० स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर चालू खाते में।

११८०)६० बैंक आफ वडौदा, सेविंग खाते में।

४३६१०)५५ श्री उगाही खाते वाकी।

११)३४ आँकडा फर्क।

१६५)३६ श्री पोते वाकी जेठ वदऽऽ सं० २०२६

१०४८६५)४४

द० पुष्पमल लोढ़ा
अर्थ मंत्री

परिशिष्ट २

आकडा श्री साधारण खाता

२४४६)७८ श्री साधारण भेट खाते जमा	६०१५)६६ श्री वर्धमान आयम्बिल शाला जयपुर खाते नामे
२३८३)३० श्री जीवदया खाते जमा	१२५६)७२ श्री फिक्स डिपाजिट खाते स्टेट बैंक आफ बीकानेर, जयपुर मे
११००)२२ श्री जैन कल्याण केन्द्र का जमा	५१२८) श्री उगाही खाते नामे
१६०८) श्री सम्वतसरी पारणा खाते जमा	१)५५ श्री आंकडा फक खाते नामे
५००६)८५ श्री तपागच्छ श्राविका सघ के जमा	१५१)१५ श्री रोकड बाकी जेठ वद ऽऽ स० २०२६
४)६६ श्री सुमति कार्यालय का जमा	
१२५५३)११	१२५५३)११

द पुष्पमल लोढा
अर्थ मन्त्री

-●-

परिशिष्ट ३

आकडा श्री ज्ञान खाता का

७५०४)२८ श्री ज्ञान भेट खाते जमा	३४७७)८४ श्री वर्धमान आयम्बिल खाते नामे
	१२५६)३८ श्री फिक्स डिपाजिट खाते नामे स्टेट बैंक आफ बीकानेर जयपुर मे
	२४६२) श्री उगाही खाते बाकी
	२७८)६ श्री रोकड बाकी जेठ वद ऽऽ स० २०२६
७५०४)२८	७५०४)२८

द पुष्पमल लोढा
अर्थ मन्त्री

सु●-

परिशिष्ट ४

आंकड़ा श्री वर्धमान आयम्बिल शाला, जयपुर

रकम	विवरण	रकम	विवरण
२५५६४)	श्री स्थाई मितियों खाते जमा	४५२३)६	श्री आयम्बिल कोप भेट खाते में लगती रकम
७९४७)१	श्री मंदिर जी का देना जमा	९०२)	श्री वरतन खाते लगती रकम
६०१५)९९	श्री साधारण खाते देना जमा	२५७४८)४५	श्री दूकान खरीद खाते वापू वाजार दुकान नं० ५३
३४७७)८४	श्री ज्ञान खाते देना जमा	१०२६१)२०	फिक्स डिपाजिट खाते स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर जयपुर में
१६४)१२	श्री गृह कर खाते जमा	३३७९)	श्री उगाही खाते नामे
१००१)	श्री नवपद ओली जी पारणा कोप खाते जमा	७)२३	आंकड़ा फर्क खाते
६७८)९४	उदरत जमा रमेश चंद जी भाटिया वापू वाजार का एडवांस किराया पेटे	२७)६६	श्री रोकड़ वाकी जेठ वद ऽऽ स० २०२९
४४८४८)६०		४४८४८)६०	

द: पुष्पमल लोढा
अर्थ मंत्री

परिशिष्ट ५

श्री वर्धमान आयम्बिल शाला, जयपुर—स्थायी मितियों की सूचि

२१२३६)	गत वर्ष तक का जमा
५०१)	कपील भाई केशवलाल जी शाह
५०१)	पुष्पा वहन कपील भाई शाह
४५१)	हजारी चद जी वोथरा
१२५)	मिलाप चद जी मेहता
१२५)	जयश्री देवी चोरडीया
१२५)	मानवाई धमपत्नी कन्हैया लाल जी नाहर
१२५)	सोनराज जी पोरवाल
१२५)	श्रीमती लीलावती देवी मेहता
१२५)	सूरजमल जी हेमराज जी
१२५)	गुलाव वहन कलकत्ता हस्ते पारस कान्त भाई
१२५)	गजेन्द्र व पत्नी ह० पारस कात भाई, कलकत्ता वाले
१२५)	सेठ जीतमल जी पुखराज जी, झालावाड
१२५)	श्रीमती मदनकुवर वाई जी डागा
१२५)	मातु श्री गोटा वाई के स्मरणाथ वावूलाल जी भसाली, वम्वई
१२५)	"
१२५)	"
१२५)	"
१२५)	श्री रतन वाई धमपत्नी हेमराज जी मुथा
१२५)	श्री जतनमल जी लूनावत ह० राजेन्द्र कुमारजी
१२५)	श्री राजवहादुर जी भडारी के माताजी पानदेवी
१२५)	शा हीरा चद जी जेमल भाई ह० कान्तीलाल जी रानपर वाले
१२५)	लाला राजकुमार इन्द्रजीत जी जैन सर्राफ पट्टी वाले
१२५)	चमेली वाईजी
१२५)	हनवत राजजी मुणोत
१२५)	ख्याली लाल जी वया
१२५)	कुशलमल जी लोढा
२५५६४)	

प्रेरक :

साध्वी जी निर्मलाश्री जी,

एम० ए० साहित्य-रत्न

मणिभद्र विषेशांक २०२९

श्री संस्कार अध्ययन सत्र

स्मारिका

१९७२

प्रकाशक :

श्री आत्मानन्द सभा भवन
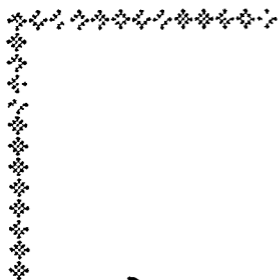
घीवालों का रास्ता,

जयपुर–३

श्री संस्कार अध्ययन सत्र स्मारिका १९७२

सम्पादक मण्डल

❀

हीराचंद वैद
मोतील[illegible] [illegible]कतिया
पारसमल कटारिया
सुशीलकुमार छजलानी
पारस बाफना

ज्ञान-सार

चिन्मात्र दीप को गच्छेत् निर्वातस्थान संनिभैः ।
निष्परिग्रहतास्थैर्यं धर्मोपकरणैरपि ॥

ज्ञान रूपी दीपक, पवन रहित स्थान की तरह धर्म के उपकरण से भी परिग्रह त्याग रूप स्थिरता को प्राप्त करता है ।

तत्वज्ञानी महर्षि एवं दार्शनिकों ने ज्ञान को दीपक की उपमा दी है । जिस तरह स्थूल जगत में दीपक के प्रकाश की आवश्यकता रहती है उसी तरह आत्मा के सूक्ष्म प्रदेश में ज्ञान दीपक की आवश्यकता रहती है । परन्तु निद्रा में मनुष्य जैसे प्रकाश नहीं चाहता है उसी तरह मोह निद्रा में ज्ञान का प्रकाश भी नहीं चाहता है । अज्ञान के अन्धकार में मोह निद्रा फलती फूलती है ।

[न्यायाचार्य न्याय विशारद
उपाध्याय श्री यशोविजय जी

प्रकाशक

श्री आत्मानन्द सभा भवन
घीवालों का रास्ता
जयपुर-३ (राज०)

सम्पादकीय—

एक सुप्रयास

जयपुर जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ जयपुर की इन वर्षों मे धार्मिक दृष्टि से काफी प्रवृतिया रही है। अपनी इन प्रवृतियो के कारण भारत के सघो मे जयपुर के इस सघ ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। गत वर्ष साध्वीजी निमला श्री जी के चातुर्मास मे समाज कल्याणकारी कार्यों की ओर भी इस सघ का झुकाव हुआ है और बहनो को उद्योग मे प्रवीण कर अपने पावो पर खडा होने के लिये होजरी की मशीन खरीद कर कार्य प्रारम्भ किया भी, उसमे सफलता भी मिली।

हाल ही मे श्री सस्कार अध्ययन सत्र का आयोजन कर एक स्तुत्य प्रयास किया गया है। राजस्थान मे अपने ढग का यह पहला ही प्रयास है—फिर भी कई दृष्टियो से यह कार्य पहले के शिविरो से आगे बढ गया। राजस्थान मे पहला प्रयास होते हुए भी गुजरात की बहनो ने अच्छी सख्या मे भाग लिया। इससे दो प्रातो की बहनो का स्नेह-पूर्ण मिलन तो हुआ ही एक दूसरे की सभ्यता, सस्कृति, खान-पान, रहन-सहन का भी परिचय हुआ। स्थानकवासी व तेरहपथी मुनियो—साध्वीयो, विद्वानो एव दाताओ का सौजन्यपूर्ण सहयोग भगवान् महावीर के एकता के सिद्धात के प्रतिपादन का महत्वपूर्ण अग रहा। सोने मे सुगन्ध जैसी बात इस तरह की स्मारिका के प्रकाशन की रही—आज तक हुए शिविरो मे इस तरह का प्रयास हुआ हो ऐसा दृष्टिगोचर होता नही, यह एक ऐतिहासिक चीज बन गई है—भविष्य के लिये प्रेरणास्पद बन गई। सदेश और आशीर्वादो के साथ ही, शिविर मे भाग लेने वाली जैन, जैनेतर बालाओ का अनुभव, शिविर को सम्बोधित करने वाले महानुभावो के विचार व दूरस्थ विद्वानो की शिविरो के सम्बन्ध मे प्रतिक्रिया व दाताओ की उदारता स्वरूप प्राप्त विज्ञापन सबने मिलकर इस स्मारिका का कलेवर सुन्दर बना दिया।

अवश्य ही यह स्मारिका अन्य साधु—साध्वीयो को साथ ही विभिन्न सघो को इस तरह के आयोजनो की प्रेरणा देंगे। साथ ही कुछ लोग जिनके विचार इस तरह के शिविरो के पक्ष मे अब तक नही बन पाये अवश्य ही सारे कार्यक्रम से उनका हृदय परिवर्तन होगा और वे इसकी महत्ता को मानकर इस तरह के समाज कल्याणकारी कार्यों में सदैव सहयोगी बनने का ही प्रयास करेंगे।

—हीराचन्द बैद

राजस्थान के विधायक श्री यशवतसिह नाहर
उद्‌घाटन समारोह में प्रवचन करते हुये
पास में संघ मंत्री श्री हीराचंद वैद
बैठे है ।
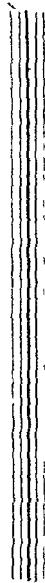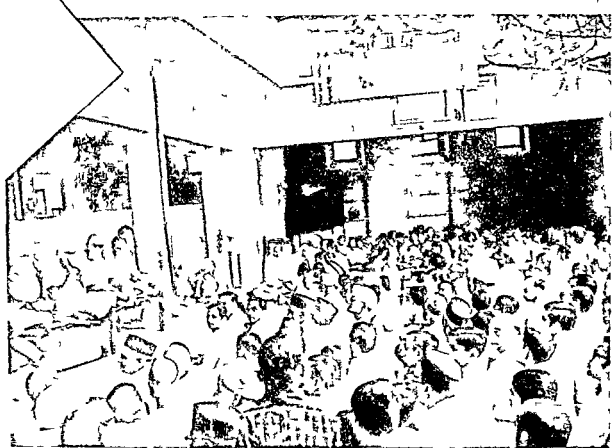
शिविर प्राङ्गण मे स्थानकवासी समुदाय के मरुधरकेशरी प्रवतक
मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज व अन्य मुनि मण्डल
प्रवचन करते हुये ।

शिविर की प्रेरक साध्वी जी निर्मला श्री जी एम० ए० साहित्य रत्न
शिविर बालाओं के साथ ।

आशीर्वाद, सन्देश, शुभकामनायें
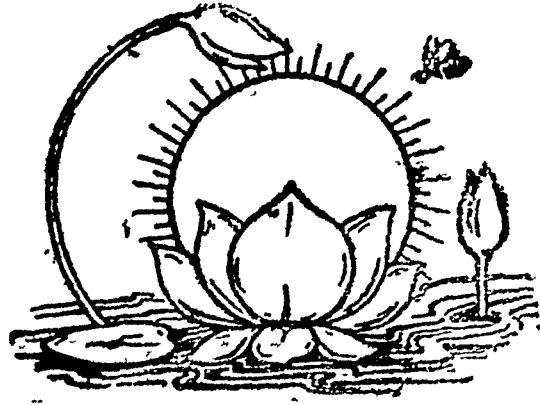
द्वारा

- ❀ मुनिजन
- ❀ राजनीतिज्ञ जन
- ❀ विद्वजन
- ❀ श्रेष्ठिजन

फोन { कार्यालय 63003
निवास 61886 }

संस्कार-अध्ययन-सत्र

की

अभूतपूर्व सफलता

ही

मेरी हार्दिक कामना है

आध्यात्मिक-अध्ययन-सत्र

सफल हो

शुभेच्छा सहित

शान्तिलाल मु० बाफना

आवा प्रसंगो उपस्थित करी अेवा संस्कार उपस्थित करो के भावि माँ शासन माँ सत्य रण नार गाजवतो करीने, साची भव्य भावना स्वरुपे रहीने, पण आराधना भावने पामे वितराग शासन माँ वितरागनु शरणु अने कल्याण सहाय जयवन्तु बने ।

अहमदाबाद] [आ० विजय भानुचन्द्र सूरीजी]

× × ×

श्री निर्मलाश्री जी ना मार्ग दर्शन नीचे वहनो नी चालती शिविर माटे मारा अंतर ना आशीर्वाद छे । बहनो आ रीते जैन धर्म ना संस्कारो पामी जीवन ने उन्नत बनावे अेज ऐक अभिलाषा ।

बम्बई] [आ० विजय कीर्तिचंद्र सूरीश्वरजी]

× × ×

....माँ बाप तरफ थी धर्मना संस्कारो जेने मल्या न थी तेने धर्म नी कीमत न थी, तेना थी सद्‌गति दूर छे अने दुर्गतिना द्वार तेना माटे सदाय खुल्ला थाय छे, जे ओ नानी वय माँ धार्मिक शिक्षण लेता न थी, अने धर्म नो अभ्यास करता न थी, तेमने मोटी उमरे पारावार पश्चाताप करवो पडे छे ।

.... आवो शिविर खोली ने बहनो ने सुन्दर संस्कार साथे धार्मिक ज्ञान आपो छो ते अनुमोदनीय अने प्रशंसा ने पात्र छे ।

पाटन] [अशोकचंद्र सूरी म०

× × ×

शासन देव आपके इस भागीरथ कार्य में अवश्य सफलता प्रदान करेगे । श्री संस्कार अध्ययन सत्र की पूर्ण सफलता चाहता हूँ ।

नाडलाई] [आचार्य विजय जिनेन्द्र सूरीश्वरजी

आ तमारु सत्रालय सुलभा मदनरेखा ना मार्ग मम्यगदर्शनादि गुण शुद्धि नु पोषण करे तेम इच्छु छु ।

पालीताना] [पन्यास मगल विजय जी म०

× × ×

तमारी प्रेरणा थी अने तमारी सानिध्यमा हालना विषम जमाना मा मम्यग-ज्ञान-दर्शन-चारित्रादि गुणो नी वृद्धि करनारुजे मस्कार अध्ययन सत्र नु आयोजन थयु छे तेनी खूवज अनुमोदना करीये छीयें ।

शिवगज] [मुनि–हेमप्रभ विजयजी

× × ×

राजस्थान नी वहनो तमारा मार्ग दर्शन पूर्वक वीरवाणी नो सदेशो झीली जीवन मा जवेरात भरे अेज शुभेच्छा । वर्तमान सजोग ने लक्ष्य मा राखी सत्य पथे प्रयाण करता कदाच कोई वीरोधी वने तो डरवानु न होय ।

पालीताना] [आ० यशोभद्र सूरिश्वरजी

× × ×

Wishing Hearty greetings your Satra

बम्बई] मु० यशोविजयजी म०]

× × ×

आ शुभ प्रवृति नी दिन रात अभिवृद्धि थाय ऐम इच्छु छु अने साथे आशीर्वाद आपु छु। आ शुभ अत्यन्त जरूरी कार्य नी प्रवृति आगल वधो ।

अहमदावाद] [प० रामविजयजी म०

आज के भौतिकवाद के झंझावात में आध्यात्मिक श्रद्धा संस्कार व उन्नत आचार विचारशील सदाचार के शिक्षण की परम आवश्यकता है। ऐसे सत्रों से वह संस्कार-आचार जीवन में गुम्फित होंगे जिससे जीवन उन्नत बनेगा। खासकर बहनों में यह जड संस्कार की बहुत ही उपकृत होगी, क्योंकि बहनों का संस्कार–पापभीरूता सारा कुटुम्ब में फैलेगी। इसलिये आपने किया हुआ यह ज्ञान सत्र का आयोजन बहुत जरूरी है, वह सफल हो ऐसी कामना के साथ धन्यवाद।

अहमदाबाद] [आचार्य राजेन्द्र सूरि म०

× × ×

आज अपने बच्चों में वास्तविक समझ व अध्यात्म के बोध की काफी जरूरत है और उसकी पूर्ति ऐसे शिविर से हो सकती है।

अच्छे उत्साह-पूरी ताकत और लगन से आप लोग इस कार्य को सम्पन्न करें। विधेयात्मक कार्य पद्धति की अपनी स्वयं की एक शक्ति होती है, उसमें विध्वंसात्मक विचार-धारा रुकावट नही डालती, बल्कि एक नयी चेतना पैदा करती है।

शिविर का शुभारम्भ जानकर आनन्द।

बम्बई] [मुनि विशाल विजयजी म०

× × ×

वि० साध्वी श्री निर्मला श्रीजी कई वर्षो से सत्र लगाने का प्रयत्न कर रही है। यह श्लाघनीय एव अन्य साध्वी वृन्द के लिए अनुकरणीय भी है। हर्ष की बात है कि आज कुछ विचारक और सम्यग् साधु साध्वी इस प्रकार के शिविरों द्वारा संघ में नव चेतना उत्पन्न कर रहे है।

राजस्थान जैसे पिछड़े प्रदेश में इसकी अति आवश्यकता थी वह आज पूरी हो रही है। राजस्थान की प्रमुख नगरी जयपुर में यह संस्कार अध्ययन सत्र का प्रयोग राजस्थान की जनता के लिए विशेष रूप से मातृ शक्ति के लिए वरदान सिद्ध होगा ऐसी पूर्ण आशा है।

शहजादपुर (हरियाणा) [मुनि जनक विजयजी म०

राजस्थानी बहिनो मे इस कलिकाल युग मे नैतिक-आध्यात्मिक बोध की अति आवश्यकता है। सस्कार अध्ययन सत्र की सफलता यशपूर्वक प्राप्त हो यह शासन देव से प्रार्थना करता हुँ।

आबू रोड] [श्री सुमति मुनि

× × ×

श्री सस्कार अध्ययन सत्र की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभेच्छायें भेजता हुँ। भारत की विश्व के प्रति जो मुख्य जिम्मेवारी अदा करनी है। उसमे ऐसे शिविरो से अच्छी सहायता मिलेगी।

चिचणी (महाराष्ट्र)] [मुनि श्री सतबालजी

× × ×

बालक बालिकाओ ने ज्ञान अने धर्म सस्कार आपवानु विदुषी साध्वी श्री निर्मला श्री जी नु काम उत्तम कोटिनु काम छे। ते ओ श्री आ माटे लागणी पूर्वक जो श्रम उठावे छे ते बीजाओ ने माटे प्रेरणा रूप बनी रहे अेवो छे। मारा गुरुदेव परम पूज्य आगम प्रभाकर, श्रुत वारिधि श्री पुन्य विजयजी महाराज ने आ काम तरफ जो ममता राखताहता, अेमा ते ओ श्रीनी दीर्घदृष्टि समायेली हती। उक्त काम शासन ने वधारे स्थिर करनारू अने सघने गौरव वधार नारु छे।

अहमदाबाद] [पन्यास दर्शन विजयजी गणि

× × ×

शिविर का कार्यक्रम जानकर प्रसन्नता। आधुनिक युग मे शिविर योजना बहुत ही आवश्यकीय एव उपादेय है। आप लोग इस कार्यक्रम मे पूर्णत सफल बने, यही शुभ-कामना।

दिल्ली] [वीर-शासन सेविका विचक्षण श्रीजी महाराज

मुख्य मन्त्री, राजस्थान
जयपुर

मुझे विश्वास है कि श्री संस्कार अध्ययन सत्र के आयोजन से बौद्धिक विकास के साथ २ नैतिक एवं अध्यात्मिक विकास में भी अभिरुचि जागृत होगी।

मैं उक्त आयोजन की सफलता के लिए अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त करता हूँ।

जयपुर) [बरकतुल्ला खां

× × × ×

इस शिविर में दाखिल होने वाली बहनें अपने ज्ञान और प्रेम का विकास करके इस पृथ्वी पर स्वर्ग का सर्जन करे और साध्वी रत्न श्री निर्मला श्री जी के प्रयास को यशस्वी बनावें यही शुभकामना है।

अहमद नगर] [विदूषी श्री उज्जवल कुमारी जी

× × × ×

इस समय बहनों के लिये जो संस्कार अध्ययन सत्र का आयोजन हुआ है यह बहुत उचित ही हुआ है। बहनों को अगर नीति और अध्यात्म का ज्ञान दिया जायगा तो राष्ट्र के उत्थान में बहुत लाभदायी सिद्ध होगा।

....सत्र की सफलता चाहती हूं। शिविर में इकट्ठी होने वाली बहनों को शुभ-आशीर्वाद।

सावर कुंडला] [सद्गुणा श्री जी महाराज

मानव जीवन मे कल्प (आचार, सदाचार) एक ऐसा वृक्ष है, जिसका आलम्बन लेने से, जिसकी छाया मे मात्र खडे ही रहने से दिव्य-लोक का अवतार शक्य ही नहीं, अवश्यम्भावी है। जीवन के इस काव्य में अभिव्यक्ति को सबलता लाने वाले कवियो की (कवि—द्रष्टा) जो अस्खलित परम्परा इस पुण्यभूमि मे बहती रही है उसमे साध्वी श्री निर्मला श्री जी का प्रदान स्वल्प भी है ही। ऊपर निर्दिष्ट उनकी यह कल्प-साधना अधिक सघन बनो!

अहमदाबाद] [प्रो० कुमार पाल देसाई

× × × ×

आज की युवा पीढी नैतिक एव अध्यात्मिक बोध के अभाव मे दिशा हीन हो निरु-द्देश्य भटक रही है। ऐमी स्थिति मे सामाजिक स्वस्थता और बच्चो मे अच्छे सस्कार के बीज डालने के लिये माताओ एव बहिनो का सुसस्कारित होना अत्यन्त आवश्यक है। माताओ और बहिनो मे डाले गये सस्कार ही दीप-स्पर्श की भांति घर घर मे अध्यात्मिक स्फुर्ति का भाव भर सकेंगे।

जयपुर मे परम विदुषी साध्वी श्री निर्मला श्रीजी का विराजना और उनके तत्वा-वधान मे सचालित यह नैतिक बोध का शिविर निश्चय ही युवक युवतियो के लिये बडा वरदायक सिद्ध होगा। मैं इस सत्र की सफलता की कामना करता हूँ।

जयपुर] [डा० नरेन्द्र भानावत
एम० ए०, पी-एच० डी०,

शिविर की सफलता के लिये हार्दिक शुभ कामनायें हैं। नारी जीवन के उत्थान हेतु ऐसे शिविरों की नितान्त आवश्यकता है ही धार्मिक शिक्षा के साथ साथ इनमें लौकिक ज्ञान की पृष्ठ भूमि तैयार की जानी चाहिये, वर्तमान स्कूली शिक्षा ही पर्याप्त नहीं है।

उदयपुर]

[प्रेम सुमन
संस्कृत विभाग
उदयपुर विश्व विद्यालय

× × × ×

कार्य उत्तम है, यदि योग्य विद्वानों को बुलाकर शिविर में शामिल होने वाली बालिकाओं को पुरा पुरा लाभ-प्राप्त हो सके।

दिल्ली]

[हीरा लाल दूगड

× × × ×

आपका संस्कार अध्ययन सत्र नये युग को लाने में सहायक हो, ऐसी मेरी कामना है। बिना नीति के राजनीति का कोई मूल्य नहीं और बिना आध्यात्मिक विकास के मानव का अस्तित्व निष्प्रयोजनीय है। मैं आशा करता हूँ कि आपका प्रयास लाभदायी होगा।

नई दिल्ली]

[यशपाल जैन

मेरी शुभ कामनायें हैं कि यह सत्र साध्वी जी श्री निर्मला श्री जी महाराज के नेतृत्व व सानिध्य मे सफल हो और साथ ही विश्वास है कि राज्य की वहनें इस सत्र को पसद करेंगी व इसके उद्देश्य की प्राप्ति मे पूर्ण रूप से सफल वनाने मे अपना पूरा योगदान देंगी।

इस प्रकार के सत्र के आयोजन के लिये मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ।

उदयपुर]

[सत्यप्रसन्नसिंह भण्डारी
उपकुलपति उदयपुर विश्व विद्यालय

× × × ×

शिविर का सचालन जो पू निर्मला श्री जी कर रही हैं यह नई पीढी मे धार्मिक सस्कार दृढ करने के लिये एक उत्तम प्रवृति है। मैं शिविर की सफलता चाहता हूँ।

लाल भाई दलपत भाई]
इन्स्टीटयुट आफ
इनडोलाजी
अहमदाबाद

[दलसुख मालवणिया

× × × ×

पू० साध्वीजी म० श्री ना नेतृत्व मा सस्कार अध्ययन सत्र नु आपे जो सुन्दर आयोजन क्यु छे ते वदले मारी हार्दिक शुभेच्छा अने सत्रनी सर्व रीते सफलता अने यशस्विता इच्छू छु।

बम्बई]

चीमनलाल पालीताणाकर

बहनों में नैतिक एवं आध्यात्मिक जागृति हेतु इस प्रकार के प्रयत्न होने ही चाहिये ।

साध्वीजी श्री निर्मला श्री जी म० के सानिध्य में होने वाले इस सत्र की सफलता की कामना करते हैं ।

आगरा]

रामधन शर्मा
सम्पा० श्री अमर भारती]

× × ×

तमे जग्याअे जग्याअे बहनों मां शिविरों द्वारा जो धर्मबोध अने संस्कार का सींचन करी रह्या छो तेनु जैन जगत ने गौरव छे। तमारा जेवा मात्र दसज साध्वीओ आपा रचनात्मक कार्यो उपाडे तो समाज नी काया पलट थई जाय ।

बम्बई]

[फूलचन्द महुआकर

× × ×

पू० साध्वी श्री जी से मेरी वन्दना । मेरी शुभकामनायें आपके साथ है । शिविर की अधिकाधिक सफलता चाहता हूँ ।

बीकानेर]

[अगरचंद नाहटा

यह सत्र निस्सदेह सफल होगा एव दूरगामी परिणाम प्रस्तुत करेगा। आशा, श्रद्धा और प्रार्थना है कि इस सत्र की आगतुक छात्रायें जीवन का एक अपूर्व मोड और दिशा दर्शन प्राप्त कर अपनी शील, सस्कार एव ज्ञान की सम्पत्ति मे श्रीवृद्धि कर भविष्य की क्रान्तदर्शी नारियाँ बनेगी।

बंगलोर]

[प्रो० प्रताप कुमार ज० ठोलिया
एम० ए० साहित्यरत्न

× × ×

शिविर साथे मारी कायम शुभेच्छा अने मगल कामना छे।

पालीताना]

[सन्त कुमार कवि

× × ×

सभी विचारक मानते है कि हमारी शाला, महा-शालाओ की पढाई मे कुछ न कुछ गैर हाजिर है जिनकी पूर्ति ऐसे शिविरो मे हो सकती है, जिससे छात्र गण का सर्वांगी विकास मूर्त बन सकता है।

अहमदाबाद]

[मलूक चन्दर शाह
अध्या० बी० इ० कालेज

प० पू० विदूषी साध्वी जी श्री निर्मला श्री जी एम. ए. साहित्य रत्न की प्रेरणा से श्री संस्कार अध्ययन सत्र का जो आयोजन हुआ है उसका मैं हार्दिक अभिवादन करताहूँ।

बम्बई]

[अध्यात्म विशारद-विद्या भुषण
शतावधानी प० धीरज लाल शाह

× × ×

भावनगर नी आपनी शिविर ने प्रत्यक्ष निहाली छे। पू० साध्वी जी श्री निर्मला श्रीजी महाराज एक विद्वान, भावना शील अने शक्तिशाली व्यक्ति छे.. आवा विद्वान अने विज्ञ साध्वी जी महाराजना विचारो नो बहेनो ने लाभ मल्यो छे ग्रे खरेखर सद्भाग्य छे। ....आ सत्र नी संपूर्ण सफलता इच्छु छुं ।

पालीताना]

[डा० भाईलाल वादिसी

× × ×

अध्ययन सत्र बहनो-भाविको को ज्ञान दायी और कल्याणकारी हो ऐसी मेरी शुभेच्छा।

अहमदाबाद]

[सरला देवी साराभाई

पूज्य साध्वी महाराज निर्मला श्री जा श्रे जयपुर माँ कन्याओ नी शिबिर गोठवी छे ते जाणी आनन्द थयो ।

अहमदावाद] [सेठ कस्तूरभाई लालभाई

× × × ×

साध्वी श्री निर्मला श्रीजी के सानिध्य मे बालिकाओ के एक शिविर का आयोजन हो रहा है, यह जानकर बेहद खुशी हुई ।

अच्छे सस्कार जगाने के इस महत्व के काम मे मैं देख सकता हूँ कि समाज मे जागरुकता पैदा होगी । ऐसे शिविर जब भी मौका मिले होते रहना चाहिये ।

शिविर की सफलता के लिये मेरी शुभ कामना स्वीकार करें ।

बम्बई] [शादीलाल जैन
अध्यक्ष
भारत जैन महा मण्डल

× × ×

पू० साध्वी जी श्री निर्मला श्री जी श्रे जो सस्कार अध्ययन सत्र शुरु करले छे ते खरेखर अनुमोदनिय छे अने ते शास्त्रीय पद्धति नी साथे अध्ययन करावबामा आवे तो आजना युवान वर्ग मा ते खरेखर सुन्दर सस्कार रेडी शकशे ।

आ सस्कार अध्ययन सत्र ने सुन्दर सफलता मले अने आजनो युवान वर्ग धर्म मा श्रद्धावान बनें ये ज भावना ।

अहमदावाद] [रा० ब० जीवतलाल प्रतापसी

संस्कृति अने सभ्यताना संस्कारो धर्म नी मारफत मले छे। परन्तु अत्या ना युवको के युवतीओं धर्म ग्रंथो, धर्म स्थानो अने साधु अथवा साध्वीयों थी लगभग विमुख बनी गया छे।

अस्थिति माँ पलटो लाववो होय तो धर्म उपर नी श्रद्धा कन्याओ अने युवतीओ मारफत फरी ने स्थापित थाय तेम करवु जोइये। तेम ने धर्म नु वैज्ञानिक, बुद्धिगम्य तेमज आ युग नी भाषा माँ युगानुरुप करी शकाय तेवी भाषा माँ समझनी शकाय तो चमत्कारिक परिणामों उपजावी शकाशे।

आ कार्य साध्वी जी श्री निर्मला श्री जी द्वारा थई रत्यु छे ते जणी आनन्द अने कन्याओ ने तथा युवतीओ ने तेनो लाभ लेवा विनति।

[अमृतलाल काली दास दोशी

× × ×

यह सौभाग्य की बात है कि साध्वी जी श्री निर्मला श्री जी के निर्देशन में यह आयोजन हो रहा है।

कृपया उन्हे मेरा नमस्कार और अभिनन्दन पहूंचा दे।

नई दिल्ली] [साहू शान्ति प्रसाद जैन

× × × ×

जयपुर में शिविर थाय ते उत्तम छे...दिकरीओं ने खुब सारा धार्मिक संस्कार मलशे।

कलकत्ता] [सवाईलाल के० शाह जे. पी.
प्रेसीडेंसी मजीस्ट्रेट

दर साल आवा शिविरो योज वा मा आवे छे जेंमा पु० साध्वी जी महाराज वाला ओ तेमज युवतीओ माँ जे सस्कार रेडेल छे ताथी ते सोमा व्यहवारीक तेमज धार्मिक जीवन-मे सारु जेवु परिवर्तन आवेला छे ते वहनो जिन्दगी भर पूज्य साध्वी जी महाराज नो उपकार भुली सके तेम न थी। विदुषी साध्वी महाराज ना मार्ग दर्शन से सारा प्रमाण माँ वहनो लाभ ले अेम इच्छु छु। आयोजन ने सम्पूर्ण सफलता मने अेवी भावना।

अहमदाबाद] [कस्तुरचन्द सी. शाह

× × × ×

वहनो ने सारी रीते धर्म ज्ञान मले अने जैन शासन नी शोभा वध अेवी अमे पुरे पुरी आशा सो चीअे छीये, सत्र हरेक रीते सफल थाय, अेम इच्छीये छीये।

अहमदाबाद] [केशवलाल लल्लूभाई जवेरी

× × × ×

समाज मे नैतिक-आचरण और आध्यात्मिक विश्वास तो आवश्यक है ही, इसका प्रयत्न सराहनीय है। इस आयोजन की पूर्ण सफलता चाहता हू।

कलकत्ता] [विजयसिंह नाहर
एम० एल० ए०

Wishing the Function every Success.

अहमदाबाद] [हिम्मतलाल पूंजाभाई

" [चिनुभाई मनिलाल

" [जसवंतलाल कचराभाई

" [नरोत्तमदास मायाभाई

कलकत्ता] [पारसकान्त शाह

भावनगर] [जैन आत्मानन्द सभा

× × ×

आवा संस्कार अध्ययन सत्रो योजी ने आ दिशा मां भारी प्रगति करी छे अने अनेक बहनो तेनो लाभ लेवा भाग्यशाली बनी छे, आवा बहनो गृहस्थाश्रम ना मार्गे जाय के त्याग-तप-संयम धर्मनो स्वीकार करे तो उत्तम क्षेत्रे दीपी निकले अने पोते स्वीकारेला धर्म ने उज्जवल करे अेवुं कार्य आवी शिविरो द्वारा शक्य बने छे।

बम्बई] [मनसुखलाल

× × ×

पाश्चीमात्य शिक्षा का प्रभाव बहनों पर बहुत जोर से हो रहा है। ऐसे वक्त में बहनो के शिविर में धार्मिक शिक्षा देकर समाज पर बहुत भारी उपकार का कार्य हो रहा है। शिविर का कार्य अवश्य सफल होगा। ऐसी मैं आशा करता हूँ।

मालेगांव] [मोतीलाल वीरचंद शाह

पू० साध्वी जी श्री निर्मला श्री जी महाराज आवा जे सत्रो चलावी रह्या छे ते खूबज प्रेरणादायी छे अने सुन्दर काम करी रह्या छे। आपनी आ योजना घणाज उल्लास साथे सफलता पामे तेवा भारी हार्दिक शुभेच्छा पाठवु छु।

अहमदाबाद] [अनुभाई चीमनलाल

× × ×

राजस्थान मे सस्कार सत्र का प्रथम आयोजन सफल हो, अनुकरणीय हो तथा भविष्य मे ऐसे सत्र पुरुष वर्ग (छात्र) के लिये भी चालू करने की तरफ अवश्य ध्यान दिया जावे तो जैन शासन, धर्म, एव साधना (स्वाध्याय) की अपूर्व सेवा होगी।

अजमेर] [रामलाल लुणिया

× × × ×

मानव मे छीपी हुई प्रतिभा से उनको मानव, महामानव, पूर्ण मानव बनाने के लिये ज्ञान आवश्यक है, और इस कार्य के लिये ऐसे सस्कार सत्र वहुत उपयोगी है। राजस्थानी विरागना ऐसे सत्र से भगवान महावीर की सच्ची पुत्री बन सकेगी। शासन देव आपको हर समय सहाय करें।

बम्बई] [केशवलाल एम० शाह
श्री जवेरी महाजन मोती नो
धरम नो कांटो

श्री संस्कार अध्ययन सत्र ना आयोजन माटे अमारी शुभेच्छा ।

अहमदाबाद] [शेठ जमनाभाई भगुभाई

× × ×

'समाज अने राष्ट्र ना नव सर्जन मां, विद्या, अध्यात्म अने संस्कार महत्वना अंग छे, ते द्वारा जीवन ने नवो प्रकाश अने प्रेरणा मले छे, आत्मशुद्धि माटे ते उपयोगी माध्यम छे। पू० श्री निर्मला श्री जी म० नी प्रेरणा थी नव सर्जन नी अनेक प्रवृत्तिओ सफलतापूर्वक थई छे. आ अध्ययन सत्र पण ते रीते रचनात्मक अने फलदायी बनशे तेनी मने खात्री छे, आपना शुभ प्रयासो ने सफलता इच्छु छुं ।

बम्बई] [कान्तिलाल डो० कोरा

× × × ×

आपणे सहु जाणीये छीये के संस्कार वगैर जीवन नो विकास थतो न थी, तेमांय जो कन्याओ ना जीवन नु घडतर करवा मां आवे तो तेनी आखा कुटम्व पर सुन्दर असर थवानो। आपणे त्यां छोंकराओ माटे तो अनेक सत्रो योजवाय छे, पण कन्याओं माटे आवी प्रवृत्ति भाग्ये ज हाथ धरवा मा आवे छे। पूज्य साध्वी जी ए आवा महत्व ना काम नी जवावदारी वर्षो थी स्विकारी छे, ते घणो ज प्रशंसा पात्र छे, तेओ आ काम केटली सुन्दर रीते करे छे ते मैं नजरो नजर जोयूं छे ।

सत्र ने हु मारी हार्दिक शुभेच्छा मोकलुं छुं अने सम्पूर्ण सफलता इच्छु छुं ।

अहमदाबाद] [कचराभाई हठीसींग

आज के युग में शिविर के माध्यम से विद्यार्थियो मे सही सस्कार का बीजारोपण हो सकता है और आपके द्वारा जो यह महान कार्यक्रम चलाया जा रहा है वह अवश्य ही अभिनन्दनीय है।

बालाघाट]
(म० प्र०)

[कालूराम बाफना
मन्त्री
श्री जैन श्वे० मूर्ति पूजक सघ

× × × ×

साध्वी जी महाराज तो अहदावाद माँ अने बीजा पण जग्या सत्रोनो आयोजन करी सारु अेवु काम कर्युं छे अने लोको माँ धार्मिक ज्ञान तरफ अभिरुची मिली छे, तमारा प्रयत्नो ने सपूर्ण सफलता इच्छु छु।

अहमदाबाद]

[आत्माराम भोगीलाल सुतरीया

× × ×

राजस्थान मे ऐसे सत्रो की परमावश्यकता है। हमारा विश्वास है कि इससे जैन समाज मे नैतिक और धार्मिक उन्नति–उत्कर्ष मे प्रशसनीय प्रगति होगी।

कलकत्ता]

[राजवैद्य जसवन्तराय जैन

शिविर योजना प्रशंसनीय है।

छोटी सादडी] [चन्दनमल नागौरी

× × × ×

श्री निर्मला श्री जी के निर्देशन में हो रहे सत्र की जान कर बहुत खुशी हुई। खासकर इसलिये कि महाराज सा० ने हमारे गुजरात में बहुत सी जगह ऐसे सत्र सफलता पूर्वक किये है और इस बारे में उनका विशिष्ट नाम है। मेरी शासन देवता से नम्र प्रार्थना है कि यह सत्र भी अच्छी तरह सफल हो।

अहमदाबाद] [शाह हीरालाल भोगीलाल

× × ×

वहनो ना सांस्कृतिक विकास माटे सत्र शुरु करे छे ते ओ श्री अे गुजरात सौराष्ट्र माँ खुवज प्रकाश पाथर्यो छे राजस्थान तो जैन दर्शन नी पूर्व भुमि छे। राजस्थान मांज जैन धर्म नी ज्योति प्रकाशित थई छे। जैन संस्कृति ने राजस्थान ने प्रकटायेली राखी छे। अमो आ सत्र नु अभिवादन करीये छीये शुभेच्छा।

तलाजा] [अमरचंद मावजी शाह
तालध्वज जैन श्वे० तीर्थ कमेटी

जयपुर श्री सघ ने साध्वीजी निर्मलाश्रीजी महाराज के सानिध्य मे कन्याश्रो के लिए जो शिविर की योजना की है वह श्रति उत्तम है। श्री साध्वीजी महाराज उत्साह श्रौर परिश्रम पूर्वक वालाश्रो को ऐसा सुन्दर ज्ञानामृत दे रहे हैं, वह श्रत्यधिक श्रानन्द की वात है। यह सत्र हर प्रकार से सफल हो। वहिनें ' ज्ञान प्राप्ति के साथ श्रम, सादगी, सहिष्णुता श्रादि गुणो का विकास कर श्रागे वढे।

श्री साध्वीजी महाराज हमेशा ऐसा लाभ देते रहे परमात्मा उन्हे खूब शक्ति प्रदान करे। उनके शुभ हाथो से सघ श्रौर शासन के शुभ कार्य होते रहे।

यही हमारी हार्दिक शुभेच्छा है, प्रभु से प्रार्थना है।

श्रहमदावाद]

[साध्वी श्री मृगावती श्रीजी

× × ×

सस्कार श्रध्ययन सत्र नी सफलता माटे हार्दिक शुभेच्छा।

पालीताना]

[चन्दना
श्री सिद्धक्षेत्र श्राविकाश्रम

× × ×

श्रा शिक्षायतनमे वधु वालिकाश्रो श्रावी, पूर्ण लाभ लई श्राप सर्व ना प्रयत्न नें सफल वनावे ते वी शुभेच्छा।

महसाना]

[पूखराज श्रमीचन्द कोठारी
श्री जैन श्रेयस्कर मण्डल

शिविर के सम्बन्ध में लेख
व
अभिप्राय
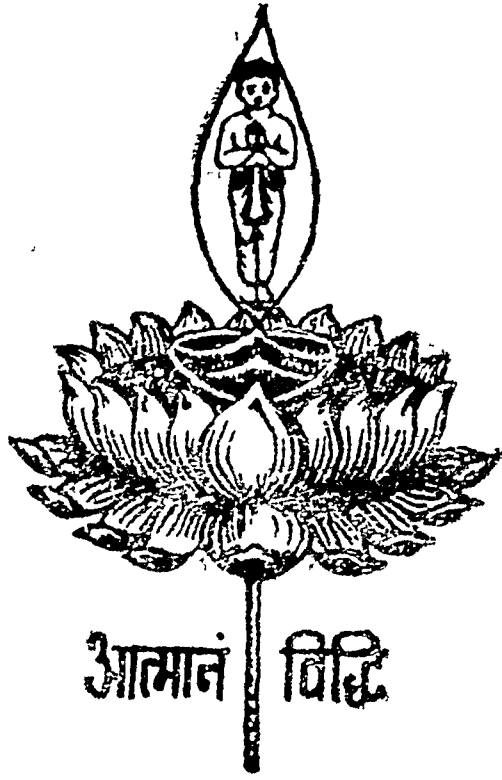
शिविर के सम्बन्ध में अनुभवी विद्वानों, शिविर की बहनों एवं अन्य विशिष्ट जनों के लेखों का संकलन

शिविर की बहनों

को

हार्दिक-शुभेच्छा

पूनमचन्द नाहर

बम्बई

शुभ कामनाये

एक सद्गृहस्थ

जयपुर

अवकाश के समय का सदुपयोग

लेखक—अगरचन्द, नाहटा

संसार में यदि कोई सबसे मूल्यवान वस्तु है तो वह है समय ! जो समय बीत जाता है, उसे वापस प्राप्त नहीं किया जा सकता। प्राणियों के जीवन का समय सीमित है। उसका एक-एक पल बड़ी तेजी से छीजता जा रहा है। अञ्जलि के जल की तरह प्रति क्षण छीजते हुए समय का एक दिन अन्त आ ही जाता है और हमारे सारे मनोरथ यहीं धरे रह जाते है। वैसे भी लोगों की प्रायः शिकायत रहती है कि क्या-क्या करें, काम तो बहुत करने हैं पर समय नहीं मिलता। बहुत से काम, जिन्हें हम बहुत ही महत्व के एवं उपयोगी समझते हैं, करना चाहते हुए भी समयाभाव से नहीं कर पाते। सूक्ष्म समय का मूल्य आँकना वड़ा ही कठिन है। क्षण भर के प्रमाद, आलस्य या देरी से हम बहुत बार महान् लाभ से वञ्चित रह जाते है।

वैसे तो मनुष्य हर समय किसी न किसी प्रवृति में लगा ही रहता है, पर सभी प्रवृतियाँ आवश्यक, उपयोगी एवं लाभप्रद नही होती। जीवनयापन के लिये कुछ प्रवृत्तियाँ तो अनिवार्य होती है पर विचार करने पर लगता है कि आवश्यक और असत् प्रवृत्तियों में ही हम वहुत समय खो देते हैं। हर मनुष्य काम ही करता हो, ऐसी वात भी नही है। हमारा वहुत-सा समय वेकार और निकम्मा भी जाता है।

काम करते-करते या काम पूरा कर लेने के बाद विश्राम की आवश्यकता होती है, जिससे काम करने की शक्ति का पुनः संचय होता है। प्रकृति ने ही ऐसा ही विधान वना रक्खा है। दिन में काम करें और रात में नींद लेकर विश्राम भी करें, जिससे दिन भर के किये हुए काम की थकावट दूर हो जाय और दूसरे दिन पूरी ताजगी के साथ पुनः काम में जुट जायँ। प्रवृत्तियाँ भी सब समय मनुष्य एक ही न करके अनेक प्रकार की करता है - कोई व्यक्ति खड़ा ही खड़ा नहीं रह सकता, थोड़े समय वाद बैठने की भी आवश्यकता हो जाती है। कुछ समय खेल-कूद में बीतता है, कुछ समय वात-चीत में। इस प्रकार मन, वचन और शरीर का अर्थात् इन्द्रियों का उपयोग विविध प्रकार होता रहता है। कुछ समय तक तो आँखें निरन्तर देखने का काम करती हैं, पर थोड़े समय वाद हमें नैत्रों को बन्द करने यानी विश्राम देने की आवश्यकता हो जाती है। इस तरह काम और विश्राम में समय वीतता जाता है। पर विश्राम आलस्य के या निठल्लेपन के लिये नही, विश्राम काम की शक्ति वढ़ाने के लिये ही है।

प्रकृति के साथ-साथ मनुष्य ने भी अपनी सुविधा के लिये काम के साथ अवकाश का समय भी निकाल रखा है। जैसे सप्ताह में छः दिन काम करके रविवार को छुट्टी मनायी

जाती है, ताकि मनुष्य काम से उकता न जाय और अपने बचे हुए अन्य प्रकार के काम छुट्टी के दिन पूरे कर सके। मनोरञ्जन, मिलना-जुलना, कही आना-जाना, आवश्यक सामान खरीदना आदि कार्य, जिन्हे वह छ दिनो मे नही कर सका, सातवें छुट्टी के दिन कर सके। इसी तरह बहुत से और भी छुट्टी के दिन होते हैं, जिन दिनो मे उसे निश्चित कार्यो से अवकाश मिलकर अन्य कार्य करने की सुविधा मिल जाती है। विद्यार्थियो को परीक्षा से पहले कुछ दिन परीक्षाओ की अच्छी तैयारी करने के लिये छुट्टियां मिलती हैं, ताकि परीक्षा के दिनो मे उन्हे जो अधिक श्रम करना पडता है, उसकी थकावट दूर हो जाय, इधर परीक्षा-पत्रों को जाच कर परीक्षाओ का परिणाम घोषित करने के लिये अध्यापको आदि को भी समय मिल सके। इसी तरह इतने वर्षो तक कार्य कर लेने के बाद सरकार की ओर से भी उसे अवकाश निवृत्ति मिल जाती है।

अब प्रश्न यह रहता है कि हम अवकाश के दिनो मे समय का उपयोग किन कामो मे करे। चार आश्रमो मे विभाजित भारतीय जीवन मे इसकी सुन्दर व्यवस्था मिलती है। बाल्यावस्था मे विद्याध्ययन अर्थात् योग्यता की प्राप्ति करके गृहस्थाश्रम मे अपने कौटुम्बिक जीवन के सुसचालन मे लगे। इसी तरह अर्थोपार्जन, सतानोत्पादन करने के बाद वानप्रस्थ स्वीकार किया जाय, जिसमे स्वयमेव जीवन दूसरो के लिये लाभप्रद हो। साथ ही अपनी अध्यात्मिक उन्नति भी करें। सकुचित कुटुम्ब की ममता से अपने को ऊपर उठाकर विश्ववात्सल्य के भाव को जागृत करे और सब के हित मे अपने जीवन का समर्पण करदें। वास्तव मे अवकाश के समय का उपयोग भी हमे अपना आध्यात्मिक उन्नति और आत्मकल्याण मे ही करना उचित है। विद्यार्थी अपनी छुट्टियो के दिनो मे आस-पास के अशिक्षित लोगो को शिक्षित बनाने का प्रयत्न करें। व्यर्थ ही इधर-उधर घूमने, गप्पें मारने तथा खेलने आदि मे समय बर्बाद न करें। अच्छे-अच्छे ग्रन्थो के स्वाध्याय से अपने ज्ञान को परिपुष्ट करें और दूसरे को ज्ञान का दान करे। आज हम देखते हैं कि लम्बी-लम्बी छुट्टियो से विद्यार्थियो का जीवन बर्बाद सा होता है। इन दिनो मे कई बुरी आदतें डाल लेते हैं। इससे घरवाले भी परेशान होते हैं और स्वय का जीवन भी बिगडता है। वास्तव मे उनके सामने कोई ध्येय या आदर्श नही होता कि इन छुट्टियो का उपयोग किस तरह से करें।

अब से कुछ वर्षो पहले शिक्षालयो मे छुट्टियाँ बहुत ही कम होती थीं। हम जब पढते थे तब केवल प्रतिपदा की ही छुट्टी होती थी। इसके बाद महीने मे चार छुट्टियाँ होने लगी। पर ग्रीष्मावकाश आदि की लम्बी छुट्टियाँ तो इधर कुछ वर्षो मे ही बढी है इससे विद्यार्थियो का तनिक भी लाभ नही हुआ, अपितु बहुत हानि हुई है। आजकल वर्ष मे चार छ महीने छुट्टियो मे ही बीत जाते हैं। यदि इतने समय मे मनोयोगपूर्वक पढाई की जाय तो जिस श्रेणी मे पहुँचने के लिए आज आठ वर्ष लगते हैं वह चार-पाँच वर्ष मे पूरी हो सकती है। तीन वर्षो के बचत का भावी जीवन मे बडा भारी महत्व है। शिक्षा का स्तर तो पूर्वापेक्षा बहुत गिर चुका है। पहले के पढे पाँचवी कक्षा के विद्यार्थी आज के आठवी कक्षा के विद्यार्थियो से बहुत तेज होते हैं। इस तरह विद्यार्थियो के अमूल्य जीवन की बरबादी को रोकने का राष्ट्रीय

सरकार एवं उसके हितैषी माता-पिता एवं अध्यापकों का परम कर्त्तव्य होना चाहिये। औद्योगिक क्षेत्र में भी हम देखते हैं कि रविवार आदि छुट्टियों के दिनों का उपयोग मजदूर शराव पीने, सिनेमा देखने आदि बुरी बातों में ही करते हैं। उनको भी अपने अवकाश के समय का सदुपयोग अपनी योग्यता के विकास में करना और नये-नये कामों को सीखना चाहिये। उस समय सबको सम्मिलित होकर अपने परिवार, देश और राष्ट्र की उन्नति कैसे हो, उत्पादन कैसे बढ़े, बरवादी कैसे मिटे इस सम्बन्ध में विचार-विमर्श करना चाहिये। संत समागम, प्रार्थना, ईश्वर भजन, कीर्तन, अच्छे ग्रन्थों का पढ़ना, अपने बच्चों को कुसंस्कार से दूर कर सुसंस्कार की ओर प्रेरित करना, पीड़ित एवं दुःखी व्यक्तियों की सेवा करके समय का सदुपयोग करना चाहिये। अवकाश प्राप्त व्यक्तियों को भी इसी तरह कल्याण में लग जाना चाहिये। जीवन का एक लक्ष्य भी प्रमाद एवं बुरे कामों में नष्ट न हो इसका पूरा विवेक रखना ही मानव कर्त्तव्य है।

अपने सभी काम नियत समय पर करके अपना एवं दूसरों का वहुमूल्य समय बचाइये, व्यर्थ की बातों में थोड़ा समय भी बरबाद नहीं करना चाहिये। व्यवस्थित ढंग से काम करके हम अपने कार्यों में समय के अपव्यय को बचा सकते हैं।

जीवन थोड़ा है और कार्य अनेक करने हैं। आयुष्य प्रतिक्षण छीजता जा रहा है और न जाने कब पूरा हो जाय। अतः भगवान महावीर के महान् उद्बोधक संदेश को सदा ध्यान में रखिये। 'समयं गोयम मापमाचं' अर्थात् हे गौतम! एक क्षण भी प्रमाद न कर। जैन दर्शन में कहा है कि समय बहुत ही सूक्ष्म होता है। हमें पूर्व जागृति के साथ उसके एक-एक पल का सदुपयोग करके जीवन सार्थक करने का प्रयत्न करना चाहिये।

जो व्यक्ति वर्षों तक काम करके अवकाश ग्रहण करते है, उनके वर्षों के अनुभव का लाभ नवयुवकों को मिलना चाहिये। अतः जिन व्यक्तियों ने जिन-जिन कार्यों में कुशलता प्राप्त की हो, अवकाश ग्रहण करने के बाद उन्हें दूसरों को योग्य बनाने में समय लगाना चाहिये, क्योंकि आज के वालक और युवक ही भावी राष्ट्र के कर्णधार होते हैं, उनके विकास में अपना सहयोग देना राष्ट्रीय कर्त्तव्य का पालन तथा समय का सदुपयोग है। ●

● जिसका धन खो गया, उसका कुछ नही खोया, जिसका स्वास्थ्य खो गया, उसका थोडा खो गया लेकिन जिसका आचरण खो गया उसका सब कुछ नष्ट हो गया।

—इमर्सन

● अपने हित के लिए दूसरे का हित करना जरूरी है।

—श्री ब्रह्मचैतन्य

आज की आवश्यकता

लेखक—कमला चोरडीया, जयपुर

कोई समय था जब भारत विश्व का गुरु था। इसका कारण था भारत के लोग आध्यात्मिकता को महत्व देते थे। आज का युग विज्ञान का युग हे। विज्ञान द्वारा प्रदत्त वस्तुओ का उपभोग मनुष्य अपने जीवन मे वढाता जा रहा है। सैंकडो वस्तुओ के आविष्कार मनुष्य की सुख सुविधा के लिये हो गये है। परन्तु ज्यो-ज्यो साधन वढते जा रहे हैं त्यो-त्यो मनुष्य की लालसा भी बढती जा रही है। आज का मनुष्य भौतिकता के पीछे भाग रहा है। इतने सुख सुविधा के साधन होते हुए भी वह सुखी नही हे। इसका कारण है कि इसके साथ उसे आध्यात्मिक ज्ञान नही है। आध्यात्मिक ज्ञान का अर्थ क्या है यह जानना भी आवश्यक है। आध्यात्मिक का अर्थ वडा गहरा व विशाल हे। इसमे आत्मा परमात्मा का ज्ञान, मनुष्य क्या है उसे ससार मे आकर क्या करना चाहिये ? इसके अलावा धर्म व नैतिकता का स्थान आध्यात्मिकता से अलग नही हे।

पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण कर आज देश व समाज भौतिकता की दौड मे भागा जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति सव कुछ पाने की लालसा रखता है। जल्दी से जल्दी विना परिश्रम सम्पन्न व धनी बन जाना चाहता है। देश मे भ्रष्टाचार घू स, चोर वाजारी, वढती जा रही है। इसका कारण है लोगो ने नैतिकता को तो तिलाजली दे दी है। यही कारण है कि आज २५ वर्ष के वाद भी भारत वह उन्नति न कर पाया जो उसे वास्तव मे प्राप्त होनी चाहिये थी। देश मे वडी-वडी योजनाएँ वनती है परन्तु लोगो के आलस्य व कामचोरी के कारण वर्षों खटाई मे पडी रहती हैं। इसका कारण क्या है ? इसका कारण है कि उसमे आध्यात्मिकता का अभाव है। उन्हे तो विना परिश्रम के वेतन प्राप्त हो ही जाता है। सरकारी जीप व सरकारी अन्य साधन लोगो की सुख सुविधा व विलासिता के साधन वन जाते हैं। पिकनिक पार्टियाँ मनाई जाती हैं। यदि ऐसे लोगो मे आध्यात्मिकता होती, नैतिकता होती तो कभी वे सरकारी वस्तुओ का दुरुपयोग नही करते। यही कारण है कि हम अपने लक्ष्य तक नही पहुँच पाते। देश से २५ वर्ष के वाद भी गरीबी व भुखमरी को नही मिटा पाये।

अच्छी-अच्छी प्रतिभायें काम व धन के अभाव मे अपना विकास नही कर पाती। नौकरी उन्ही को मिलती हैं जिनकी सिफारिश होती है या जो पैसा खिलाते हैं। ऐसे निकम्मे लोग जव कुर्सियो पर जा वैठते हैं वे देश या समाज का क्या कल्याण करेंगे ?

यही कारण था कि गांधी जी धर्म को राजनीति से अलग नहीं कर सके। यदि आध्यात्मिक तत्व को राजनीति से अलग कर दिया तो वह दिन दूर नहीं जब पूरा संसार रसातल की ओर चला जायेगा। अतः ऐसे समय में इन आध्यात्मिक संत का महत्वपूर्ण स्थान है जो मानव को आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान कर उन्हें सही मार्ग दर्शन करे।

भारत ने प्रजातन्त्र प्रणाली को अपनाया है। जनता के प्रतिनिधि शासन व्यवस्था को सम्भालते हैं। पर गे जनता के प्रतिनिधि जो चुनकर आते है क्या ये अपनी योग्यता से आते हैं? नहीं ये चुने जाते हैं पैसे के बल पर। यदि इनमें आध्यात्मिकता होती कभी ये इस प्रकार चुनाव जीतने का प्रयत्न नहीं करते।

आज विज्ञान ने काफी उन्नति करली है। विज्ञान में दोहरी शक्ति होती है, विकास शक्ति व विनाश शक्ति। अग्नि नारायण की खोज हुई तो उसकी वदौलत रसोई बनती है और घर में आग भी लगाई जा सकती है। किन्तु अग्नि का उपयोग घर फूँकने में करना है या चूल्हा जलाने में यह अकल विज्ञान में नहीं है यह अकल तो आत्म ज्ञान में है। अमेरिका ने द्वितीय युद्ध में अणुबम का प्रयोग हिरोशिमा व नागासाकी में किया यदि इसका प्रयोग मानवता के हित में किया जाता तो आज दुनियाँ का रूप ही और होता। वैज्ञानिक आध्यात्मिकता को अपना कर यह प्रण करें कि ध्वंसात्मक शस्त्रों का निर्माण नहीं करेंगे। जब समाज का हृदय मानवता पुकार उठेगी तभी यह चीज रोकी जा सकेगी। विज्ञान और अहिंसा का जहाँ योग हुआ इस दुनियाँ में, जमीन पर स्वर्ग उतर आयेगा और यह दुनियाँ वची रहेगी। वैज्ञानिक आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा ही यह निर्णय करेंगे कि हमें किस प्रकार की शोध करनी है। आत्म-ज्ञान के बिना विज्ञान अन्धा है और विज्ञान के बिना आत्म-ज्ञान लंगड़ा। विज्ञान का गठबन्धन अहिंसा के साथ किया जाये और मानव जाति की समस्याओं को अहिंसा की शक्ति अथवा नैतिक शक्ति द्वारा हल किया जाय।

इस प्रकार आज समाज में जो नैतिकता की कमी है, उसे आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान कर, सही मार्ग दर्शन कर देश समाज और यहाँ तक कि विश्व का कल्याण हो सकता है। ●

● वह वृथा नही जीता जो अपना धन, अपना तन, अपना मन, अपना वचन दूसरों की भलाई में लगाता है।

— हिन्दू सिद्धान्त

● यदि आदमी परोपकारी नही तो उसमें और दीवाल पर खिंचे हुए चित्र में क्या फर्क है?

—सादी

कल्प – साधना

लेखक— कुमारपाल देसाई

एक नारी।

बडी दुखियारी।

कितने ही मधुर–मीठे सपनो मे खोई खोई उसने व्याह किया, पर वे सपने सफल हो उससे पूर्व ही वे जलकर खाक हो गये।

व्याह के बाद पति तो परदेस सिधारा।

प्रारम्भ मे तो रोज पत्र आता, परन्तु कुछ दिनो के पश्चात् सप्ताह मे आने लगा। फिर महिनो मे एकाध बार आने लगा और उसके बाद तो वह भी सर्वथा बन्द हो गया। नारी के जीवन मे चारो ओर हताश का अन्धकार छा गया।

जीवन जहर हो गया। अभी तो जवानी की पौडी पर पहला ही कदम रखा था कि उसका जगत वीरान हो गया। हृदय की उमगो की टूटन आसूओ के रूप मे टपकने लगी। वसन्त के कलशोर के स्थान पर पतझड छा गई।

धर्म के तन्तु के बल पर जीवन को जोडने का प्रयत्न किया साधु–साध्वियो के व्याख्यान मे जाय, परन्तु भीतर धधकती आग शान्त क्यो कर हो? ज्ञानभरी बाते सुने, पर दिल की तडपन किसी भी तरह भुलाये भुलाती नही। कभी तो ऐसा हो आता कि इस समूचे जगत को कुचल डालू। कभी मन मे विचार आ जाता कि इस जीवन का ही गला घोट डालू !

साध्वीजी से यह वेदना छुपाये छुप न सकी। वे ताड गई। उन्होने उस स्त्री को बुलाकर पूछा, "बहन रोज तुम व्याख्यान सुनने आती हो। ज्ञानगोष्ठि और धर्म-शिविरो मे तुम धार्मिक ज्ञान लेती हो, परन्तु तुम्हारे मन मे कोई खुटका लगता है। तुम्हारा मन उलझा–उलझा रहता है। बराबर जमता नही ?

ज्ञानी साध्वीजी से ससार की बातें क्या कहनी ? इसमें तो हम खुद ही कितने हेय–से लगते हैं ? ऐसा समझ कर उस स्त्री ने अपनी बात छुपाते हुए कहा, "यह तो हमारे ससार के दुख। इनका तो ख्याल तक आपको कहा से आवे ?"

साध्वीजी ने कहा "कुछ कहो तो सही। समझ मे आयगा तो कुछ रास्ता दिखा सकू गी।"

उस नारी ने आपबीती कह सुनाई। वेदना ऊडेलने लगी तो फिर सारी की सारी कह सुनाई। अपनी निराधारता जताई और आत्महत्या के उमड घुमडकर मडराते विचार भी कह सुनाये।

साध्वीजी ने उससे स्वावलम्बी बनने की बात कही। अपने पैरो पर खडे रहकर रोटी

कमा खाने का हौसला दिया। आहिस्ता आहिस्ता धर्म के संस्कारों का भी सिंचन किया। गुणों की महिमा प्रकट की जीवन का महत्व दरसाया। उस स्त्री के जीवन में नया प्रकाश जगमगाया। घोर अन्धकार हट गया और सूर्य के प्रकाश में उन्नत मस्तक रखकर खड़ा रहने की हिम्मत आई।

साध्वीजी की प्रयाण–बेला आ पहुँची। उस स्त्री ने आकर प्रतिज्ञा ली "पति शायद मिले या न मिले, परन्तु उसकी चिन्ता न कर मैं शुद्ध रूप से अपना जीवन—यापन करूंगी। आत्महत्या का विचार तक मन में कभी न आने दूंगी।"

इन साध्वीजी ने कितनी ही स्त्रियों को अपमृत्यु के मुंह से वचाकर हिम्मत के साथ स्वमानपूर्वक जीवन जीने की राह दिखाई है।

इन साध्वीजी का नाम है निर्मलाश्री जी।

उन्होंने देखा कि नारी-जीवन दिग्भ्रांत है। जगह जगह वे स्त्रियों से मिलतीं और उनके जीवन का ढ़ांचा परखने का प्रयत्न करतीं। एक वार वे पाटन में थीं। कुछ शिक्षिकाएं उनके दर्शनार्थ आईं। साध्वीजी ने पूछा "तुमने शिक्षा का व्यवसाय क्यों पसन्द किया!"

एक ने कहा, "हम सुखी हैं, पर मेरे पति की इच्छा से मैं यह काम करती हूं।"

दूसरी शिक्षिका ने कहा "मैं दुःखी स्त्री हूं। कुटुम्व के लिए मुझे कमाना तो चाहिए न ?"

तीसरी ने कहा, "मेरे मन तो यह समय काटने का काम है। जीना और मरना दोनों समान हैं। यों तो सुखी हूं, पर क्या करना यह ज्ञात न होने से यह काम करती हूं।

इस घटना ने साध्वीजी के चित्त में खलबली मचा दी। जमाने के रुख पर उन्हें दुखः हुआ। स्त्री और पुरूष काम करते हैं, परन्तु विना किसी भी प्रकार के कर्तव्य के भान के। जीवन में खाना, पीना और ऐश–आराम करना–ऐसी वृत्ति काम कर रही हो ऐसा उन्हें प्रतीत हुआ। करोड़पति भी दुखी है। सुख कहीं नहीं दिखता।

ऐसे समाज को स्वयं किस प्रकार सहाय-भूत हो ?–बस यही विचार रात–दिन निर्मला श्री जी को सताने लगा, ऐसे समाज को आर्थिक रूप से सहायक होने का तो कोई प्रश्न निष्किंचन निर्मला श्री जी के लिये था ही नहीं, परन्तु विचारों का सिंचन करके समाज की विचारशून्य, दिशाविहीन दशा सुधारने का मन में संकल्प किया। समाज यदि सच्चा सुख और दुख क्या है यह वरावर समझे तो अपनी शक्ति वनाये रख सकता है। जो जीना चाहता है उसके पास सुख–दुख की सही समझ होना नितान्त आवश्यक है।

साध्वीजी की इच्छा समाज में सुगन्धी और समृद्धि फैलाने की थी, पुराने और नये विचारों और मनोवृत्तियों के वीच सेतुरूप वनने की थी। इसके लिए उन्होंने शिविर की योजना वनाई। उसमें धर्म के व्यापक तत्वों के परामर्श के साथ सद्गुणों की आवश्यकता समझाई जाती।

यह ज्ञानशिविर भी एक अनोखी गोष्ठि सा था। इसका नाम रखा गया, 'संस्कार–अध्ययन सत्र।' इसका उद्देश्य सामाजिक, नैतिक और धार्मिक मूल्यों की जीवन में संस्थापना' रखा गया। इसमें दो विभाग थे। प्रथम विभाग में चौथी श्रेणी से लेकर

दसवी श्रेणी की छात्राओ का तो दूसरे विभाग मे मेट्रिक से लेकर कालेज मे अभ्यास करती छात्राओ का समावेश होता।

यहा पढाने का तरीका भी कुछ अनूठा था। छोटी बालिकाओ को सगीत के द्वारा सद्गुणो का प्रशिक्षण दिया जाता। महापुरुषो के जीवन की बातें सुनाकर उनकी सुवास समझाई जाती। इसमे धार्मिक ज्ञान की अपेक्षा जीवन की उच्चता पर सविशेष लक्ष्य दिया जाता। साध्वीजी को इस कार्य मे पन्ना बहन शाह जैसी सन्निष्ठ एव सेवाव्रत धारी भगिनी का भी सहयोग उपलब्ध हुआ।

दूसरे विभाग के अभ्यास की पद्धति उससे भिन्न थी। इसमे पहले घन्टे मे तत्व-ज्ञान की चर्चा-विचारणा होती। दूसरे मे श्रावक के इक्कीस गुणो के आधार पर सद्-गुणो की आवश्यकता समझाई जाती। तीसरे मे अभ्यास करती बहनें ही अपने जीवन मे किये गये महत्वपूर्ण कार्यो का विवेचन करती। स्त्रियो को कैसे कार्य जीवन मे करने चाहिए इसका निर्देशन किया जाता, इतर विद्वानो के प्रवचनो की भी, धर्म की व्यापकता के अनुसन्धान मे, आयोजना की जाती।

पहले जीवन है, तत्वज्ञान उसके पश्चात्, साध्वी श्री निर्मलाश्री जी प्रथम जीवन को पहचानने और उसका उर्ध्वीकरण करने की बात समझाती हैं। तत्पश्चात् ही तत्वज्ञान के जगत की ओर प्रस्थान किया जा सकता है। उनकी दृष्टि तो नारी का अन्तिम ध्येय स्फुट करने पर रहती है। वे कहती हैं कि हीरे-मोती के गहने पहनने वालो की एक-दो दिन सब वाह-वाह पुकारेंगे, प्रशसा बाद मे भूल जायेंगे। मान तो सदा टिकता है सद्गुणो पर। नारी अपने सद्गुणो से समाज को शोभित करे, यह सर्वप्रथम आवश्यकता है।

यह शिविर मात्र किसी एक धर्म को लक्ष्य मे रखकर नही आयोजित होता, इसमे सब धर्मों की स्त्रियाँ भाग लेती हैं। और धर्म के व्यापक तत्व आत्मसात् करती हैं। आत्म सयम, मानवता और धैर्य ही इसकी नीव के पत्थर हैं। अब तक पाँच स्थानो पर ऐसे शिविरो का आयोजन हुआ है और प्रत्येक शिविर मे दोसौ स्त्रियो ने भाग लिया था। युवावर्ग की धर्म विमुखता शनै शनै सच्ची धर्माभिमुखता मे पलटने लगी है। आज के युवावर्ग मे धर्म के प्रति एक तरह का घृणाभाव देखा जाता है। इसे दूर करने और धर्म के सही मूल्यो का जतन और प्रसार करने के लिए साधुवर्ग को उपाश्रय से बाहर की दुनिया का सन्दर्भ परख-कर ज्ञान-विनियोग के लिए प्रयत्नशील होना पडेगा। साध्वीजी का व्यापक ज्ञान इस कार्य मे उनका सहायक हुआ है।

उनकी ज्ञान-प्रपा मे जीवन मूल्यो का पानकर कितनी ही स्त्रियो की वेदना को शान्ति प्राप्त हुई है। एक स्त्री को अपने लाडले बेटे की मृत्यु के कारण जीवन पर तिरस्कार हो गया। उसे इस ज्ञान-गगा ने सच्चे मार्ग पर प्रस्थान करने की प्रेरणा दी।

प्रेमलग्न के अनन्तर प्राप्त घोर निष्फलता एव निरादर के कारण आत्महत्या करने का विचार करती एक स्त्री इसी ज्ञान-सत्र की बदौलत मानव-सेवा मे लग गई।

साध्वीजी का मानना है कि समकक्ष बनकर ही दूसरे को समझाया जा सकता है।

उत्तर-प्रदेश मैं विहार करते समय जन-मन को समझने की आवश्यकता प्रतीत होने पर 'साहित्यरत्न' तक की हिन्दी की सब परीक्षाएँ पास की। एम० ए० तो वे संस्कृत विषय लेकर हो चुकी हैं। पी. एच. डी. का उनका शोध-प्रबन्ध विद्वानों में प्रशंसा पा चुका है। साध्वीजी के मन में उपाधि का कोई महत्व नहीं है, वास्तविक महत्व तो ज्ञान का है। उनका उदिष्ट तो विभिन्न स्थानों में ऐसी शिक्षण संस्थाएं स्थापित कर मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा करना है।

समाज के एक कोने में चलती ऐसी प्रवृत्ति ही समाज-भवन के निर्माण एवं संरक्षण की आधारशिला है। हमारे जीवन एवं संस्कारों के विकास और संवर्धन के लिए इसकी नितान्त आवश्यकता है।

भारतीय चिन्तनधारा ने मानव के ऊर्ध्वीकरण को लक्ष्य में रखकर जीवन-काव्य में सबल भावाभिव्यक्ति के लिए जिन असंख्य रूपकों की संयोजना की है उनमें कल्पवृक्ष की कल्पना एक निराला और अत्यन्त महत्व-पूर्ण स्थान रखती है। कल्पवृक्ष देवभूमि का एक ऐसा वृक्ष है, जिसके पास खड़े रहकर सोची हुई वस्तु तत्काल उपलब्ध होती है मानव जीवन में भी कल्प (आचार सदाचार) एक ऐसा वृक्ष है, जिसका आलम्बन लेने से, जिसकी छाया में मात्र खड़े ही रहने से दिव्य-लोक का अवतार शक्य ही नहीं अवश्यम्भावी है। जीवन के इस काव्य में अभिव्यक्ति की सबलता लानेवाले कवियों की (कवि – द्रष्टा) जो अस्खलित परम्परा इस पुण्य भूमि में बहती रहती है। उसमें साध्वी श्री निर्मलाश्री जी का प्रदान स्वल्प भी है ही। ऊपर निर्दिष्ट यह कल्प-साधना अधिक सघन बनो!

"मेहनत वह सुन्दर चावी है जो सौभाग्य के फाटक खोल देती है।"

—चाणक्य।

"जो आदमी अपने देश से प्रेम नही कर सकता, वह किसी से भी प्रेम नही कर सकता।"

—बाइरन।

बच्चों को संस्कारवान् बनाइये !

श्रीमती शान्ता भानावत् एम० ए०,
रिसर्च स्कॉलर हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

प्राचीन भारत आध्यात्मिक और चारित्रिक दृष्टि से विश्व की नजरों मे महान् रहा है। यहाँ के महापुरुष अपने चरित्र और धर्म की रक्षा के लिए मर मिटे पर अपने मार्ग से विचलित नही हुए। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र अपने सत्य की रक्षा हेतु स्वय चाडाल के घर बिके, पत्नी को ब्राह्मण के घर बेचा। कर्त्तव्य-पालन मे वे इतने कठोर थे कि पुत्र की मृत्यु हो जाने पर अपनी स्त्री से बिना टैक्स लिये श्मशान मे पुत्र को जलाने तक नही दिया, रानी विवश थी। उसके पास पुत्र को ओढाने के लिये कफन भी नही था। फिर वह श्मशान मे पुत्र के दाह सस्कार पर टैक्स क्या देती? राजा को उसके मालिक का हुक्म था 'बिना कफन लिये मुर्दे को न जलाने देना।' राजा ने रानी को स्पष्ट कह दिया—'तुम बिना कर दिये इस श्मशान मे मुर्दा नही जला सकती।' राजा पति-पत्नी के सम्बन्ध को भूल चुका था। उसने कर्त्तव्य को ही प्रमुखता दी। उसी भारत भूमि के मानव मे आज कहाँ है इतनी सत्यनिष्ठा? कहाँ है इतना कर्त्तव्य-पालन? बालक श्रवण की मातृ-पितृ भक्ति तो आज हमारे सामने प्रश्नवाचक चिन्ह लगा देती है। आज के बालक मे कहाँ है वह सेवा भावना? कहाँ है वह त्याग-वृत्ति?

महर्षि दधीचि का दान, अरणक की गुरु-भक्ति रानी धारिणी की शील रक्षा, चन्दन बाला का त्याग आदि प्रेरणादायी प्रसग उनकी चारित्रिक विशेषता के द्योतक थे। इनका एकमात्र कारण यही है कि बचपन मे उन्हे अपने माता-पिता के सुसस्कारवान बनने की व्यावहारिक शिक्षा मिली थी। गुरु से ज्ञान मिला था कि नश्वर शरीर और धन की परवाह किये बिना अपने धर्म और चरित्र की रक्षा करना। वे सोचा करते थे—धन चला गया तो कुछ नही गया पर धर्म चला गया तो सब कुछ नष्ट हो गया। पर आज कहाँ है—धर्म के प्रति वह प्रगाढ श्रद्धा? कहाँ है वह चारित्रिक बल? आज के मानव का तो अत्यधिक नैतिक पतन हो गया है। रिश्वत-खोरी, चोर-बाजारी, पॉकेटमारी, शराबखोरी जैसे कुव्यसन बढते जा रहे हैं। इस चारित्रिक दुर्बलता का एकमात्र कारण बालक मे अच्छे सस्कारो की कमी होना है। बचपन मे ही बालक मे जैसे सस्कार ढाले जायेंगे वैसी ही उसकी आदत बन जायगी। बच्चा बचपन मे अपने माता-पिता के सम्पर्क मे आता है। वहाँ उसे जैसा वातावरण मिलता है, वह वैसी ही आदत सीखता है। बच्चा बडा होने पर पाठशाला भेजा जाता है। वहाँ वह अपने

अध्यापकों और साथी जनों के सम्पर्क में आता है। वहाँ भी उसे जैसा वातावरण मिलेगा, वह उन्हीं बातों को सीखने का प्रयत्न करेगा। बच्चे को यदि दोनों जगह अच्छा वातावरण मिला तो वह बड़ा होकर चरित्र-वान बनेगा। आज ऐसे उदाहरण भी हमें कभी-कभी दिखाई देते हैं कि लाख मुसीबत आये, सहर्ष मुकाबला कर लेंगे पर अपने चरित्र पर किसी प्रकार की आँच नहीं आने देंगे। पर ऐसे व्यक्तियों की संख्या बहुत ही कम है। सहस्त्रों में से कोई दो-चार ही।

प्राचीन काल में गुरुकुलों में बालक को शिक्षा देते समय उनके चारित्र विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता था पर आज की पाठशालाओं में नैतिक शिक्षा, संस्कारों की कोई व्यवस्था नही है। फिर एक कक्षा में बालकों की संख्या इतनी अधिक होती है कि अध्यापक प्रत्येक बालक पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान नही दे सकते।

आज के इस भौतिकवादी युग में पिता भी अपने कार्यो में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें भी अपने बच्चों की शिक्षा, संस्कारों की ओर ध्यान देने का अवकाश ही नहीं मिलता। अतः आज माँ पर ही बच्चे के चरित्र-निर्माण की पूरी जिम्मेदारी आ पड़ी है। वही अपने पुत्र की माँ, मित्र और शिक्षिका है। इसलिए जहाँ वह अपने बच्चे को माँ का ममत्व दे वहाँ मित्र का सहयोग और शिक्षिका का निर्देश भी दे। माँ अपने बच्चे को प्यार करे पर इतना अधिक नही कि वह आलसी, निकम्मा और जिद्दी बन जाय। बचपन में बच्चे का हृदय कोमल होता है, उसका मस्तिष्क अपरिपक्व होता है। वह यह निर्णय नहीं कर पाता है कि कौनसी बात अच्छी है और कौनसी बुरी ?

बहुत सी मातायें बचपन में प्यार से बच्चे को बाजारू मिठाइयाँ, चाट, पकौड़ी आदि खाने के लिये पैसे दे-देकर उन्हें प्रोत्साहित करती रहती हैं। बचपन में बच्चा बड़ा प्रसन्न होता है। वह सोचता है कि माँ कितनी अच्छी है. हमें बहुत प्यार करती है। चीजें खाने के लिये पैसे देती हैं। बच्चे बाजार जाकर सड़क पर खड़े होकर बिना ढंकी, खुली पड़ी चाट, छोले, पकौड़े आदि स्वयं भी खाते हैं और मित्रों को भी खिलाते हैं। यही आदत धीरे-धीरे चटोरेपन की पड़ जाती है। जब बच्चे को घर से पैसे मिलने बन्द हो जाते हैं तब वे घर से चोरी करने लग जाते हैं। चोरी भी कोई छोटी सी नहीं वरन् माताओं के जेवर तक चुरा लेते हैं। जब कभी घर में मौका नहीं मिलता तो वे पड़ौसी के घर चोरी करने में भी नही हिचकिचाते। यही आदत बढ़ते-बढ़ते उसी बालक को डाकू तक बना देती है। समाज और राष्ट्र पर इसका कितना गलत प्रभाव पड़ता है।

बचपन में बच्चे को पढ़ने के लिये पाठशाला में भेजा जाता है। वहाँ भी माता को ध्यान देने की बड़ी आवश्यकता है। उन्हें यह मालूम करना चाहिये कि बच्चा ठीक समय पर घर से पाठशाला जाता है या नही ? वह सही समय पर पाठशाला पहुँचता है या नहीं ? कहीं बीच में राह में खेलते बच्चों के साथ खेलने तो नहीं लगता ? पाठशाला में कुछ समय पढ़ता-लिखता ही है या नहीं ?

बहुत सी मातायें इन छोटी-छोटी बातों पर ध्यान नहीं देती हैं। वे बच्चे को घर से पाठशाला भेज कर निश्चिन्त हो जाती हैं। ऐसे बच्चे पाठशाला में पढ़ने से जी चुराने लगते है। वे घर से तो बस्ता लेकर समय पर निकल जाते हैं पर पाठशाला नही पहुँचते।

रास्ते मे खेलते गन्दे आवारा मित्रो के साथ मिलकर गन्दी आदतें सीखने लगते हैं। बडे होने पर ये ही आदतें और विकराल रूप धारण कर लेती हैं जिससे बालक का व्यक्तित्व अविकसित ही रह जाता है।

यह आवश्यक है कि बच्चा अपनी अपरिपक्व बुद्धि के कारण जो भी गलती करता है, माता को उन पर पूर्ण रूप से ध्यान देना चाहिये। बच्चे की गलती पर उसे कठोर दण्ड भी देना चाहिये, प्यार से समझाना भी चाहिये। यदि बचपन मे ही बच्चे की बुरी आदतें दूर नही की गइ तो वह आगे चलकर सम्पूर्ण वातावरण को विषाक्त बना देगी।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ नाना धर्म के मानने वाले लोग रहते हैं। इसलिये यहाँ की सरकार ने यह कह कर कि भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है, किसी भी पाठशाला मे धार्मिक-शिक्षण की व्यवस्था नही की। फल यह मिल रहा है कि आज का विद्यार्थी अध्यात्म को भूल चुका है। पाश्चात्य विचार धारा से प्रभावित हो वह कहता है—'खाओ, पीओ और मौज उडाओ।' दूसरो को मारकर स्वय जीओ। माम-मदिरा आदि के उपभोग की दिनो-दिन बढती हुई प्रवृत्ति मे उनकी यही धारणा है। आज के नौ-जवान स्वाध्याय करने, अध्यात्म प्रधान पुस्तकें पढने आदि की प्रवृत्ति को उपेक्षा की दृष्टि से देखकर उसका मखौल बनाते हैं। इस तरह भारत धर्म निरपेक्षता की आड मे स्वय के नैतिक धर्म, आत्म धर्म को भी भूलता जा रहा है। धर्म निरपेक्षता के पीछे जो भावना है वह धर्म से रहित होने की नही वरन्, सभी धर्मो के प्रति आदर और सम्मान की भावना बनाये रखना है। पर हमने उसे गलत समझा है। परिणामस्वरूप भारत धीरे-धीरे अपनी अध्यात्म-प्रिय सस्कृति को खोता जा रहा है। उस पर पाश्चात्य सस्कृति धीरे-धीरे हावी होती जा रही है। हम धर्म का निर्यात कर वासना का आयात करने लग गये हैं। अन्तत इसका नतीजा होगा—वही त्रास घुटन और कुण्ठा।

अत माताओ को चाहिये कि वे बालक और बालिकाओ को सुसस्कारवान बनाने के लिये उनमे सद्गुणो के प्रति रुचि का भाव भरें।

राष्ट्र का भविष्य बच्चे पर ही निर्भर करता है। आने वाले दिनो मे वही उसका भाग्य विधायक होगा। बाल्य अवस्था मानव जीवन का महत्वपूर्ण अङ्ग है। यही वह समय है जबकि बालक अपने भावी जीवन की तैयारी करता है। ऐसे समय मे माताओ को चाहिये कि वे अपने व्यस्त कार्य मे से थोडा समय निकाल कर बच्चो मे सुन्दर सस्कारो का निर्माण करें जिससे बच्चे सत्य, सदाचार, मैत्री, बन्धुता आदि मानवोचित मूल्यो का अर्जन करे। ये गुण उनकी मानवता की सच्ची कसौटी है।

परिवार से सुसस्कारो के गुण विरासत मे नही मिलने के कारण अध्यात्म प्रधान भारत देश की निर्मल लोक-गगा मे आज शिथिलता अनुशासन हीनता, स्वार्थलोलुपता और अनैतिकता की भयकर बाढ आ गई है। उसका चारित्र जल गदला गया है। अत आवश्यकता है आज की माताओ और बहनो को सुसस्कारवान बनाने की।

भावी पीढी को सुसस्कारवान बनाने के लिये समाज का ध्यान इधर गया है जिसके फलस्वरूप ग्रीष्मावकाश मे स्थान-स्थान पर

ऐसे शिविरों के आयोजन होते रहते हैं जहाँ बालकों को आध्यात्मिक और नैतिक जीवन जीने की शिक्षा दी जाती है।

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि विदुषी महासती श्री निर्मला श्री जी महाराज सा० का ध्यान बालिकाओं को सुसंस्कारवान बनाने की ओर गया है। उन्होंने गुजरात के अहमदाबाद, भावनगर, पालनपुर आदि नगरों में बहिनों के सुसंस्कारी जीवन-हेतु ग्रीष्मावकाश में ६ शिविरों के आयोजन किये। इसी क्रम में राजस्थान की राजधानी जयपुर में भी १४ मई ७२ से ११ जून ७२ तक श्री सुसंस्कार-अध्ययन सत्र शिविर का आयोजन चल रहा है। इस शिविर से कई बहिनें लाभान्वित होंगी। आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि इन प्रशिक्षित बहनों के सुन्दर नैतिक जीवन से कई परिवार सुसंस्कारित होंगे। ●
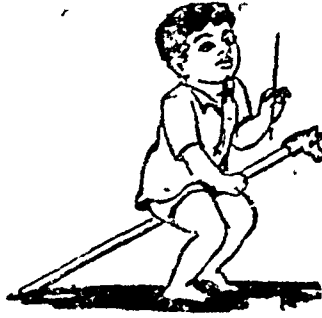
● भूल करना मनुष्य का स्वभाव है, भूल मान लेना और ऐसा आचरण करना कि दुबारा न होने पावे, यह उसका पौरुष है।

—महात्मा गांधी

● दूसरे को छोटा समझना आसान है, अपने को छोटा समझना कठिन है।

—पं० नेहरू

● शिक्षक एक मोमबत्ती के समान है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है।

—अज्ञात

● मैंने समय को नष्ट किया है, अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।

—शेक्सपियर

शिविर की बालिकायें जल-पान करती हुई ।

नारी तीर्थंकरों को पैदा करने वाली माता है

—ले० विदुषी श्री उज्जवल कुमारी जी

आप साध्वी रत्न परम विदुषी श्री निर्मला आजी के निर्देशन मे "श्री सस्कार अध्ययन सत्र" कर रहे हैं। साध्वीजी के यह प्रयास सराहनीय है। समाज के उत्थान के लिये ऐसे महिला शिविरों की नितात आवश्यकता है। सामाजिक विकास के लिए महिलाओ को सुशिक्षित और सस्कारी बनना यह बुनियादी कार्य है। माता शिक्षित और सस्कारी होगी तो बालक भी शिक्षित और सस्कारी बनेंगे। और इस प्रकार माता को शिक्षित बनाने से सारा समाज सस्कारी बन सकेगा। नेपोलियन बोनापार्ट की अनुभव वाणी है कि—"एक माता सौ शिक्षक का काम करती है।"

नारी मे शक्ति ठूस ठूस कर भरी हुई है। उसे जागृत करने की जरूरत है। भारत की नारी तप और त्याग की सजीव मूर्ति है। शाति और सयम की जीवित प्रतिमा है। वह अधकार से घिरे ससार मे मानवता की जगमगाती तारिका है। उसके मन के कण कण में क्षमा, दया, करुणा, सहनशीलता और प्रेम का समुद्र भरा पड़ा है। वह काटे बिछाने वाले के लिये फूल बिछाती है।

अग्नि के दो रूप हैं। ज्वाला और ज्योति। उसी प्रकार स्त्री के भी दो रूप हैं। ज्वाला और ज्योति। ज्वाला वस्तु को जला देती है तब ज्योति प्रकाश फैला देती है। नारी को ज्वाला बनकर विश्व मे फैलते हुए विषय, विलास और विकार के कचरे को जलाकर साफ करना है। तो दूसरी ओर ज्योति बनकर अपने घर और परिवार से लेकर सारे विश्व में प्रेम का प्रकाश फैलाना है।

ससार में सर्वत्र नारी पूजी जाती है। विद्या की प्राप्ति के लिए मनुष्य सरस्वती की पूजा करता है। बृहस्पति की नही। सपत्ति की प्राप्ति के लिए लक्ष्मीजी की पूजा होती है। विष्णुजी की नही। शक्ति के लिए काली या दुर्गा की पूजा का विधान मिलता है किसी देव की पूजा का नही। विद्या सपत्ति और शक्ति स्त्री पूजा से ही मिलती है। पशुओ मे भी गाय पूजी जाती है। बैल नही। कारण गाय मे तेंतीस कोटी देवो का अस्तित्व माना जाता है। इस प्रकार जैसे देवताओ मे और पशुओ मे स्त्री पूजी जाती है वैसे मनुष्यो मे भी क्या स्त्री पूजा नही होनी चाहिये?

महापुरुषो के नाम देखेंगे तो उसमे भी प्रथम स्त्रियो के ही नाम पायेंगे। सीता-राम राधा-कृष्ण, गौरी-शकर इन सब नामो मे स्त्री का नाम ही प्रथम है। माता-पिता शब्द मे भी पहले माता का नाम आता है फिर पिता का। कोई भी पिता माता ऐसा नही बोलता। इससे प्रतीत होता है कि सर्वत्र नारी का ही प्रथम स्थान है। हमारे

कवि भी कह गये है कि—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।"

"जहां स्त्री पूजनीय मानी जाती है वहां देवता भी क्रीडा करते हैं ।" इसलिये घर में और समाज में सर्वत्र स्त्री का सम्मान होना चाहिये ।

स्त्री को अबला कहते हैं परन्तु वास्तव में स्त्री अबला नहीं सबला है । इसके कई उदाहरण इतिहास में मिलते हैं और वर्तमान में इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमारी इंदिराजी हैं । इंदिराजी ने बंगला को जुल्मों में से मुक्त करके आजाद बनाया और सारे विश्व में भारत की शान बढ़ा दी । इसी प्रसंग से भारत विश्व के अन्य महान देशों के गिनती में आ गया ।

नारी स्नेह, सेवा और सहिष्णुता की मूर्ति है । वह निराश हृदय में आशा प्रज्वलित करती है । वह निरसता में भी सरसता पैदा कर सकती है । स्त्री थके हुए मनुष्यों का विश्राम स्थल और जख्मी हृदय की संजीवनी है । एक बार भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लालजी नेहरू ने भी महिला सभा में भाषण देते हुए कहा था कि- "हिन्द के जख्मी हृदय का इलाज स्त्रियाँ ही कर सकती है ।" शरीर के उपरी घाव तो डाक्टर मिटा सकते हैं ।

विभक्त दिल को स्त्रियाँ ही संयुक्त सकती है । विभक्त हृदयों को जोड़ने के स्त्री यह सिमेंट का काम करती है । के सहयोग के बिना पुरुष अपूर्ण हैं । कर्मरथ का एक पहिया है । जैसे एक से गाड़ी नहीं चल सकती है वैसे ही बिना अकेला पुरुष कोई कार्य नहीं सकता है । स्त्री में से अज्ञान, आलस ईर्ष्या ये त्री (तीन) निकल जाने से स्त्री याने शोभा और लक्ष्मी बन जाती है । और मैत्रेयी जैसी परम विदुषी पास पुरुष भी ज्ञान प्राप्ति के लिये जाते

आजकल समाज में स्त्री की हो रही है । आज की कहावत बन कि- पत्नी पर्स है, माता नर्स है औ कर्स हैं । यह स्त्री जाति की विडंबना स्त्री एक शक्ति है । स्त्री जगदंबा है । ही तीर्थंकरों को पैदा करने वाली मा प्रेम यह स्त्रियों का मुख्य गुण है । virtue of women.

इस शिविर में दाखिल होने अपने ज्ञान और प्रेम का विकास पृथ्वी पर स्वर्ग का सृजन करें और रत्न श्री निर्मला श्रीजी के प्रयास को बनावें यही शुभ कामना है ।

धार्मिक शिक्षा शिविर की उपयोगिता एवं महत्व

लेखक— अगरचन्द नाहटा

वर्तमान शिक्षा-पद्धति मे धार्मिक शिक्षा को स्थान नही दिया जाता इसी का परिणाम है कि ग्राज के शिक्षित विद्यार्थियो ग्रौर व्यक्तियो मे न तो विनय, ग्रनुशासन पाया जाता है न ही सस्कार ही। इसी से वे तोड-फोड ग्रौर हडताल ग्रादि मे विशेष भाग लेते है ग्रौर कही-कहीं तो ग्रपने गुरुजनो को मार-पीट भी देते हैं। पुलिस ग्रौर सरकार भी विद्यार्थियो से दवी व डरती रहती है फलत उनकी ऐसी विध्वशात्मक प्रवृत्तियाँ बढती जाती है। ग्रधिकारियो एव सरकार को उनकी ग्रनुचित माँगो को स्वीकार करना पडता है, यह किसी भी देश के लिए शोभाजनक नही है ग्रत ग्रावश्यकता है—नैतिक ग्रौर धार्मिक शिक्षण को समुचित स्थान दिया जाय। उसकी परिक्षाग्रो के नम्बर ग्रन्य विषयो की परीक्षा के साथ जुडे या उत्तीर्ण-ग्रनुत्तीर्ण धार्मिक ग्रौर नैतिक शिक्षा के परिणाम ग्रन्य विषयो की परीक्षा-परिणामो की तरह मान्य हो। जहाँ तक ऐसी व्यवस्था विद्यालय मे नही हो पाती, वहाँ तक विद्यालयो की लम्बी छुट्टियो मे धार्मिक शिक्षण शिविर का ग्रायोजन ग्रवश्य ही करना चाहिए। जिससे नैतिक ग्रौर धार्मिक विषयो की जानकारी छात्र-छात्राग्रो को मिल सके तथा उनका जीवन सस्कारित वन सके। प्रत्येक विद्यालय के ग्रधिकारियो का यह ग्रावश्यक कर्त्तव्य है कि वे ग्रन्य विषयो को पढाने के लिए जव हजारो-लाखो रुपये खर्च करते हैं तो दीर्घकालीन छुट्टियो मे धार्मिक शिक्षण शिविर का ग्रायोजन भी ग्रवश्य करें एव शिक्षा की एक वडी कमी की पूर्ति करें। वास्तव मे नीति ग्रौर धर्म के सस्कारो के विना जीवन सार्थक हो ही नही सकता।

विद्यालयो के ग्रधिकारी इस ग्रोर ध्यान नही दें तो छात्र-छात्राग्रो के ग्रभिभावको ग्रौर हितैषी तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताग्रो को धार्मिक-शिक्षण-शिविर का ग्रायोजन ग्रवश्य ही करना चाहिए। इसकी उपयोगिता तो सर्व विदित है ही। जीवन मे ऐसी शिक्षा का वडा भारी महत्व है। ग्राज के वालक ही कल के नेता कर्णधार वनेंगे ग्रत वाल्यकाल मे ज्ञान, चरित्र व सस्कार ग्रच्छे दिये जाय उसी से भावी व सारा जीवन उच्च ग्रौर ग्रादर्श वनेगा लम्वी छुट्टियो के समय का जो दुरुपयोग हो रहा है, उसका सदुपयोग होने पर समय, शक्ति का सत् परिणाम ग्रवश्य सामने ग्रायेगा। ●

संस्कार शिविरों की उपयोगिता

डा० नरेन्द्र भानावत,
एम. ए., पी-एच.डी. हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

मानव सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है। उसमें हिताहित सोचने का विवेक है। उसे मृत्यु का बोध है। वह जानता है कि एक दिन सबको मरना है। दूसरे प्राणियों को यह बोध नहीं होता। इसलिए मानव अपने जीवन को सार्थक बनाकर मृत्यु को गौरवान्वित कर सकता है। प्रश्न यह है कि जीवन की सार्थकता किसमें है ? जड़वादी विचारक भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति और बाह्य इन्द्रियों के विषय-सेवन में जीवन की सार्थकता मान बैठे है। पर यह सही जीवन-दृष्टि नही है। क्योंकि सुख या शान्ति जड़ पदार्थो मे नही है। वह सुख सच्चा सुख नही है जो शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। सच्चे सुख का स्रोत बाहर नहीं है, जड़ पदार्थ नहीं है। उसका अखण्ड स्रोत आत्मा है। आत्मा मे ही अनन्त शक्ति निहित है, आत्मा में ही प्रकाश का अनन्त तेज हैं। उस पर अज्ञान का, कर्म का आवरण पड़ा हुआ है। इस कारण हम उसकी शक्ति का अनुभव नही कर पाते है। आत्मा की शक्ति का अनुभव किये बिना, हम जो कुछ जड़ पदार्थ एकत्र करते रहेंगे वे हमे सुख के स्थान पर दुःख, संत्रास बेचैनी और द्वन्द्व के संसार में ही भटकायेंगे।

इस आत्म-ज्ञान या तत्त्व-ज्ञान के अभाव के कारण ही आज संसार में हिंसा, शोषण, उत्पीड़न और पाशविक अत्याचारों का जोर है, जीवन में शांति का अभाव है, परिवार मे घुटन और बिखराव है। राजनीतिक जीवन क्षुद्र स्वार्थो से विपाक्त है। धर्म, मजहब और सम्प्रदाय में कैद है। शिक्षा जैसा पवित्र भाग हड़ताल, तोड़फोड़ और आरोप-प्रत्यारोपों से गंदलाया हुआ है। सब ओर अशांति, हाहाकार, मांगों के लिए हिंसक प्रदर्शन और विध्वसात्मक अन्य कार्यवाहियाँ !

इन सारे रोगों की जड़ नैतिक शक्ति की कमी है। सदाचार का अभाव है। इस कमी को दूर करने का दायित्व किसी भी राष्ट्र की शिक्षा-व्यवस्था का होता है। पर दुर्भाग्य से हमारे देश में शिक्षा व्यवस्था ने यह दायित्व अपने ऊपर नहीं लिया। उसने शिक्षा के नाम पर केवल ज्ञान का आकलन करना सिखलाया, उसे ग्रहण कर जीवन में उतारना नही। फलस्वरूप ज्ञान दृष्टिहीन बन गया, लक्ष्यहीन बन गया। वह निःशंक नही बन सका। विचार आचार के साथ मेल न पा सके। कथनी और करनी में अन्तर बढ़ता गया। दिमाग का आकार फैलता गया और हृदय का रस सूखता गया। हृदय सिकुड़कर कर कमजोर हो गया। उसकी तेजस्विता नष्ट हो गई।

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता उस शिक्षा की है जो हमारी सुषुप्त आत्म-शक्ति को जगा सके, जो हमारी नयी पीढ़ी मे सद्गुणों का विकास कर सके, जो हममें भाईचारा, सर्वधर्म समभाव और सर्वजाति समभाव जैसी विश्वजनीय भावनाओं का उद्रेक कर सके। जब तक व्यावहारिक शिक्षण के साथ नैतिक शिक्षण की यह कार्य पद्धति नहीं जुड़ जाती तब तक ग्रीष्मकालीन संस्कार शिविर इस दिशा मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं।

ग्रीष्मकालीन अवकाश का औसत भारतीय विद्यार्थी 'फिजूल का समय' समझता है। वह उसे ताश खेलने, जुआ खेलने, दिन भर सोने और निरुद्देश्य भटकने मे व्यतीत कर देता है। वह उसे आने वाले नये सत्र को 'तैयारी का काल' नही मानता। बहुत हुआ तो वह मनोरजन के लिए तथाकथित क्लबो का सदस्य बन जाता है। यदि ग्रीष्मकालीन अवकाश का उपयोग योजनाबद्ध तरीके से सस्कार-निर्माण मे किया जा सके तो वैचारिक क्राति और मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया मे बडी सहायता मिल सकती है।

पिछले चार पाच वर्षों मे जन समाज मे ऐसे शिक्षण शिविरो के आयोजन का क्रम चला है। इनमें सामान्यत छात्र ही सम्मिलित होते रहे हैं। छात्राओ के लिए भी ऐसे शिविर चलें, इसकी बडी आवश्यकता थी। विदुषी साध्वी श्रीनिर्मला जी की दृष्टि इधर गई और उन्होने गुजरात मे छात्राओ के लिए ऐसे ५–६ शिविर आयोजित कराये। इस बार राजस्थान मे जयपुर मे उनके सानिध्य मे छात्राओं का यह शिविर 14 मई से 11 जून तक आयोजित किया गया।

मुझे इस शिविर को निकट से देखने का सौभाग्य मिला। इसमे स्कूल और कालेज की शताधिक स्थानीय एव गुजरात प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रो से आई हुई छात्राए सम्मिलित हुई। शिविर मे तत्त्वज्ञान के साथ साथ योगाभ्यास, सगीत, लेखन-कला, वक्तृत्व-कला आदि के विकास के लिए भी पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया। एक निश्चित पाठ्यक्रम के अनुसार दोनो स्तरो की छात्राओ को साध्वी श्री निमलाजी द्वारा प्रतिदिन नियमित रूप से अध्यात्म-शिक्षण मिलता रहा। शिविर के अन्त मे लिखित मौखिक परीक्षण भी हुआ और आवश्यक पुरस्कार भी प्रदान किये गये। सुविधानुसार विशिष्ट सत-सतियो एव विद्वानो के व्याख्यान भी आयोजित कराये गये। छात्राओ की अनुशासनबद्ध नियमित जीवन चर्या और परस्पर मेल-जोल की दृष्टि मे भी शिविर पूर्णत सफल रहा।

ग्रीष्मकालीन इन सस्कार शिविरो को और अधिक व्यवस्थित, शक्तिमान और स्फूर्तिशील बनाने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओ की ओर शिविर-आयोजको का विशेष ध्यान जाना अपेक्षित है—

१ शिविरो का आयोजन करते समय एक दीर्घसूत्री योजना अवश्य मस्तिष्क मे रहे। भौतिक प्रगति के लक्ष्यो की पूर्ति के लिए जैसे पचवर्षीय योजनाए बनाई जाती हैं उसी तरह नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षण के लिए भी निश्चित वर्ष क्रम का [पचसालाना या जैसी अनुकूलता हो] पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाना चाहिये।

२ पाठ्यक्रम का निर्धारण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि वह सम्प्रदायगत या दलगत न बन जाय। उसमे ऐसे तात्विक सिद्धातो को ही सम्मिलित किया जाय जो व्यक्ति के दृष्टिकोण को उदार, नैतिक एव आध्यात्मिक अनुभूतिप्रवण बनायें। उसमे मानवीय, राष्ट्रीय एव सौमनस्य की भावना को प्रमुखता मिलनी चाहिए। ससार के महान् अध्यात्मिक पुरुषो की जीवनियाँ, उनके उपदेश, नीतिविषयक सुभाषितो के तुलनात्मक एव सद्भावनापूर्ण अध्ययन का समावेश भी बडा उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

३ शिविरो में सम्मिलित होने वाले छात्र-छात्राओ को ऐसे अवसर सुलभ कराये जायें कि वे लगातार तीन-चार शिविरो मे सम्मिलित होकर अपना निर्धारित पाठ्यक्रम पूर्ण कर सकें। इस लक्ष्य की पूर्ति मे पत्राचार पाठ्यक्रम बडा सहायक सिद्ध हो सकता है। शिविरार्थियो से वर्ष भर सपर्क बना रहे। इसके लिए आवश्यक है कि उन्हें पत्राचार के रूप मे कुछ नैतिक-शिक्षण के पाठ भेजे जायें। उनके साथ अभ्यास प्रश्न भी हों जिन्हे हल करके वे परीक्षण के लिए भेजे। परीक्षण करने के पश्चात् आवश्यक निर्देश के साथ वे पुन शिविरार्थियो को लौटाये जायें। यह क्रम चलता रहना चाहिए।

४. शिविर समिति का अपना एक समृद्ध पुस्तकालय एवं वाचनालय भी होना चाहिए जिसमें जीवन को प्रेरणा देने वाली श्रेष्ठ पुस्तकें संग्रहीत हों। शिविर-स्थल पर शिविरार्थी उन पुस्तकों का उपयोग कर सकें, ऐसी व्यवस्था हो। इससे शिविरार्थियों में स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति का विकास होगा। इसके लिए प्रतिदिन एक घंटे का समय भी निर्धारित किया जा सकता है।

५. शिविरार्थियों में लेखन एवं वयक्तित्व शक्ति का विकास हो, इस ओर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके लिए विचार गोष्ठी एवं ज्ञान चर्चा के लिए पृथक् समय निर्धारित किया जाना चाहिए। यदि अनुकूलता हो तो 'शिविर पत्रिका' का प्रकाशन भी किया जा सकता है।

अन्त में, यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि इन शिविरो की उपयोगिता के कई पहलू है। ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग होने के साथ-साथ, शिविरार्थियों को सामूहिक जीवन जीने की पद्धति का विशेष अवसर मिलता है जिससे उनमें सामाजिक सहकार, धार्मिक वात्सल्य और वैचारिक औदार्य का भाव विकासित होता है और धीरे-धीरे एक ऐसे युवा युवती सगठन की संभावना के द्वार खुलते जाते है जो आगे चलकर परिवर्तनशील समाज के लिए अदम्य एव अखूट सर्जनात्मक शक्ति के स्रोत सिद्ध हो सकते हैं।

सस्कार - अध्ययन - सत्र की आवश्यकता

सा निर्मलाश्री M A, साहित्यरत्न, भाषारत्न

विश्व में अज्ञान, यह जीव का बहुत ही बडा दोष है। कारण उससे आवृत्त हुआ जीव न अपने हित को जानता है न अहित को। अत अज्ञान अधकार हैं और ज्ञान प्रकाश है। यह ऐसा प्रकाश है जिसे तेल और वाती की आवश्यकता नही है। ज्ञान का प्रकाश सूर्य के प्रकाश की अपक्षा श्रेष्ठ है। कारण सूर्य तो केवल दिन मे ही मार्ग-दशक बनता है, जब ज्ञान दिन और रात एक सदृश मार्ग दशक बनता है।

इस ससार के प्लेटफार्म पर आये हुए जिस व्यक्ति के हृदय मे यदि ज्ञान का प्रदीप प्रज्वलित नही है, वह अपने लक्ष्य तक पहुँच नही सकता। शास्त्र में ज्ञान की सर्वोत्तम महिमा बतलाते हुए लिखा है कि "पढम नाण तओदया" साधना के क्षेत्र मे आचरण के साथ ज्ञान की सवप्रथम आवश्यकता है।

केवल आध्यात्मिक क्षेत्र मे ही नही किन्तु व्यावहारिक क्षेत्र मे भी ज्ञान का अपूर्व महत्व दीख पडता हैं। आज का युग यदि कहा जाय तो, ज्ञान का ही युग है। व्यावहारिक शिक्षण की आवश्यकता और उपयोगिता तो आज जीवन के हर एक क्षेत्र मे देखने मे आती है। व्यापार करने के लिये भी सर्वप्रथम व्यापार का ज्ञान आवश्यक है। कपडे के व्यापारी के पास गज और कैंची है परन्तु कपडे के मूल्य का पता नही है तो वह व्यापारी सफल नही हो सकता। इसी तरह जब तक इन्द्रिय धम और आत्मधम का ज्ञान नही है तब तक साधना का रस प्राप्त नही कर सकता।

"सा विद्या या विमुक्तये" विद्या वह है जो व्यक्ति को सम्यग् दिशा मे प्रेरित करें। आजीविका बना लेना, धन, यश व अधिकार पा लेना विद्या का लक्ष्य नही होता। विद्या का लक्ष्य तो आत्मीय गुणो का विकास ही हैं।

हमारे शिक्षण-शास्त्रियो ने जीवन में जागृति लाने वाले आध्यात्मिक नैतिक शिक्षण को शिक्षा मे स्थान ही नही दिया। और उस शिक्षण के अभाव मे विद्यार्थियो मे सस्कारहीनता दृष्टिगोचर हो, स्वाभाविक है। आज की शिक्षा-पद्धति मे भौतिक दृष्टिकोण का ही बोलबाला हैं। प्रस्तुत वातावरण मे आध्यात्मिक विकास का नारा बीते युग की बात जैसा लगता है। आज का भारतीय विद्यार्थी जानता है कि डार्विन का विकासवाद और कार्लमार्क्स का द्वद्वात्मक भौतिकवाद क्या है? पर वह यह नही जानता कि भगवान महावीर का स्याद्वाद और श्री शकर का अद्वैत क्या है?

अर्वाचीन शिक्षण मानव को वकील, डॉक्टर, शिक्षक आदि बनाता ह किन्तु दु ख की बात है कि मानव को मानव नही बनाता। पाश्चात्य शिक्षण का अपने पर ऐसा प्रभाव पडा कि न हम पूरे अग्रेज हो सके न पूणत भारतीय। और शरीर अपना भारतीय ही रहा, कारण उसे हम युरोपियन जैसा गौरवर्ण न बना पाय, और स्नो पावडर मे ऐसी शक्ति नही कि जो हमारे शरीर को युरोपीयन जैसा बना दे। किन्तु हा, अपनी वेशभूषा तो अवश्य युरोपीयन बन चुकी है।

आज हमारे जीवन का ध्येय ही बदल चुका है। जीवन में जहां समता, सुशीलता और सदाचार की आवश्यकता है वहां मात्र अकेली साक्षरता रही है। साक्षरता आवश्यक है किन्तु सदाचारादि सद्‌गुणरहित साक्षरता एक विडम्बना है। दुनियां मे आज विलासिता बढ़ रही है और समाज मे त्याग के वदले में विलास को प्रतिष्ठा मिल रही है।

आज का युग धार्मिक और व्यावहारिक शिक्षण के समन्वय का युग है। कुछ वर्ष पूर्व विद्यार्थी जगत् में शिक्षा और संयम के अभाव को देखकर सरकार ने उन परिस्थितियों का अभ्यास करने के लिये एक कमीशन नियुक्त किया। कमीशन ने संशोधन करके जो रिपोर्ट तैयार की उसमें मुख्य वात यह थी कि कोलेजियन विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा के साथ साथ आध्यात्मिक शिक्षण भी देना चाहिये। ऐसा होने पर विद्यार्थी जगत में आज जो शिष्ठता, संस्कारिता और संयमपालन का अभाव देखने मे आता है वह दूर होगा।

आज की शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन हो यह एक सर्वसम्मत तथ्य बन चुका है। पर उस परिवर्तन की रूपरेखा क्या हो ? यह अभी तक स्पष्ट नही हो पाया है।

प्राचीन शिक्षण–प्रणाली में अनुशासन भंग एक अपराध समझा जाता था। विद्यार्थी को प्रारम्भ से ही अनुशासन वहन की शिक्षा दी जाती थी। आज के विद्यार्थियों की दशा उपरोक्त विधान के सर्वथा प्रतिकूल है। यहां अनुशासन, संयम और विनयशीलता का स्थान उद्दण्डता, आवेश और अदूरदर्शिता ने ले लिया है।

आजकल पाठशाला में बालक बालिकाओ को धार्मिक सूत्र सिखाया जाता है। अतः बालकों को आवश्यक धार्मिक शिक्षा मिल जाती है ऐसा संतोष मान लेना बराबर नहीं है। हाई स्कूल और कालेजों में पढ़ते हुए विद्यार्थियों को धार्मिक शिक्षा सम्बन्ध में संतोष दे सके ऐसे शिक्षकों की अपने यहां कमी है। और उस कमी के कारण बालकों धार्मिक–अभ्यास में रस नहीं ले सकते। वड़ी उम्र के बालकों को जब पाठशाला में जाने को कहा जाता है। तब वे व्यावहारिक शिक्षा के बोझ की बाते रजु करते है माता-पिता भी वालकों की बात के साथ सहमत हो जाते है। वास्तविक परिस्थिति यह है कि आज के माता-पिता को उनके व्यस्त जीवन के कारण, वालकों पाठशाला में क्यों नहीं जाते ? उन्हें धार्मिक अभ्यास मे रूचि क्यों नहीं है ? इन कारणों की गहराई मे जाने का अवकाश ही नहीं है। अतः परिस्थितियाँ अच्छी होने के बजाय बिगड़ती जाती है।

सन् ६६ से मेरे ग्रीष्मकालीन कन्या शिविर के अनुभव के आधार पर कह सकती हूँ कि 'संस्कार–अध्ययन-सत्र' (शिविर) आज की परिस्थितियों में विद्यार्थियों के लिये वरदान स्वरूप है। सन् ७० में सी० एन० विद्यालय अहमदाबाद में जो शिविर हुई थी उसमें कोलेजीयन और हाईस्कूल वर्ग की प्राय; २०० कन्याओं ने भाग लिया था। इस सत्र में सम्यज्ञान की उपासना के साथ–साथ कन्याओं का तदनुकूल सम्यक् आचरण "ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः" की उक्ति का परिचायक हो जाता था। उषा के आगमन पूर्व ही बालाओं का उठ जाना, सामूहिक प्रार्थना, ध्यान और सामायिक, पुनः सम्मिलित रूप से देवदर्शन, गुरुवंदन, नौकारशी पूजा आदि से निवृत्त होकर सफेद ड्रेस मे सत्र में सामूहिक रूप से गुरुवर के पास अध्ययन करना, और अन्य समय में अपना वांचन, भोजन और प्रतिक्रमण आदि कार्यक्रम कन्याओ के पारस्परिक स्नेह व श्रद्धा का द्योतक था। एक मास तक भौतिक और कौटुम्बिक वातावरण से दूर होकर गुरुवर के सानिव्य में रहकर जितना संस्कार पाया जाता है उतना केवल घर रहकर तीन घंटे सत्र में आने पर नही प्राप्त हो सकता।

गुजरात मे शिविरों की सफलता को देखते हुए इस वर्ष राजस्थान के पाटनगर जयपुर शहर के

प्राङ्गण मे कार्यकर्तागण ने एक नूतन प्रयोग के रूप मे कन्याओ के लिये 'सस्कार–अध्ययन-सत्र' का आयोजन किया। गुजरात आदि से महाविद्यालय (कोलेजियन) और माध्यमिक विद्यालय की कई कन्याए सत्र मे भाग लेने के लिये आयी। और एम० ए० से लेकर माध्यमिक विद्यालय की स्थानीय कन्याओ ने भी अच्छी सख्या मे भाग लिया। १४ मई से आत्मानन्द सभा भवन मे सत्र का उद्घाटन समारोह हुआ। और १५ मई से वीर बालिका विद्यालय मे १२५ से अधिक सख्या मे कन्याओ का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। बाहर से आयी हुई कन्याओ का निवासस्थान, भोजनादि का प्रबन्ध सत्र–आयोजन समिति की ओर से वीर बालिका विद्यालय मे रहा।

उषा के आगमन पूर्व ही बाहर से आयी हुई, क्या छोटी क्या बडी सभी बालिकाए उठ जाती हैं। शारीरिक बाधाए निपटाकर शीघ्र ही समभाव स्वरूप सामायिक करती है। देवदर्शन, गुरुवदन पूजा और नोकारशी आदि नित्य प्रवृत्ति से निवृत्त होकर प्रात साढे नौ बजते ही सफेद परिधान गणवेश मे स्थानीय अस्थानीय जैन जैनेतर आदि सभी कन्याए सत्र मे अध्ययनार्थ आ जाती हैं।

सब कन्याओ द्वारा एक साथ प्रार्थना होती है। उसके पश्चात् विद्यार्थिनियाँ दो वर्गो मे विभक्त हो जाती है। S S C से M A तक की कन्याए एक वर्ग म बैठती हैं और अन्य माध्यमिक विद्यालय की दूसरे वर्ग मे। दोनो ही वर्गो म मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से कन्याओ की कामना के अनुकूल अध्ययन प्रारम्भ होता है। कोलेजियन वर्ग का प्रथम पिरीयड तत्वज्ञान से प्रारम्भ होता है। क्योकि मानव उन चिरतन प्रश्नो के विषय मे जिज्ञासु है कि विश्व क्या है? आत्मा क्या है? मानव क्या है? जड और चेतन कौन है? इत्यादि अनेक प्रश्नो का समाधान होता है। जब मानव अपने अस्तित्व का सही ज्ञान पा जाता है, तब सहज ही जिज्ञासा हो जाती है कि जीवन का उद्देश्य क्या है? हमे कैसे जीना चाहिये, हमारा कर्तव्य क्या है? इन्सानियत क्या है? और उसे प्राप्त करने के लिये कौन से सद्गुणों की आवश्यकता है? कारण प्राचीन जैनाचार्यो ने सबसे पहले मानव को मानव बनने की शिक्षा दी है।

सद्गुणो के आचरण से मन और जीवन विशुद्ध बनता है। वे ऐसे सब सामान्य गुण है कि उनके अभाव मे धर्म नही टिक सकता। उनका विकास हुए बिना धर्म का विकास नही हो सकता। वे गुण जीवन की भूमि को तैयार करने वाले हैं। अत दूसरे पिरीयड मे सविस्तृत मानवीय सद्गुणों का शिक्षण दिया जाता है।

सत्र के तीसरे पिरीयड मे चरित्र, कथाए, क्रियाओ का उद्देश्य, सूत्र ज्ञान, ध्यान आसन, इतिहास, भक्ष्याभक्ष्य, पद, स्तवन, स्वाध्याय आदि अनेक विध आवश्यक ज्ञान सविस्तृत दिया जाता है। ये सत्र पिरीयड सामायिक पूर्वक होते हैं। ग्यारह से १२ तक सगीत स्पर्धा मे भाग लेने वाली कन्याओ को आनदघनजी महाराज आदि के प्राचीन पदो की आशावरी, भैरवी, मालकोश आदि रागो मे पभाकरन द्वारा ट्रेनिंग दी जाती है। सत्र मे तत्त्वज्ञान, सगीतस्पर्धा, वक्तृत्वस्पर्धा आदि की परीक्षाए होती हैं। और उसमे उत्तीर्ण होने वाली बहनो को सत्र पूर्णाहुति-समारोह के अवसर पर सम्मानपूर्वक उत्साहवर्धक इनाम-वितरण दिया जाता है। सत्र के कुछ ऐसे जीवनोपयोगी नियम है जिनका पालन सत्र की विद्यार्थीनियाँ सहज भाव से करती है।

सत्र में समय समय पर पू साधु-साध्वीगण और विद्वद्गण पधारते हैं और कन्याओ के जीवन उपयोगी शिक्षाए देते हैं। सत्र मे श्री पद्मदशा श्रीजी सा पूर्णदशा श्रीजी, सा दिव्ययशा श्रीजी कु पन्ना शाह आदि का अपूर्व सहयोग रहता है।

एक विचारक ने कहा है—The great aim of education is not knowledge but action—शिक्षण लेने का मुख्य हेतु केवल ज्ञान-प्राप्ति नही है किन्तु आचरण भी है। अतः जो लड़कियां कभी एक सामायिक नहीं करती —वे सत्र में आने पर प्रतिदिन छः से सात सामायिक पूर्वक ज्ञानार्जन कर के शान्ति लाभ प्राप्त करती है। अतः ज्ञात होता है कि सत्सगति का कितना महत्व है ?

सत्र में स्थानीय, अस्थानीय जैन-जैनेतर कन्याओं का परस्पर स्नेह, सद्भाव, विचार विनिमय, शान्ति-पूर्वक सहयोग सह अस्तित्व देखने से भूतकालीन आश्रमवासी विद्यार्थियों का स्मरण हो जाता है।

राजस्थान के प्राङ्गण में कन्या-शिविर का यह पहला प्रयोग आये हुए विद्वानो के अभिप्राय से और मेरे अनुभव से सत्र-आयोजन समिति के तन-मन-धन के सहकार के कारण सफल माना जाता है।

आज के युग मे कन्या-शिविरों की अत्यधिक आवश्यकता है। आज की कन्या भावी माता है। माता सुसंस्कारित होगी तब उसका घर संस्कार से सुवासित बनेगा। संस्कारी एक कन्या सहस्र पिता का कार्य कर सकती है।

यदि कन्याओं को संस्कार धन देकर सुसंस्कारित बनाना चाहते है तो ग्रीष्मावकाश में होने वाले 'सस्कार-अध्ययन-सत्र' में आपका तन-मन-धन से सहयोग अपेक्षित है। क्योंकि सम्यक् ज्ञान के सदृश पवित्र कोई वस्तु नहीं है। ज्ञान की सेवा यह सच्ची सेवा है।

शिविर का महत्त्व व हमारे जीवन मे इसकी उपयोगिता

—पुष्पा सुराना B A

वतमान युग मे शिक्षा को काफी महत्व दिया जा रहा है। फलस्वरूप बालक व बालिकायें करीब करीब सभी अध्ययन के लिए स्कूल व कॉलिज जाते है। और उनमे से बहुत मे तो B A व M A तक की शिक्षा पाते है। लेकिन इतनी शिक्षत होन पर भी उनकी आत्मा मे शान्ती नही पाते। वे बचन से व खोये २ से रहते है। क्योकि आज की शिक्षा प्रणाली दोष–पूर्ण व अधूरी है। इसका एक मात्र कारण यही हैं कि आज शिक्षा मे अध्यात्मिक शिक्षा व धम का तो नाम ही नही लिया जाता। जिससे विद्यार्थियो मे धम के प्रति आस्था घटती है, व जिसके परिणाम स्वरूप वह अपन जीवन म अशान्ति का अनुभव करते है। और यह अशान्ति बिना धार्मिक शिक्षा के मिट नही सकती।

अत इसलिय इस आधुनिक युग मे ऐसे शिविर का महत्व बहुत ही अधिक हो जाता है। जिसमे हम अध्यात्मिक शिक्षा दी जाती है। शिक्षा भी ऐसी दी जाती जिसका कि व्यवहारिक जीवन मे हम उपयोग म ला सके। अत हमेशा एसे शिविर का लगना अत्यन्त आवश्यक है।

इस वष जो धार्मिक अध्ययन सस्कार सत्र ग्रीष्म अवकाश मे लगा, इसका हमारे दनिक जीवन मे बडा महत्वपूर्ण उपयोग सिद्ध हुआ। जब मैंने यह सुना कि इस वर्ष हमारी पूजनीय महाराज साहिब निमला श्री जी साहित्य रत्न M A इस सत्र को लगा रही है तो मेरा रोम रोम प्रफुल्लित हो गया। व मुझे ऐसा लगा तुरत जाऊं व मेरा नाम लिखाऊं। अत मैंने शिविर मे अपना नाम लिखवा दिया। व मुझे अपार शान्ति मिली। क्योंकि मैं भी तो उन अशान्त विद्यार्थियो मे से एक विद्यार्थी हूँ। अत मुझे शिविर मे जाने से अनेक लाभ प्राप्त हुए व आनन्द आया।

इस सस्कार अध्ययन सत्र मे न केवल धार्मिक शिक्षा दी जाती है वरन् इन धार्मिक क्रियाओ का हम अपने दैनिक जीवन मे उपयोग किस प्रकार से लावे व हमे किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये आदि शिक्षाएँ दी जाती है।

इस सस्कार अध्ययन सत्र मे हमे तीन विषयो का अध्ययन कराया जाता है। (1) "प्रथम मानवीय सद्‌गुण" जिसका कि हमारे जीवन मे आना अत–यत आवश्यक ह। मानव जीवन की महत्ता ही गुण सम्पन्नता पर आधारित है। यदि हमारे जीवन मे इन मानवीय गुणों का अभाव है तो हमारे मे व पशु जीवन मे कोई अतर नहीं है। व हमारे जीवन का कोई महत्व नही है। अत आध्यात्मिक दृष्टिकोण से इनका बडा महत्व है। इन मानवीय सद्‌गुणों के अभाव मे बडे से बडे व्यक्ति का पतन हो जाता हे। अत हमे मानवीय सद्‌गुणो को जानना व उस तरह का आचरण करना अत्यत आवश्यक है। इन मानवीय सद्‌गुणो मे हमे यह बताया जाता है कि हमारे क्या कत्तव्य है ? इन

कर्त्तव्यों का पालन हमें करना अत्यन्त आवश्यक है। इसके द्वारा मानव जीवन सुखी बन सकता है। हमारे आठ-दोष क्या है ? उनका त्याग करना हमारे लिये अन्यन्त आवश्यक है। आठ गुण कौन से है ? जिनको कि प्रत्येक व्यक्ति को ग्रहण करना आवश्यक है। जिससे मानव जीवन शान्ति व सुख से व्यतीत हो सके। आठ साधना कौन सी है ? जिनका करना अत्यन्त आवश्यक है।

अत: स्पष्ट है कि हमे इस अध्ययन सस्कार सत्र में सबसे पहला विषय ही ऐसा है जिसका अध्ययन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिये एक महत्व-पूर्ण विषय है। जिनका यदि मानव व्यवहार में उपयोग करे तो वह सुखी हो जाए।

अत: इस शिविर के द्वारा मुझे सबसे बड़ा लाभ यही मिला कि इसके द्वारा मानवीय सद्‌गुणों का ज्ञान प्राप्त हुआ न केवल ज्ञान ही प्राप्त हुआ वरन् उनका व्यवहार में उपयोग करना भी आ गया।

(२) दूसरा विषय तत्व ज्ञान का है। जिसके द्वारा गूढ़ २ प्रश्नों के बारे में बताया जाता है। विश्व क्या है ? मानव क्या है ? आत्मा क्या है ? कर्म क्या है ? यह क्यों होते है ? पाप पुण्य क्या है ? आदि सब बातों का हल किया जाता है जिसके अध्ययन से मुझे सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि जिसके बारे में हम किसी अन्य पुस्तक में नहीं पढ़ पाये थे। उन प्रश्नों के बारे में सुना व समझा। व हमें पता चला कि हमारा जीवन क्या है ? किस कारण से हम दुखी है ? हमारी आत्मा किस प्रकार शाश्वत है ? जगत भी शाश्वत है जो अनादि काल से चला आ रहा है।

अत: इस तत्व ज्ञान के द्वारा उन प्रश्नों की जानकारी मिली जिनके बारे मे हम बिल्कुल अन-भिज्ञ थे। इससे हमे ज्ञान प्राप्त हुआ।

तीसरे विषय में हमें सूत्र ज्ञान का अध्ययन करवाया जाता है। न केवल उन सूत्र को रटाया जाता है परन्तु एक एक का भाव व अर्थ बताया जाता है।

अत: इन तीन विषयो का ज्ञान होना प्रत्येक प्राणी के लिये *अत्यन्त आवश्यक* है। जो व्यक्ति इन तीनों ही विषय (१) मानवीय सद्‌गुण (२) तत्व ज्ञान व (३) सूत्र ज्ञान से भली भाँती परिचित होते है उनका जीवन बहुत ही शान्ति पूर्ण व दूसरों के लिये भी बहुत ही कल्याणकारी हो जाता है।

(३)सूत्र ज्ञान :—सूत्र ज्ञान मे हमें हमारे सूत्र मे जो गाथाएँ आती है उनको अर्थ सहित बताया जाता है। कितने ही व्यक्ति को कठस्थ सूत्र पूर्ण रूप से याद हो जाते है परन्तु वे उनका अर्थ कभी नही जानते। परिणाम स्वरूप धार्मिक कार्य करते समय रटे रटाये सूत्र की पंक्तियें तो बोल लेते है परन्तु अर्थ व भाव न जानने से उन्हें यह पता नहीं चल पाता है कि वे क्या बोल रहे हैं ? किसकी मिच्छामी दुकड़म कर रहे है। सामयिक, प्रतिक्रमण में कई बार मिच्छामी दुकड़म तो कहते जाते है और वो ही पाप साथ के साथ करते भी जाते है क्योंकि वह उसका अर्थ व भाव नही जानते कि उन्होने अभी किसका मिच्छामी दुकड़म किया है। सूत्र का जब तक अर्थ नहीं जान लेते तब तक आत्मा को उनमें विश्वास नही होता और विश्वास नही होने के कारण इस आधुनिक युग मे युवा वर्ग धर्म से विच-लित होते जा रहे हैं। इसलिये हमारे लिये यह आवश्यक हो जाता है कि सूत्र का ज्ञान अर्थ सहित हो। *जिसका ज्ञान हमें इस संस्कार अध्ययन सत्र* में मिलता है।

अत. मुझे तो इस शिविर मे आने से बड़ा लाभ हुआ है व आशा करती हूँ व भगवान से मेरी

यही प्रार्थना है कि ऐसे शिविर हर साल ग्रीष्म अवकाश म लगा करें। ताकि हमे ज्ञान प्राप्त हो व ग्रीष्म अवकाश मे धार्मिक क्रिया व अच्छे आच-रण म बीत। अत मरा ता यह पहला ही मौका है ऐसे शिविर म जाने का। व अन्य बाहर की आई बहिनो के साथ मिलने का व उनके सस्कार व व्यवहार का भी ज्ञान प्राप्त होना है।

अत उक्त सभी बातो को देखते हुए मैं यह दावे दावे के साथ कह सकती हू कि ऐसे धार्मिक शिविरो का होना अत्यन्त आवश्यक है ताकि हम हमारे जीवन को सुधार सकें व सही ढग स आचरण करती हुई अपने सारे परिवार व देश को सुखी बना सकने में सफल हो सकें। अत ऐसे धार्मिक शिविरो का हर वप लगना अत्यन्त आवश्यक है।

आधुनिक कन्या और धर्म

—केशवलाल मो० शाह बम्बई B.A.L.L B

निलोन, टेरीलीन, डेंक्रोन, टेरीसीन, टेरीकोटन, ओरलोन, वेलवेट, आदि विविध डिजाईन रंग और फैशन वाले वेल बोटम, मेकसी, लुंगी, मीनीस्कर्ट, स्लेकस, ओलफन्ट वेलबोटम आदि आधुनिक पोषाक में सज्ज हुई आधुनिक युवती मे धर्म संस्कार हो सकते है ?

उपाश्रय के व्याख्यानों में यह वेश परिधान सबसे कड़ी निंदा के पात्र बने है। प्रवचक पू. धर्म-गुरु आधुनिक युवती को उद्‌भट्ट वेशपरिधान करने वाली मर्यादाहीन और असंयमी मानते है। खडना-त्मक दृष्टिकोण से यह बात सत्य हो फिर वात कडी आलोचना से आधुनिक युवती का परिवर्तन हो सकता है ? या उनकी उपेक्षा से कोई लाभ हो सकता है ?

स्त्री महापुरुषों की जन्म दात्री है। पुरुष के संस्कार सिंचन स्त्री के संस्कार पर निर्भर है। और आखिर में समाज, देश और विश्व की संस्कृति की नींव स्त्री है ।

रचनात्मक दृष्टि से आधुनिक युवती को संस्कारी बनाने के लिए क्या किया जाय ?

वर्तमान युग में अनुष्ठान गतानुगतिकता या लोकसंज्ञा अति प्रबल है जिससे आधुनिक युवती वाह्य दिखावो में समुद्र का अनुसरण गुणदोष के विचार विमर्श विना करती है। इस गुणदोष चिंतन के अभाव का मुक्त कारण क्या है ? धर्मसंस्कार का अभाव। और इस धर्म संस्कार का अभाव का कारण क्या है। माता पिता समाज और धर्म गुरु की उपेक्षा इसके लिए सबसे बड़ा कारण नही है ?

भगवान महावीर ने इन्द्रभूति आदि ब्राह्मणों को उनके वेदवाक्य का सच्चा अर्थ दिखलाकर वुद्धि-गम्य और हृदय स्पर्शी बनाकर समझाया था।

आलोचना या जवरदस्ती नहीं, औषध चाहे कितना भी उत्तम हो तो भी वैद्य रोगी का रोग समझकर ही औषध देता है। माल कितना भी अच्छा हो फिर भी व्यापारी ग्राहक की रुचि देखकर बिक्री करता है। अतिथि की सुधा जगानेवाला रजमारजय देकर यजमान भोजन परोसता है। श्वान को प्रेम पूर्वक पुचकार उससे काम लिया जाता है। तो फिर सस्कृति के मूल रूप आधुनिक युवती को क्या केवल उपेक्षा या निंदा से संस्कारी वनाया जा सकेगा।

माता पिता को पुछे की क्या उन्हें अपनी पुत्री को कोई भी जीवन ध्येय दिया है या अपने मन में भी विचार किया है। समाज के आगेवानों को पूछो कि आधुनिक युवती की उन्नति के लिए उन्होंने कभी चिंता की है ? धर्मगुरुओ को पुछो की धर्मवान प्रजारूप फसल के मूल रूप इस आधुनिक युवती की आत्मोत्पति के लिए उन्होंने कुछ सोचा और उनका अमल किया है ? कुछ साल पहले पू. विदुषी साध्वी जी निर्मला श्री जी को यह चिंता हुई और अनेक प्रतिकूल संयोगों मे भी उन्होंने अहमदावाद में शिविर की योजना की, जिसके फलस्वरूप अनेक आधुनिक

युवतीयाँ आधुनिक पोषाक मे सुसज्ज होने पर भी धर्म के प्रति आकर्षित हुई, धर्म की रुचि जागृत हुई, श्रद्धा के बीज उनके अन्तर मन मे बोये गये और कुछ म आचार परिवर्तन भी हुये यह शिविर मात्र ग्रीष्मावकाश मे और वे भी चौबीस घंटे के दिन मे सिर्फ तीन घंटे के लिये था। अंक गणित के गिराशी से गिना जाये तो ऐसी विदुषी साध्वी जी मार्गदर्शन में आधुनिक युवतीयों के लिए भारतभर म प्राचीन आश्रमो की तरह प्रकृति सौंदर्यधाम या तिर्थों म शाश्वत विद्याधाम की योजना की जाय तो कितना चमत्कारीक परिणाम आयेगा ?

जैन समाज धर्म के बाह्य आडम्बर के लिये करोडो रुपये खर्च करते हैं। और इसमे धर्मप्रस्थापना मानते है लेकिन जब तक धर्म पालन के लिए तपस्वी एव ज्ञानी मनस्वियो का धर्म ज्ञान द्वारा साप्रत्यरक और अटूट श्रद्धा और चारित्र द्वारा जिर्णोद्धार नही किया जायेगा वहा तक बाह्य दिखावा चेतना रहित जीव जैसे रहेगा।

आधुनिक युवती की जिज्ञासा तीव्र है, शक्ति प्रचड है उनकी जिज्ञासा तृप्त हो और शक्ति का दमन नही किन्तु उर्ध्वीकरण हो ऐसी योजना (शिविर) एक सफल योजना है। जयपुर के सग को इसके लिए धन्यवाद।

शिविर क्यों ?

—शाह सुवर्णा मनुभाई

आज के सांस्कृतिक युग में युवकों के नैतिक विकास के लिये विचार करना कितना आवश्यक हो गया है आज स्कूलों व कालेजो में संस्कार प्राप्ति के वदले संस्कार हीनता ही प्राप्त होती है। इसमें दोप किसका है। समाज का ? या युवकों का ? इसमे ज्यादा दोप समाज का ही माना जावेगा। इस दोप को दूर करने के लिए हरेक मानव प्रयत्नशील वनें तो वह मानव जीवन की सफलता प्राप्त कर सकता है। पर इस विचार के लिये अवकाश किस के पास है।

आज मनुष्य के लिये शिक्षण की व्यवस्था तो है पर जीवन निर्माण की नहीं—ऐसी स्थिति में ये शिविर श्रेष्ठ उपाय है। थोड़े समय मे त्यागी, तपस्वी, संत भरात्माओं के हाथों वालकों को जो संस्कार प्राप्त होते है वास्तव मे वे प्रशंसा के पात्र हैं।

जीवन मे संस्कार नहीं आवे तो वह जीवन अवन्नति के पथ पर जाता है। धार्मिक संस्कारों से जो जीवन मे शक्ति मिलती है उससे हरेक काम सही ढंग से करने की आदत पड़ती है।

शिविर में सुबह से शाम तक हमारा यही विचार चलता है कि कौनसा कार्य हमारे करने योग्य है और कौनसा नहीं करने योग्य। अव तक जिस अंधकार में हम थे उससे इस शिविर के माध्यम से हम ज्ञान प्रकाश की ओर वढने लगे है। शिविर में हमें जैन धर्म का स्वरूप व तत्त्व ज्ञान का बोध मिलता है। मानवीय सद्गुण जीवन में कैसे आवे इस ओर हमारी प्रवृति वढ़ने लगी है। अव तक स्कूलों और कालेजों में जो लम्वे समय तक हम प्राप्त नही कर सकें वह थोड़े समय में हमें यहां मिला है।

इस शिविर में धार्मिक शिक्षण के साथ एकता सहिष्णुता, विनय विवेक और गुण भी पुष्ट हो रहे है।शास्त्रों का ज्ञान जीवन में संभव नहीं है फिर भी इन शिविरो में इनका निचोड हमें प्राप्त होता ही है। शिविर से यदि हम थोड़ा भी प्राप्त कर सके तो हमारा भविष्य का जीवन सुन्दर और उपयोगी वन जावेगा और यही शिविर की सार्थकता का द्योतक होगा।

मेरी भावना है, ऐसे शिवर हर ग्रिष्मावकाश में कई जगह आयोजित होने चाहिये। महिला का हृदय कोमल होता हे—ऐसे शिविरों में रहने से और सीखने से यदि उसने कुछ भी पा लीया तो वह अपने परिवार में जाकर कईयों के जीवन की पथ प्रदर्शिका वन सकती है। घर और समाज को सुधार सकती है।

पूज्य साध्वीजी म० ने इस वैज्ञानिक युग मे कई कालेज मे विद्या प्राप्त वहनों को धर्म के प्रति रसीली वनाया है। सदाचारी व्यक्ति की हर जगह इज्जत होती है। और ऐसे शिविरो से महा-

शिविर के अनुभव

—चन्द्रा अहमदाबाद

'अधे के सामने कांच' के अनुसार आज के भौतिक युग में धर्म की वात करना अपने मित्र वर्ग में हंसी का पात्र बनना है, ऐसी स्थिति मे भी सद्गुरु का संयोग मिलना वास्तव में पूर्व जन्म के सुर्कत का प्रताप ही हो सकता है।

शिविर मे आने से पूर्व और पीछे—आज क्या ? स्वप्न मे भी ख्याल नही था कि ऐमा कोई शिविर होता है और पूरे वर्ष भर की मेहनत के बाद ग्रिप्मावकाश में मिली हुई छुट्टियों का उपयोग धर्म का ज्ञान प्राप्त करने में काम आ जावे। पर दिशा शून्य मनुष्य के नेत्रों में ज्योति प्रकटे वैसे शिविर के एक वार के अभ्यास से व्यवहारिक अनुभव से आन्तर जीवन का दीप प्रज्वल्लित हो गया।

जीवन में जरूरी ज्ञान आज तक अनेक जगह मिला पर शिविर में 'एक मास मे' जो प्राप्त हुआ वह "अज्ञान तरवैयानी" सारी जिन्दगी का निचोड़ जैसा लगा।

जैन धर्म की सच्ची जानकारी 'नवकार' जैसे मत्र की महान शक्ति, जीवन में क्या करने व क्या नही करने योग्य की सच्ची समझ मिली। मानवीय सद्गुण वास्तविक जीवन में क्यो जरूरी ? बड़ों के प्रति अपना क्या कर्तव्य ? नई पीढी मे धर्म के सस्कार किस तरह सरलता से आ सकें ? ये सव शिविर से प्राप्त किया जा सकता है।

स्वप्न में भी यह ख्याल नही था कि ८-१० वर्ष की वालिकाओं और हाल ही में 'ग्रेजूयेट' हुई वहने, जो जन्म से जैन होने पर भी नवकार मत्र तक नहीं जानती, ऐसी वहिनें शिविर में पढ़ने में प्रतिस्पर्द्धा करें ? सामायिक क्या चीज है ? किस तरह की जाती है ? कैसी सामायिक उत्तम कही जाती है ? गुरु वंदन कैसे करना, जैन-जैन मिले तो कैसे वहुमान करना, ये सव वे सहज भाव से सीख गई।

एक माता को पांच सात वालकों को सम्हालना कैसा कठिन लगता है वहा यहां तो एक साथ १२५-१५० वहिनों अलग अलग गांवो की, अलग अलग रहन सहन, अलग अलग संस्कार तो भी एक महीने तक विलकुल सादा जीवन, हरेक काम में जागरूकता वास्तव मे प्राचीन समय के आश्रमों की याद प्रस्तुत करते है।

समय के प्रवाह के साथ आश्रम व्यवस्था मे भी आधुनिकता का समावेश हुआ। स्वप्न मे भी नही सोचा था कि वहने इतने उत्साह से शिविर मे भाग लेगी। १४ मई ७२ से अव तक एक पीछे एक व्यक्ति वीर वालिका विद्यालय में आते। सहज

ग्राश्चय के साथ लोग पूछने लगे कि बहनो वहा क्या है ? जवाब मे शिविर ? शिविर क्या—ये कोई प्रवृत्ति है ? कोई नाटक है या कोई सास्कृतिक प्रोग्राम है ? या कोई वाद-विवाद प्रतियोगिता है ? क्या है ? कुछ समझ मे नही ग्राता ? तब समझाने कि भाई वहा एक महीना साथ रहना है ? पढना है ? दुनियां क्या है यह समझना है ? यह तो वास्तव मे कोई नई प्रवृति है ? जवाब मे हम कहते, नही भाई हमारे गुरु जी ने हमार जीवन मे सुसस्कार लाने के लिए यह प्रवृति प्रारम्भ की है। वहा धर्म का प्रश्न नही है, न ही कोई जाति भेद का प्रश्न है, जिस बहन को भी समझना हो वहा ग्रा सकती है।

पूज्य महाराजश्री की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को ग्राज की बालाग्रो–भावी की माताग्रो मे भविष्य के नागरिक जीवन मे सस्कार का दीपक प्रकटता रह इस वास्ते इस महान काय का प्रारम्भ किया है, यह वास्तव मे बहुत कठिन है पर इन शिविरो द्वारा प्राप्त सस्कार जरूर किसी न किसी परिपक्व स्वरूप मे प्रकट होंगे ही। जिस तरह एक दीपक मे हजारो हजारो दीपक प्रकटाने की शक्ति होती है, उसी प्रकार सस्कार प्राप्त बहिनें स्वय के दोनो घरो मे जरूर प्रकाश ला सकती हैं ग्रौर तब सच्चे ग्रर्थ मे शिविर मे प्राप्त मिले हुये सस्कार ज्योतिमय बन उठेंन।

वर्ष वर्ष का नया ग्रनुभव, नई नई बहनो का सहवास तथा भाईयो का उल्हास पूर्वक शिविर ग्रायोजन देश-समाज ग्रौर विश्व का कल्याण करने का माग प्रशस्त करेगा। विश्व बन्धुत्व की भावना का बीजारोपण करेगा ग्रौर भारत मे भावी प्रजा मे विश्व प्रेम का स्रोत बहायेगा।

प्राचीन भारत के महान सन्तो की जैसे ग्राज भी भारत के कोणे २ मे सत वर्ग ऐसे शिविर ग्रायोजित करें जिससे समस्त विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो। यही भावना।

भगवान महावीर ग्रौर स्त्रिया

'पुरुषा को जितन ग्राध्यात्मिक ग्रधिकार है, वे सब स्त्रियों को भी हो सकते हैं। इन ग्राध्यात्मिक ग्रधिकारा मे महावीर ने कोई भेद बुद्धि नही रखी। "जो डर बुद्ध को था, वह महावीर को नही था, यह देखकर ग्राश्चय होता है। महावीर निडर दीख पडते हैं। इसका मरे मनपर बहुत ग्रसर है। × × × × गौतम बुद्ध को व्यावहारिक भूमिका छू गयी ग्रौर महावीर को वह छू न सकी। उन्होंने स्त्री-पुरुष मे सम्भवत भेद नही रखा। × × महावीर ने २५०० साल पहले स्त्रियो को दीक्षा देने म कितना बडा पराक्रम किया

ग्राचार्य विनोबा जी
(स्त्री शक्ति पृ० ३६)

शिविर से होने वाले लाभ

—शाह अमिनि रसिकलाल, F. Y. B-Com.

हजारों वर्षो पहले कोयल जिस स्थान पर रहती थी आज भी कोयल उसी तरह के घोंसले में रहती है। परन्तु हजारों वर्षों पहले मनुष्य जिस तरह जीता था आज उससे वहुत दूर है। झोपड़ो में रहता मनुष्य आज १२० माला के मकान मे रहता है। कुदरत की सहायता से जीने वाला मनुष्य आज कुदरत पर बहुत कम आश्रित है। वन मे रहने वाला मनुष्य आज चन्द्रमा के उपर साम्राज्य जमाने का प्रयत्न कर रहा है, यह वस्तु वतलाती है कि मनुष्य भौतिक रूप मे वहुत आगे वढ़ गया है। पर साथ ही साथ आध्यात्मिक दृष्टि से देखे तो बिल्कुल विरोधी चित्र सामने आता है। हिंसा, चोरी, लूटमार तथा अत्याचार रोजमर्रा की सामान्य वस्तु वन गये हैं। इस कारण कलकत्ते में रास्ते २ पर मनुष्यो का होने वाला खून, बंगाल देश की आजादी के लिये हुआ भयंकर अत्याचार, अमेरीका और रूस के वीच का सघर्ष, वियतनाम का प्रश्न जो सामने है वे क्या वतलाते हैं जिस आर्य सस्कृति मे खून, लूट वगैरा अवाछनीय गिना जाता था उस आर्य देश में ही नही पर विश्व मे ये सव वाते सामान्य वन गई है। मनुष्य जो आर्य सस्कृति का पुजारी था वह आज मर्यादा विहीन विकृति का भोगी वनता जा रहा है। भले मनुष्य भौतिक रीत से सिद्धि के शिखर पर पहुँच गया हो पर आध्यात्म रीत से तो अधोगति के पथ पर ही जा रहा है।

अधोगति के फसे हुये जीव की उन्नति होवे ऐसे प्रयत्नों मे शिविर भी एक सफल एवं लाभदायी प्रयोग कहा जा सकता है।

नीति, सदाचार और दया! अपनी संस्कृति के मूलभूत स्तोत्र हैं। ये सुकते आये है फिर भी कुछ समय के लिये। पुरी तरह कभी सुखे नही है। पर इसके लिये हर वक्त प्रयत्न होता रहा है। अन्धकार के लिये केवल हल्ला मचाने से कभी अन्धकार दूर नही होता इसके वास्ते सक्रियता से प्रयत्न करना पडता है और उसके लिये आवश्यक है सर्जनात्मक पद्धति की और ऐसी कोई सफल सर्जनात्मक पद्धति है तो वह है 'शिविर'। शिविर यानी ग्रिष्मावकाश के मध्य अनुभवी और श्रद्धावान विद्वानों के सानिध्य में प्राप्त होने वाला संस्कार का सिंचन। शिविर व्यक्ति को सदाचारी, विनयी, विवेक, सुसंस्कारी वनाने में योगदान करता है। 'व्यक्ति सुधरेगा तो विश्व सुधरेगा' इस अनुसार व्यक्ति मे परिर्वतन आने से समाज देश और विश्व मे परिवर्तन आयेगा। 'मिट्टी से जैसा घाट वनाओगे वैसा वना सकोगे। इसी प्रकार वाल पन मे सुसंस्कारो का सिंचन जरूरी है उसके लिये यह पुरे दिन का शिविर अत्यधिक उपयोगी है। इसमे ज्ञान और क्रिया का सुन्दर समन्वय है। व्यक्ति को यहां ज्ञान प्रदान कर आचरण को जीवन मे लाने का अवसर मिलता है। तत्वज्ञान के शिक्षण से निर्मूल शंकाये नष्ट होती है। यह विश्व क्या है? किन तत्वों से वना हुआ है? ईश्वर क्या है? पाप क्या है? पुण्य क्या है? पाप हेय क्यों है? पुण्य उपादेय क्यो है? क्यों न्याय नितिवान और सदाचारी वनना चाहिये? रात्रि भोजन का निषेध क्यों है? कंदमूल का त्याग क्यो जरूरी है?

जिनेश्वर प्रभू की पूजा क्यो करनी ? नवकारशी क्या है ? सामाजिक प्रतिक्रमण क्यो करना चाहिये ? मानवीय सद्‌गुणो का आचरण जीवन मे क्यो करना चाहिये ? सूत्राथ जानने का तात्पय क्या है ? आदि आदि सत्र शकाओ का निवारण होकर शिविर के माध्यम से श्रद्धा का दीप जल उठता है। और इस श्रद्धा दीप के जलते ही सुदेव, सुगुरू और सुधर्म की आराधना जीवन का ध्येय बन जाते ह।

"आणाये धम्मो" उनके जीवन का सचा क्तव्य बन जाता है।

ऐसे शिविरो मे भाग लेने वाला से जबरदस्ती कोई नियम पलाया नही जाता, परन्तु उनकी सारी शकाओ का उन्मूलन कर सची वस्तुस्थिति के प्रति विश्वास जागृत कर वे स्वय नियमो का पालन करें ऐसा प्रयत्न किया जाता है। जैस कि प्रभूदर्शन, देव वदना, गुरुवदन, जिन पूजा, नवकारसी, स्वाध्याय, रात्रि भोजन त्याग, सत्य बोलना, अहिंसा की आचरण, लोभ छोडना, क्रोध कपट का त्याग करना, सुबह शाम नवकार गिनना, माता पिता को वदन, सामाजिक, प्रतिक्रमण आदि।

धीरे धीरे शिविरार्थीयो के दोष दूर होते है और सही माग की और प्रवृति होती है। शिविर मे एक दुसरे का सम्पक होने से विचारो का आदन प्रदान होता है और उससे मैत्री भाव पैदा होता है इसके उपरात भी, गुणी चारित्र शील, विद्वान पुरुषो के प्रवचनो का लाभ मिलता है। उनके आदरणीय आदर्शों से मानव जीवन गुणो से सुशोभित होता है।

इसके उपरात क्रोध को वश मे करने के लिये एव चित्त की शाति के लिय ध्यान और योग की प्रक्रिया कराने मे आती है। योग साधना द्वारा सत्य की शोध हो सकती है। ध्यान और योगद्वारा पाप विकारो के उपर काबु पाया जा सकता है। योग का प्रेक्टिकल ज्ञान शिविरो मे प्राप्त होता है।

इस तरह शिविर की उपयोगिता स्पष्ट है और जितनी ज्यादा तादाद मे ये होवें उतने ही ठीक है। "जे कर झुलावे पालणे ते जगत उपर शासन करें" वाली युक्ति अनुसार स्त्री महापुरुष की घडने वाली है, इसलिये स्त्रीयो को सस्कारी बनाने के लिये ये शिविर अनमोल प्रसग है।

आज के श्रीमत व मध्यम वग के व्यक्ति अपनी सपत्ति को टेढे मेढे रास्ते खच न कर इस तरह के प्रयोजनो मे खच करे तो ऐसे शिविर काफी सख्या मे हो सकें तथा और भी अधिक बहिने इनमे भाग ले सकें।

ऐसे शिविरो मे भाग लेने वाली बहनें जब घर घर मे इन सस्कारो का प्रतीक बनेगी तो जैन शासन उन्नति के शिखर पर पहुँचेगा।

'Prevention is better than cure' प्रमाण से जैन समाज की तरह अन्य समाजो मे भी इस तरह के शिविर आयोजित हो तथा व्यवहारिक शिक्षण के साथ साथ नैतिक और अध्यात्मिक जागरण का शिक्षण भी चलाया जावे तो आज का वातावरण बिल्कुल बदल जावे। सदाचारी व सतोषी युवको से यह विश्व 'नन्दनवन' बन जावे।

एक विदुषी साध्वी—

उनके शील–संस्कार–शिविर

प्रो० प्रतापकुमार ज. टोलिया

M.A. (हिन्दी) M.A. (अंग्रेजी) साहित्य रत्न.
'बैंगलोर'

पल पल पर प्रकट होती हुई जागृति वाणी, काले चश्मों से झांकती हुई प्रश्नपूर्ण खोज की दृष्टि और चारों ओर ग्रंथों एवं छात्राओं से घिरी हुई, नख-शिख श्वेत वस्त्रों से आवृत्त साध्वी को आप देखेंगे तो आप यह जान जायेंगे कि वह विदुषी साध्वी श्री निर्मला श्रीजी है।

किताबों के ढ़ेर के बीच वे घिरी अवश्य रहती है, किन्तु किताबों से अधिक खोई हुई वह रहती है उन बाल-किशोरी-युवा छात्राओं के बीच, क्योंकि इन 'खुली' और 'सजीव' किताबों में उन्हें कही अधिक दिलचस्पी है। खिलती कलियो को अभीसिंचित करना और मुरझाती हुई लताओं को फिर से लहलहाना मानो उनके जीवन का सहज धर्म बन गया है। उनका यह सहज धर्म, आत्म विज्ञापन के इस युग मे, बिना किसी बडे विज्ञापन के चुपचाप चलता रहता है और सुपुप्त स्त्री शक्ति को जगाये रहता है। विगत पाच वर्षो से उन्होने आरम्भ की हुई "श्री संस्कार–अध्ययन–सत्र" नामक छात्राओं के शील, विद्या, संस्कार के निर्माण की शिविर प्रवृत्ति हमारा लक्ष्य सहज ही आकृष्ट कर लेती है। अतः उक्त साध्वीजी एवं उनकी इस प्रवृत्ति की यहां एक झाकी प्रस्तुत करना उचित होगा।

साध्वीजो की स्थूल जीवन झांकी—

साध्वी श्री निर्मला श्रीजी ने नौ वर्ष की ही आयु मे उन्होने अपनी पू. माता–गुरुदेव के साथ जैन दीक्षा पाकर उन्हो के हाथो अपना ज्ञान-दर्शन-चारित्र की साधना का क्रम–विकसित किया। उक्त माता–गुरु पू. साध्वी श्री सुनदा श्रीजी के साथ आपका बहुत–सा काल पाद–विहार–यात्रा मे गुजरात के बाहर मालवा, खानदेश, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, बगाल एवं दक्षिण भारत मे व्यतीत हुआ। अपने विहार–जीवन के उपक्रम मे उन्होंने एक जैन साध्वी के लिये उचित एवं आवश्यक ऐसे आचार पालन एवं ज्ञान–दर्शन चारित्र की साधनात्रयी का आराधन करने के साथ–साथ–विद्या की उपासना भी गतिशील रखी। बचपन मे पाटण (गुजरात) जैसे 'गुजरात सरस्वती' कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य के क्षेत्र से ही उनकी सरस्वती उपासना आरम्भ हो चुकी थी। वही से उन्होने दर्शन एव साहित्य का अध्ययन आरम्भ कर दिया था। उन्होने अन्य दर्शन-ग्रथों की चर्चा के साथ रविबाबू–के 'गीताजलि' आदि का भी अध्ययन किया। यह हुई सुदूर के विद्याध्ययन की बात। इसके पश्चात् उन्होंने विहारों

अतगत ही विद्या की उपासना चालू रखी और बी० ए०, एम० ए०, साहित्यरत्न की परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के बाद पी० एच० डी०, के लिए "भारतीय दर्शन में अभाव–मीमासा" नामक शोध-प्रबंध भी परिश्रम पूर्वक लिखा। विद्या, विहार, देवदर्शन एव सत्सग के द्वारा उन्हें भारत की भिन्न भिन्न साधना धाराओं का और विभिन्न परम्पराओं का परिचय हुआ।

स्याद्वादी जीवन द्रष्टि एव स्मृति शक्ति—

उपर्युक्त विविध परिचयों के परिणाम स्वरूप एव स्याद्वाद का सींचन पायी हुई जन्मजात जैन द्रष्टि के कारण साध्वीजी का द्रष्टि पर समन्वय शोधक एव विशाल हुआ है। सभी बहनों के लिये किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना खुली रहने वाली सब धर्म समभाव–की–सी उनकी 'श्री सस्कार–अध्ययन–सत्र' की प्रवृत्ति इस बात की प्रत्यक्ष प्रतीति है।

साध्वी श्री निर्मला श्रीजी विद्या, शील एव शुद्धि की साधना की पुरस्कर्त्री हैं और अनुभव या बुद्धि से अग्राह्य एव आत्मगुणों के प्रकटीकरण में अक्षम ऐसी चमत्कार-शक्ति को लोक सग्रहकी और आत्मार्थकी द्रष्टि से हेय समझती हैं। आत्मगुणों के प्रकटीकरण की शक्ति को खोजने में उन्होंने श्रीमद् राजचन्द्रजी की भाति अपने शतावधान के प्रयोग भी किये हैं। ऐसे प्रयोग उन्होंने कुछ समय पूर्व ही कलकत्ते में प्रधानो, न्यायमूर्तियों एव विशाल जन समुदाय के समक्ष किये थे। इन प्रयोगों को वे आत्मगुणों की परिचायक स्मृति-शक्ति से अधिक कुछ नहीं कहती।

पथभ्रान्त युवतियो का प्रेरणा स्रोत :—

इस प्रकार साध्वी श्री निर्मला श्रीजी स्वय तो अपनी ज्ञान–शील–शुद्धि की साधना मे रत हैं ही, औरो के लिय भी वे सतत् सचित हैं। वे और उनकी कुछ चुनी हुइ शिष्याए अपनी वैयक्तिक तकलीफों को बिसार कर कठोर तपपूर्वक अपनी साधनाधारा समाज के लिये पनपती हुई युवतियो के लिये अस्खलित बहाये जा रही हैं। समाज की विषम समस्याओं और सतापों से भरे इस युग मे स्त्रियों की स्थिति जब दुःखी और दिशा हीन है तब साध्वी श्री निर्मला श्री की निर्मल शीतलधारा मे अनेक शोक सतप्त एव पथभ्रान्त युवतिया पावन होती हैं और सही जीवनपथ खोजने की द्रष्टि पाती ह। ना–अनेक–साधु साध्वियो की तरह वे अपने परिचय मे आनेवाली युवतियो को अपनी शिष्याए बनाने के लोभ मे कभी नहीं रही। युवतिया अपने वर्तमान जीवन को ही अधिक सवादी, समुन्नत और प्रसन्न बना सकें–यह उनकी द्रष्टि है। और हम यह प्रत्यक्ष देख सकते हैं कि उनका सान्निध्य-प्राप्त युवतिया किस प्रकार जीवन-विकास साध रही हैं। यह कहने मे अतिशयोक्ति नहीं होगी कि साध्वीजी आजके युग म बालिकाओं एव युवतियो के लिये एक विरल प्रेरणा स्रोत हैं। आत्महत्या के मार्ग पर जाती हुई अनेक युवतियों को जीवन के प्रसन्न-पथ पर लौटाना, मुरझाती हुई–जीवन–लताओं को फिर से लहलहा देना, क्या कम परिचायक हैं इस बात का ?

साध्वीजो के ये सस्कार–सत्र—

यो तो साध्वीजी का प्रेरणा स्रोत निरतर, बारह महीने, बहता रहता है, किन्तु विशेष रूप से विद्यालयो–कालेजो के छुट्टी के दिनों मे वे अपने सस्कार–अध्ययन–सत्रो या शिविरो के द्वारा अत्यधिक

रूप से प्रवृत्त रहती है। गत पांच वर्ष से, १९६६ से उन्होंने ऐसे सत्रों का आयोजन गुजरात में भावनगर, पालनपुर, अहमदावाद आदि स्थानों मे कुल मिलाकर ६ बार किया है। ऊपर कहे अनुसार सर्व-धर्म समभाव की अभेद एवं स्याद्वादपूर्ण-दृष्टि के कारण सभी धर्मो की स्कूल-कालेज की छात्राओं को उक्त सत्र में प्रवेश मिलता है।

प्रश्न उठ सकता है कि ये सत्र और शिविर क्यों? ... संक्षेप में प्रत्युत्तर है, आजके विदिशामय, विसंवादपूर्ण और विश्रृंखलित ऐसे 'विद्या' के वेश मे चल रहे 'अविद्या' के वातावरण में यत्किंचित् भी विकल्प बनने के लिये विद्या का शील-सस्कार युक्त सही जीवन पथ प्रदान करने के लिये!

इस दृष्टि से अब तक के सत्रो में प्रश्नचर्चा, ज्ञान-संवाद, विद्वानों के व्याख्यान, कथा-वार्ता, संगीत, ध्यान, ... इत्यादि चलता रहा। अब 'सत्र' से 'शिविर' के विस्तृत रूप मे विकसित होने के कारण यह प्रवृत्ति अपने क्षितिज और आयामों को विशाल बनाती है। अब वर्तमान शिक्षा में टूटने वाली कड़ियों को जोड़ने का, समग्रता और संतुलन-पूर्ण जीवन-शिक्षा के क्रम का आरम्भ हुआ है। स्त्रीत्व को प्रकट करने और स्त्री शक्ति को समुचित रूप मे जगाने की दृष्टि से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक ऐसे शिक्षाक्रम-जीवन क्रम का एक महीने के समय के लिये आयोजन किया गया है। साध्वीजी के मातृवत्सल स्नेह और संस्कार साधना को केन्द्र में रखकर इस वर्ष १५० से २०० छात्राएं शारीरिक दृष्टि से शुद्ध-आहार-विहार, योगासन-व्यायाम-इत्यादि मानसिक बौद्धिक दृष्टि से संगीत-भक्ति-पूजा, ज्ञानचर्चा, अध्ययन, स्वाध्याय, वक्तृत्व, व्याख्यान, वार्ता, परिसवाद इत्यादि और आत्मिक दृष्टि से तत्त्व की, आत्मज्ञान की आराधना, दर्शन का अभ्यास, भिन्न भिन्न तत्त्वों का स्याद्वाद की दृष्टि से आकलन, ध्यान, इत्यादि से अपने आप को अपूर्व रूप में समृद्ध करेंगी। अहमदावाद के चौ० न० विद्याविहार के विद्यामय-नैसर्गिक वातावरण मे भक्ति-सगीत के सुमधुर स्वरों के साथ इनकी दिवसयात्रा आरम्भ होगी। साध्वीजी के पुण्य और पुरुषार्थ-का ही यह सुफल है कि इस प्रवृत्ति को गुजरात के विद्यापुरुष, कुलपति उमाशंकर जोशी के आशीर्वाद, गुजरात राज्य की भूतपूर्व-शिक्षा मत्री-इन्दुमती बहन चीमनलाल का सम्पूर्ण सहयोग एवं श्रेष्ठीवर्य श्री कस्तुरभाई लालभाई प्रभृति श्रीमानो की वित्तीय सहायता सप्राप्त है। इस बात मे सदेह नही कि साध्वीजी भारत मे अनेकों के लिये सुविधा का एक प्रत्यक्ष दृष्टान्त प्रस्तुत कर देगी।

शिविर क्यों ?

वह भी बहनों के लिये ?

—लेखक डा० भाईलाल एम बावीशी एम बी बी एस.
पालीताणा

ससार मे अनक प्राणी जन्म लेते है। जीने और मरने की परपरा चलती ही रहती है। परन्तु जीना तभी सार्थक है अगर भव भ्रमण का अत हो। यह अन्त तभी होता है जब जीव विशिष्ठ ज्ञान प्राप्त कर जीवन को सस्कारी–आध्यात्मिक बनावें और कर्म से मुक्त होकर वीतराग दशा को प्राप्त करे और अत मे मुक्त होकर प्रयाण करे।

उपरोक्त प्रक्रिया के लिए मानव ही एक ऐसा जीव है जिसको विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करने की और मानसिक आध्यात्मिक विकास करने की सहुलियत प्राप्त है। जीवन की पटरी पर चलने के लिए मनुष्य अपने भरण पोषण के लिए शिक्षा प्राप्त करता है, सामान्य ज्ञान लेता है और जीवन व्यवहार चलाता है। जब कि जीवन के उच्च एव आदर्श कक्ष मे पहुचने के लिए विशिष्ठ ज्ञान, सुसस्कार और धर्म रुचि जीवन मे आवश्यक है। और इस कक्ष मे मानव तब ही पहुच सकता है जबकि वह गुरु की सानिध्यता मे उच्च साहित्य के अध्ययन मे धर्म नीति और अनुभव एव अध्यात्म की तरफ झुके और आचरण से जीवन को प्रकाशित कर मुक्ति पथ पर अग्रसर हो।

उपरोक्त धर्म नीति या शास्त्र के नियमित एव व्यस्थित अध्ययन के लिए वर्तमान मे स्कूलो या कालेजो मे कोई व्यवस्था या दृष्टीकोण नही है। वहा तो सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान और नौकरी या व्यवसाय के उपयोगी शिक्षा दी जाती है। जीवन को सस्कारी बनाना, नैतिकता को आध्यात्मिकता के रग मे रग कर आदर्श नागरिक बनाकर जीवन के उच्च आदर्श सिंचन का कार्य वहा सभव नही है। इसी लिए जैन समाज मे एक आवश्यक कार्य की तरह धर्म एव नीति के अध्ययन के लिए पाठशाला एवधार्मिक कक्षायें चलाते हैं। जहा धर्म का, शास्त्र का सस्कार का एव सदाचार का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। जो कालान्तर मे जीवनोपयोगी होता है। परन्तु यह अभ्यास और ज्ञान भी नियमित एव व्यवस्थित रूप से सिर्फ बाल्यावस्था या विद्यार्थी जीवन मे ही सभव है। जिन्हे पाठशाला या वर्गों की सुविधा नहीं है, समय का भी अभाव है व उच्च शिक्षा मे दत्तचित है या व्यवसाय मे लीन है उन के लिए ऐसे अध्ययन शिविर की खास आवश्यकता है। यही खास व्यवस्था पिछले १०वर्षो से पूज्य गुरुवय साधू साध्वी आदि ग्रीष्मावकाश मे जब छात्र एव छात्रायें और मुख्यत महा विद्यालय व स्नातको को अवकाश होता है और इधर उधर घूमने फिरने मे पार्टीयो मे समय का अपव्यय करते हैं उनके लिए और जिज्ञासु जीवों के लिए सस्कार-सदाचार एव धार्मिक ज्ञान के लिए शिविर की व्यवस्था की गई है और अल्प समय मे काफी ज्ञान प्रदान किया जाता है। ऐसे शिविर सस्कार अध्ययन सत्र या अध्ययन वर्ग आदि पिछले कुछ वर्षों

से पू. पं श्री भानु वीजयजी म. सा. एवं पू. साध्वीजी श्री निर्मला श्री जी महाराज साहेब, भाई एवं बहनों के लिए क्रमशः योजित करते है। जिनके सुन्दर परिणाम प्राप्त हैं।

शिविर से शिक्षा प्राप्त कर जब छात्र छात्राये घर जाते है तब शास्त्रों के मूल भूत तत्वों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। सामान्य जीवनोपयोगी क्रिया काण्ड अनुष्ठान आदि का सही अनुभव प्राप्त करते हैं। यों कहें कि आदर्श जीवन का धरोहर लेकर जाते है। जो कि अन्य छात्र छात्राओं से विशिष्ठ दिखाई देते है। वे अपने जीवन मे उपयोगी तो होते ही है परन्तु समाज में भी नव जाग्रति भरते है। इस तरह यह प्रवृति विद्यार्थी एव युवक वर्ग को अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है। जिसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे भावनगर मे हुआ ऐसी प्रवृति से व्यक्ति एवं समष्टि को सुन्दर लाभ प्राप्त होता है यह मुझे पूर्ण विश्वाष है। ऐसी प्रवृति छात्र एव छात्राओं के लिए बराबर उपयोगी होती परन्तु छात्रों के लिए तो ऐसी अनेक सुविधायें है परन्तु छाक्षाओं के लिए ऐसी सुविधाये नगण्य हैं। यह सर्वविदित है कि स्त्रीयों ही बालक बालीकाओं को नन्ही उमर से ही पाल पोस कर सस्कार सिंचन करती है। उनका जीवन बनाना माता के हाथ है क्योंकि जो स्त्री संस्कारी सदाचारी चारित्र्यवान और शिक्षित होगी तो उनके बालक भी सस्कारी एवं सदाचारी बनेंगे। जो आदर्श नागरिक होते है। समाज भी सुदृढ होता है। फिर तो शासन प्रभावना तो स्वाभाविक है। इसलिए बहिनों को व्यवहारिक ज्ञान के उपरांत धर्म नीती और सदाचार की शिक्षा पाठशाला या शिविरों मे देना आवश्क हैं।

उच्च शिक्षा प्राप्त बहनों (मेट्रीक या कालेज की छात्राओ) के लिए ग्रीष्माअवकाश में शिविर या सत्र की योजना कर धर्म के मूलभूत सिद्धान्त एवं दैनिक व्यवहार मे उपयोगी ऐसा आध्यात्मिक शिक्षाण दिया जाये तो जीवन मे उपयोगी है। इसी दृष्टिकोण से ज्ञानी एवं विद्वान साधू–साध्वी स्कूल की छुट्टियो मे ऐसे संस्कार अध्ययन सत्र की योजना बनवाते हैं जिससे युवक एव युवतियों को सहज एवं सरलता से जमाने के अनुसार जानने को व समझने को मिले।

कुछ समय पहले बहनो के लिए भावनगर एवं अहमदावाद मे पूज्य साध्वीजी श्री निर्मला श्री जी ने ऐसी 'संस्कार शिविर' की योजना की थी जिससे बहनो को अत्यन्त लाभ कर हुआ और समाज के कर्णधारों ने इसकी भूरी भूरी प्रशंसा की। अभी ऐसी ही शिविर पूज्य साध्वीजी महाराज जयपुर मे चला रहे है जिसकी काफी प्रशंसा हो रही हैं।

परन्तु ऐसे शिविर उपयोगी हों और आवश्यक हों और इस प्रवृति की सफलता के लिए समाज के हर एक वर्ग का सहकार आवश्यक है। पूज्य साध्वीजी तो अथक परिश्रम करके अध्ययन कराती हैं और संस्कार का सिंचन करती है परन्तु इस प्रवृति के सचालन एवं व्यवस्था के लिए कर्मठ कार्य कर्ताओ को समय निकाल कर उसे सफल बनाना चाहिए। दुखः के साथ यह भी कहना पड़ता है कि कुछ लोग ऐसे भी है कि जो क्रान्तिकारी सस्कार अध्ययन सत्र की निंदा करते है और विरोध भी करते है। हो सकता है इसमें व्यक्तिगत विरोध या नासमझी भी हो फिरभी प्रवृति का मूलभूत ध्येय और उपकारक फल श्रुती लक्ष्यकर ऐसी दूरदर्शी धार्मिक संस्कारीक वृती को पुष्टि देने वाली प्रवृति को प्रोत्साहन मिलना चाहिए इससे नौजवानों को मार्ग दर्शन होगा और विकृत प्रवृति से निकलकर सत पथ की तरफ अग्रसर होंगे।

मुक्तक

मुनि श्री चोथमलजी

(१)

छोटे बडे सबका ही दिल से सत्कार करो ।
जितना बन सके उतना २ सहकार करो ।।
न जाने किस वक्त कौन बन्दा काम आजाये ।
अेक से क्या ! करना ही है तो सबसे प्यार करो ।।

(२)

निरोग सन्तान घटते जा रहे हैं और बेजान सन्तान बढते जा रहे है ।
शास्त्रीय गान घटते जा रहे हैं और फिल्मीगान बढते जा रहे हैं ।।
डर है भगवान और धर्म का नाम केवल कोष मे ही न रह जाये ।
सचमुच मे इन्शान घटते जा रहे हैं और शैतान बढते जा रहे हैं ।।

(३)

कितनेक बन्दे ऐसे हैं जो केवल शक्ल मे फस जाते हैं ।
कितनेक बन्दे ऐसे है जो केवल अक्ल मे फस जाते हैं ।।
मानने को तो वो अपने को तीस मार खा से कम नही मानते ।
मगर आखें चार तब होती है जब किसी की नकल मे फस जाते है ।।

(४)

सस्कार अध्ययन सत्र नयी पीढी मे शुभ सस्कार भरना चाहता है ।
धर्म को पोथो से निकालकर जीवन मे साकार करना चाहता है ।।
उन्हे भी धन्यवाद है जो जीजान से जूटे हैं इस नैतिक यज्ञ मे ।
मूर्छित चेतना फिर से पुन जीवित हो ऐसा प्रचार करना चाहता है ।।

(५)

नीव मकान की आधार शिला है ।
रीढ शरीर की आधार शिला है ।।
सस्कार देना हो तो बच्चो मे दो ।
वे जाति देश सबकी आधार शिला है ।

प्रेषक
उदयराज कोठारी जैन

आज के जीवन में धार्मिक शिविरों का क्या महत्व है

—प्रेमलता जैन, जयपुर
शिविर विद्यार्थिनी
कक्षा—एम.ए. समाजशास्त्र

आज मानवीय जीवन मे सद्आचरण के विना सुसंस्कार आ ही नहीं सकते इसलिए नीति और सदाचार का ज्ञान प्राप्त करना जरूरी है।

ज्ञान ही जीवन का सच्चा प्रकाश है और इस प्रकार की एक २ किरण आत्मा के विकास का मार्ग खोलती है। इसलिए जीवन के निर्माण मे ज्ञानोपसना का मुख्य स्थान है।

जीवन रथ के सफलतापूर्वक संचालन के लिए व्यावहारिक और धार्मिक दोनों शिक्षाओं की आवश्यकता है। आज तथाकथित व्यावहारिक शिक्षण तो हमे स्कूल कालेजों व अन्य शिक्षण संस्थाओं से प्रचुर मात्रा मे मिल जाता है पर इसके साथ सुसंस्कार का पोषक धार्मिक व नैतिक शिक्षण नही के वरावर मिल पाता है इसी कारण आज नई पीढ़ी में संस्कारों की अत्यधिक कमी महसूस होती है।

इस नई पीढ़ी के जीवन को सुसंस्कारी वनाने में महिला समाज काफी महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है।

स्त्री शक्ति है सृष्टि है यदि उसे उचित संचालन प्राप्त हो। स्त्री विनाश है, यदि उसे सचालित करने वाला अयोग्य हो।

इसके लिए नारी के यौवनावस्था में प्रवेश करने के पूर्व उसको कुछ ऐसा ज्ञान प्राप्त कराना आवश्यक है। जिससे जीवन शक्तिदायक हो वे जीवन की कठिनाइयो से जूझ सके साथ ही समय आने पर वह दूसरों का मार्ग भी प्रशस्त कर सके।

एक विशाल प्रश्न मेरे समक्ष आ खड़ा होता है, कि इसके लिए क्या किया जाये? घर में—नहीं, घर मे प्रत्येक लडकी स्वच्छन्द होती है उस पर कोई चीज थोपी नही जा सकती। विद्यालय में कदापि नही, उसको अपने पाठ्यक्रम से ही समय नही मिलता इसके अतिरिक्त अगर उसे नियमित यह शिक्षा दी जाये तो वह उसे केवल परीक्षा पास करने हेतु ही अध्ययन करेगी न कि अपने जीवन मे उतारने हेतु।

अत. एक ही मार्ग रह जाता है वह यह कि इसके अवकाश के समय उसे इस आध्यात्मिकवाद को ग्रहण कराया जाये उसके लिए ऐसे धार्मिक शिविर लगाये जावे जिसके प्रति उसका आकर्षण हो ये ही शिविर उसके जीवन को सुसंस्कारी वना उसमें मनस्विता व आत्मवल पैदा कर सकते हैं।

ऐसी सुशिक्षित एव सुसस्कारी माता अपनी सन्तान के जीवन निर्माण मे काम कर सकती है। इसलिए बहिनो के शिक्षण एव सस्कार प्राप्ति मे सहायक बनना, धर्म देश और समाज को सुदृढ एव सुयोग्य बनाने जैसा उत्तम कार्य है।

धर्म जीवन का शाश्वत मूल्य है यह सामयिक मूल्यो की परिवर्तनशीलता की दिशा बोध देता है।

इस दिशा को प्राप्त करने के इस धार्मिक शिविर मे आध्यात्मिकता का ज्ञान कराया जाता है। व्यावहारिकता तो बच्चा जब से जन्म लेता है उसे धीरे २ प्राप्त होती रहती है लेकिन आध्यात्मिकता को स्वय प्राप्त करना कठिन है, इसके लिये इसका अध्ययन कराना आवश्यक है। अत ये ज्ञान हमे ऐसे धार्मिक शिविरो मे महान् साधु साध्वियों व अन्य ज्ञानियो से ही प्राप्त हो सकते हैं जहा भारत मे पश्चिम सस्कृति ने सभी को ढक लिया हैं, ऐसे धार्मिक शिविरों का महत्व अत्यधिक बढ जाता है। किस कारण से कर्म बध और किस कारण से मोक्ष—ये दिशा बोध ऐसे शिविरो के माध्यम से ही होगी।

मैं स्वय एक समाजशास्त्र की छात्रा हूँ—सामाजिक जीवन कैसा होना है? उसमे कैसे परिवर्तन किया जा सकता है आदि का अध्ययन जरूर किया है। लेकिन जीवन को सफल कैसे किया जाय यह ज्ञान मैंने इस शिविर मे ही प्राप्त किया है। स्थानीय शिक्षार्थियो के लिए शिविर प्रात तीन घटे का ही होता है लेकिन इतने अल्प समय मे मैंने जो ज्ञान अर्जित किया है, वह अकथनीय है। विश्वास ही नही होता कि ऐसे आध्यात्मिक जीवन को प्राप्त किये बगैर क्या मैं जिन्दगी मे सफल हो सकती थी? सम्भवत नही!

शिविर के वातावरण मे एक सतुष्टि प्राप्त होती है जोकि किसी अन्य स्थान पर प्राप्त नहीं हो सकती है। यहा धार्मिक दृष्टिकोण से जिस प्रकार हमारे मन मे आध्यात्मिकता का प्रवेश कराया जाता है। जहा तक मेरा अपना विचार है जीवन के किसी भी क्षण मे मुझे वह नही मिल सकता। जीवन को किस वातावरण मे ढाला जाये? माता-पिता, भाई-बहिन और भविष्य मे ससुराल मे सास-ससुर पति व देवर के किस दृष्टिकोण मे अपने को इन सब विचारो का समावेश हम इस अल्पावधि में ही प्राप्त हो जाता है।

एक जैन मुनि ने कहा है कि "आज की युवा पीढी जिस दिशा मे जा रही है वह उसकी लक्ष्य प्रतिबद्ध दिशा नहीं है किन्तु प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण मे सम्प्राप्त दिशा है। अपनी पुरानी पीढी मे जो इष्ट है वह इसे इष्ट नहीं है। नई पीढी बुद्धिवादी है, उसे स्वतन्त्रता यथार्थ और परिवर्तन प्रिय है।

उपरोक्त कथन आज के नई पीढी का यथार्थ चित्रण है। अत उससे दबाव या डर से किसी बात के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता है। अत उसके धर्म के प्रति आकर्षित करने के लिए हमें ऐसे शिविरो का आयोजन करना ही पडेगा अन्यथा यह निश्चित है कि हमारा—हमारे धर्म का तथा देश का भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा।

मैं पाठकगण से बार २ अनुरोध करती हूँ कि ऐसे शिविरों के आयोजन प्रतिवर्ष कराये जाये जिससे हम बालिकाओं का जीवन सुसस्कारी बनें। हम समाज धर्म व देश की थोडी सी भी सेवा कर सके।

शिविर में मारो अनुभव

—ले० चोकसी हर्षा शांतिलाल
एफ. वाई. आर्ट्स कोविद

जीवन में कितने ही क्षण ऐसे आ जाते है जो अपने भाग्य को फिरा देते है। इस वस्तु का साक्षात अनुभव मुझे शिविर से मिला। अपना भाग्य अपने जीवन में आमूल परिवर्तन लाता है यह एक दिवस था जो मेरे लिये नवीन ज्ञान का प्रभात था। अचानक मैं बहन अनिला के यहां शाम को जा पहुँची, वहां देखा तो वह कोई स्तुति बोलते हुए आनन्द से कही जाने की तैयारी कर रही थी। मैंने कोतूहल वश पूछा, कहां जाने की तैयारी है? आनन्द से उसने कहा 'हर्षा तू आवे तों आव खूब आनन्द आवेगा। मैं शिविर में जहां संस्कार का सिचन होता है – वहां आत्म-कल्याण हेतु जा रही हूँ। शिविर शब्द मेरे लिये बिल्कुल नया था। पर उसने संक्षेप में जैन धर्म की महत्ता के सम्बन्ध मे कुछ बताया। पर प्रश्न यह था कि मै ठहरी जैनेतर –मै शिविर मैं कैसे जा सकती थी। मुझे बड़ी निराशा हुई। तब अनिला बहन ने कहा––

"स्यादवादो वर्तते वास्मिन्, पक्षपातो न विद्यते।
नासतन्य पिडनमृकिंचित, जैन धर्म स उच्चते ।।"

हर्षा! जैन धर्म व्यक्ति प्रधान नही है? तेरी इच्छा हो तो दो दिवस में तैयारी करले, जयपुर में संस्कार सत्र मे जाना है। मैं प्री युनिवर्सिटी आर्टस् में जगत् के धर्मो का विषय ले चुकी थी इसलिये जैन धर्म के प्रति भी मेरी रुचि स्वाभाविक थी। जैन धर्म के प्रति मेरी रुचि का कारण इसकी गुण प्रधानता है। जैन धर्म में व्यक्ति के बाह्य गुणों को ही नही पर अन्तर के गुणों के प्रति श्रद्धा व्यक्त की जाती है। जिस प्रकार कोयल अपने मीठे वचनों से प्रियता प्राप्त करती है, उसी प्रकार जैन धर्म में व्यक्ति के बाह्य गुणों का नहीं, उसकी गरीबी या श्रीमंताई की नहीं, उसकी उच्चता या हीनता का नहीं परन्तु -आत्म गुण जो किसी व्यक्ति में होवे तो उसकी पूजा होती है।

ता० १२ मई ७२ को अहमदाबाद से रवाना होने को स्टेशन पहुँची। स्टेशन पर वातावरण को देखकर वास्तव में पूर्व जन्म का कोई सम्बन्ध है ऐसा मुझे मालुम पड़ने लगा। मैं अपने पूर्ण उत्साह से जयपुर पहुँची। शिविर में भी पहुँची। शिविर में भाग भी लिया, पर मुझे वहां एक ही दुःख सताने लगा कि काश मैं पहले के शिविरों में भी भाग ले पाती और महाराज श्री के पहले दर्शन किये होते तो अब तक कुछ जीवन में ज्यादा पा सकती।

आज १०-१२ दिन मे अपने परिश्रम से महाराजश्री के पास रह कर मैं बहुत कुछ पा सकी हूँ जैसे वृक्ष की जड अन्दर होती है वैसे ही शरीर मे यह आत्मा अन्दर होने पर भी मोक्ष का मार्ग दर्शाती है। जैन धर्म मे एक ही प्रश्न है कि मैं कौन हू ? सवेरे मे यह प्रश्न हृदय मे घर कर दिनभर इसका स्मरण करना यह जैन धर्म का मूल है। आत्मनिरक्षरण है।

तत्व ज्ञान क्या है ? जगत् क्या है ? मानव किसे कहे ? वगैरे विषयो मे पहले करता अब अधिक जानने लगी हू। पर सम्पूर्ण ज्ञान नही होने से कई बार कितनी तकलीफ होती है यह मेरा स्वय का अनुभव है। शिविर के प्रथम दिवस नया ज्ञान ग्रहण करने की दृष्टि से महाराजश्री का यह वाक्य मैंने याद कर लिया कि कोई मिले उनसे "जय जिनेन्द्र" कहना। मुझे पहले पहल एक साध्वीजी मिले। मैंने जय जिनेन्द्र कहा। मैंने समझा, मैंने जो पाया है उसका सही उपयोग किया है। पर साध्वीजी महाराज ने समझाया कि साध्वीजी महाराज को "मत्थेण वदामि" कहा जाता है। मेरी भूल को जानकर मैंने खेद अनुभव किया। छोटी २ बालिकाओ को सामायिक, प्रतिक्रमण, वन्दितु सूत्र बोलते देखकर मुझे बहुत दु ख होता है कि मैं बोलना तो दूर पर मुँहपती भी ठीक से हाथ मे ले सकती नही हूँ ? मेरी साथ की बहनो के ज्ञान के मेरे मे न होने पर मुझे काफी अफसोस होता है। इस पर भी महाराजश्री के इस शिविर की बहिना का सहयोग मुझे खूब मिल रहा है। और अब तो मैं जैनेतर नही पर जैन हूँ ऐसा शिविर मे अनुभव होने लगा हूँ।

प्रात मैं जिन पूजा, गुरु वदन, थाली धोकर पीना, भोजन करते वक्त मौन रखना, रात्रि भोजन का त्याग, सामायिक प्रतिक्रमण वगैरा से पुण्य कमबध होता है। अपने कर्म बधन तो दिनभर हर जगह करते ही रहते हैं, परन्तु शिविर मे रहने पर उसकी दिनचर्या माफिक कर्म बधन थोडा होता है और पुण्य कर्म का वध अधिक। तत्वार्थ सूत्र सीखने से ज्ञान होता है कि यह केवल जैनो के लिए ही नही है परन्तु हरेक मानव के लिए यह सूत्र है। यह तो बिल्कुल ही सही वाक्य है।

"सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्ग ।"

हरएक मनुष्य मन की एकाग्रता से दर्शन, ज्ञान, चारित्र की आराधना कर मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इस सूत्र मे जीवन का वास्तविक सार है—शरीर मे रही हुई आत्मा की पहिचान सच्चा मोक्ष है।

मुझे माफ करें मैं जैनेतर हू फिर भी महाराजश्री के दर्शन होने से जो ज्ञान प्राप्त कर रही हू उससे मै कुछ समझ सकी हू। नवकार मत्र, इच्छकार सूत्र, खमासणा सूत्र, अभुठियोमी के सम्बन्ध मे मैं कुछ जानने लगी हू। इनको जीवन मे उतारने का प्रयत्न कर रही हूँ। अब तक ये सब ज्ञान प्राप्त न कर सकी, इसका अफसोस रह जाता है।। पर गुजराती मे कहावत है—"जाग्या त्यार थी सवार।" इस मूजब अब आगे जब भी शिविर होगा, मैं महाराज सा० की सेवा मे पहुँच जाऊगी। साथ ही अपनी दूसरी जैनेतर बहनो मे शिविर का खूब प्रचार करूगी।

एक नवीन प्रयोग

श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव

प्रधान अध्यापिका M.A.B.T. (शिविर विद्यार्थिनी)

प्रयोग अथवा परीक्षण जहाँ एक ओर स्पष्ट प्रामाणित एवं शुद्ध वैज्ञानिक अध्ययन का साधन है, वहाँ दूसरी ओर हमारी मननशीलता जागरूकता एवं क्रिया शीलता का परिचायक भी है। वस्तुतः जीवन स्वयं एक प्रयोग शाला है जहां नित्यप्रति अनेक विचारों भावों एवं आदर्शों का परीक्षण स्वतः चलता रहता है। अपने इस परीक्षण के साथ साथ हमारा यह भी कर्त्तव्य है कि हम दूसरों के विचारों आदर्शों एव प्रयोगो को हृदयंगम करें तथा उनमें अपना सहयोग प्रदान करें। इसी संदर्भ में जब कुछ दिनों पूर्व आत्मानन्द सभा भवन की ओर से एक नैतिक एवं धार्मिक "संस्कार अध्ययन सत्र" को हमारे विद्यालय भवन में सचालित करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया तो विद्यालय परिवार एवं संचालक मंडल, जो सदा से ही व्यक्ति, समाज अथवा देश के सर्वाङ्गीण विकास मे योग देना अपना कर्त्तव्य मानता है, उन्हें यह नवीन आयोजन रुचिकर ही प्रतीत हुआ तथा सहयोग एवं स्वीकृति भी प्राप्त हो गई। आयोजन का प्रारम्भ १४ मई को 'समाजरत्न' श्री राजरूप जी टांक के कर कमलों द्वारा आत्मानन्द सभा भवन में भव्य उद्घाटन द्वारा प्रारम्भ हुआ।

प्रश्न उठ सकता है कि इस प्रकार के आयोजन की अपेक्षा क्यों? क्या किसी धर्म अथवा किन्हीं व्यक्ति विशेष की राजनैतिक, व्यावसायिक अथवा सामाजिक ख्याति प्राप्ति की दृष्टि से? अथवा किसी महात्मा विशेष के वैयक्तिक प्रभाव के कारण? वस्तुतः ये सभी कारण अपने आप में अपूर्ण एवं एकांगी है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार के पुनीत कर्म–प्रतिपादन की भावना कुछ आध्यात्म तत्त्व के ज्ञाता, धर्म प्राण तथा संस्कार–शील व्यक्तियो में उत्पन्न हुई तथा उन्होंने अपने समाज की नयी पीढी (केवल छात्राओं) के अन्तःकरण मे कुछ सशक्त संस्कार एवं आचरण निष्ठा के बीज आरोपित करने की दृष्टि से ही इस संस्कार अध्ययन–सत्र का संचालन किया। यद्यपि सत्र का संचालन जैन साध्वी पूज्या श्री निर्मला श्रीजी की अध्यक्षता में किया गया फिर भी सभी जाति एवं धर्म के लोगों को स्थान देकर उन्होंने इस देश की संस्कृति के अनुसार ही अपनी उदारता एवं विशालता का परिचय दिया है।

किसी भी कार्य की उपादेयता उसकी सामूहिक उपयोगिता एवं परिस्थिति सापेक्षता पर निर्भर करता है। आज देश की प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के अन्यान्य प्रयत्न किये जा रहे हैं। शिक्षा का अपरिमित विकास, नये बांध, नवीन योजनाओं का निर्माण आदि। परन्तु इन सब कार्यो मे हमें कितनी सफलता मिल पाती है? देश के हर स्तर पर व्याप्त अनाचार, भ्रष्टाचार, नैतिक–पतन,

धोखाधड़ी एव व्यभिचार से आज प्रत्येक सुशिक्षित व्यक्ति का मानस व्यथित हो उठता है। ऐसा क्यों ? क्योंकि हमारा नैतिक-पतन हो चुका है। हम अपने धम एव सास्कृतिक परम्पराओ को तिलाजलि दे बैठे हैं, तथा वाह्य जीवन एव भौतिकता वादी दशन को ही जीवन का लक्ष्य मानने लगे हैं। इसी कारण धन-सम्पत्ति ऐश्वर्य एव सुख-साधनो के अधिकाधिक अजन मे ही अपने जीवन की साथकता स्वीकार करने लगे हैं। जब कि हमारे देश की सस्कृति इन वस्तुओ से परे दान, तप, शील एव भावना पूर्ण जीवन-निर्वाह करने की प्रेरणा देती है। यह तभी सम्भव हो सकेगा जब हम अपने जीवन को समझने अथवा जानने का प्रयत्न करें। यह प्रेरणा हमे कहा से प्राप्त हो सकती है ? सरकार अथवा अन्य शिक्षण सस्थायें शिक्षा दे सकती हैं, परन्तु ज्ञान नही। इस सम्यक् ज्ञान अथवा दृष्टि के लिए हमे अपनी सास्कृतिक परम्पराओ एव धार्मिक सस्कारो की शरण लेनी पडेगी, जिनका प्रस्फुरण इस प्रकार के नैतिक शिवरो द्वारा ही सम्भव हो सकेगा।

इस शिविर की विशेषता केवल इसके प्रारम्भ एव सचालन मे ही नहीं है वरन् इसकी विशिष्ट कार्य प्रणाली के कारण भी है। जीवन एक सलिष्ट कला है जिसे पूण सफल बनाना भी सरल नही है। इस दृष्टिकोण को ध्यान मे रखते हुये ही यहा की पाठ्य विषय एव प्रणाली का निर्धारण किया गया जिसमे आध्यात्मिकता का पुट आद्योपान्त बना रहा है। कायक्रम का प्रारम्भ—

नमोकार मत्र एव 'मेरी भावना" प्राथना से प्रारम्भ होकर समस्त वातावरण को शान्त एव स्निग्ध बनाने मे सहायक होता है। साथ ही मन मे आस्था के भावो को जागते हुये सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति की पीठिका भी तैयार करने मे सहायक होता है सम्यक् ज्ञान ही सम्यक् दर्शन का आधार है अत शिक्षार्थियो को तत्त्व ज्ञान का प्रारम्भिक बोध कराना भी आवश्यक समझा गया। उनके जीवन मे एक स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास हो इसीलिये जीव जगत् पापपुण्य कम बन्धन ध्यान तप आदि के स्वरूप की अवधारणा की गई जिससे वे व्यवहारिक जीवन मे शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त हो सकें। शुभ कर्मों की सम्प्राप्ति ही सफल मानव जीवन का आधार है।

सक्षेप मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि सीमित समय और सीमित साधनो का प्रयोग करते हुये पूज्य श्री साध्वीजी ने छात्राओ के जीवन को ज्ञान से अनुप्राणित करने का प्रशसनीय प्रयास किया है। शिविर का एक महत्वपूर्ण अग अन्तर्प्रान्तीय सम्मिलन भी हैं। गुजरात से आने वाली किशोर छात्राओ की धमनिष्ठा गुरुभक्ति एव धम-प्रेम विशेष प्रेरणा का केन्द्र-विन्दु है। इन छात्राओ की नियमित एव सयमित दिनचर्या देखकर मन मे बडी प्रसन्नता एव श्रद्धा उत्पन्न होती है।

भारत एक धम-प्राण देश है। इस धरती पर विविध मतमतान्तर, धम सम्प्रदाय, जाति एव भाषादि जन्म लेते रहे हैं। प्रश्न उठ सकता है कि विविध धम एव सम्प्रदाय एक कैसे हो गये या उनमे कौन सा तत्त्व समान रहा। इस स्थान पर हमे धम के वास्तविक स्वरूप को समझने की आवश्यकता है। धम के दो रूप है (१) उपासना (२) आचरण। यहा सभी धर्मों की उपासना पद्धति भिन्न रही हैं परन्तु रूपान्तर से उनका लक्ष्य आत्मसाक्षात्कार ही रहा है। इससे भी प्रमुख बात यह है कि सबने आचरण पक्ष को समान महत्त्व दिया है। वस्तुत [illegible] ही उन्नत जीवन, परिवार एव समाज का आधार है। आज के इस बुद्धिवादी युग [illegible] से उपासना से अधिक आचरण

का महत्त्व है। हमें देश के वर्तमान एवं भावी नागरीकों में सदाचरण के संस्कार फूंकने की आवश्यकता है। हमारे देश के सन्त महात्मा मुनि एव त्यागी इस कार्य में अपना अद्भुत कौशल प्रदर्शित करते आ रहे है। अभी हाल में ही असद्वृत्तियों के शिकार डाकुओं का आत्म समर्पण इसी आध्यात्मिक विजय की ओर संकेत करता है। फिर भला हम इस आशा का त्याग क्यों करें कि हमारे भावी–नागरीकों को स्वस्थ एवं सही दिशा का अनुगमन नही कराया जा सकता है। मेरे विचार से राष्ट्र और समाज की प्रगति को ध्यान में रखते हुए हम इस प्रकार के धार्मिक एवं नैतिक आयोजनों में अपनी आस्था वनाये रखेगें। इस दिशा मे किया गया वह प्रथम प्रयास निश्चय ही भविष्य की सुनिश्चित सफलता का सुदृढ़ आधार वनेगा। केवल इतना ही नहीं जैन समाज एवं जैन साध्वी के माध्यम से जिस पवित्र कार्य का सभारम्भ हुआ है वह निश्चय ही आगे बढ़ेगा।

अन्त में इस प्रयोग के प्रणेता, प्रेरक संचालक एवं कार्यकर्ता सभी धन्यवाद एवं प्रशंसा के पात्र है, साथ ही समाज के दूसरे लोग भी इससे लाभान्वित एवं प्रेरित होते हुए इस प्रकार के कार्यो में तन मन एव धन से सहयोग देने की इच्छा प्रकट करेंगे जिससे आगामी वर्षो में भी इसे संचालित किया जा सके।

× × ×

स्त्री–स्वातंत्र्य

"भगवान महावीर ने साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविका रूप चतुर्विध संघ की संस्थापना की। महासती चंदनवाला नामक राजकुमारी को, कि जिसे गुलाम के रूप में वेचा गया था, ३६००० साध्वी संघ की नायिका के रूप में स्थापित किया गया।

"अभिमानी पुरुषों की ठोकरों से अपमानित नारीजाति ने भी भगवान को प्राप्त कर उर्ध्वगामी वनने का प्रयत्न किया। भगवान ने सामाजिक और धार्मिक अधिकारों से वंचित मातृजाति के लिये स्वातंत्र्य के द्वार खोले। भगवान महावीर कहते थे कि धर्म का सम्वन्ध आत्मा से है। स्त्री और पुरुष के लिंग भेद के कारण उसके असली मूल्यों में कोई अंतर नहीं पड़ता। जिस प्रकार धर्माराधना में पुरुष स्वतन्त्र हैं उस प्रकार स्त्रियाँ भी स्वतन्त्र है। दोनों ही, कर्मवन्धनों को काट कर मोक्ष प्राप्त करने में समान अधिकारी है। ·······

"स्त्रियो की शक्ति अपूर्व है, किन्तु उन्हें अपना गौरव का ख्याल नहीं है इसलिये नारी का अपमान और अवहेलना होती है। उनका आत्मभावन जव जगेगा तव स्त्री–शक्ति जागृत होगी।"

साध्वी निर्मला श्रीजी–

नैतिक जागरण

—पारसमल कटारिया

आज विश्व प्रलय के कगार पर खडा है। जो विज्ञान शाति प्रेम के लिए आवश्यक था वही प्रलय के नये नये आयुध बना कर प्रलय की रफ्तार मे अत्यन्त उग्रता का समावेश कर रहा है। मानव विकृतियो का शिकार हो रहा है। जिन चीजो को हेय समझते थे उन्ही के प्रति हम आकर्षित होते जा रहे हैं। मद्यपान जीवन का सहज सरल पेय सा बन रहा है। नशे के लिए एम एल डी लिया जाता है क्योकि शराब के नशे से सतुष्टि नही होती है। चारित्रिक विकृतिया भी सर्वविदित हैं। इसके विश्व मेले लगते हैं जिनमे भद्र समाज सम्मिलित होकर अपने को धन्य मानते हैं। क्रूरता, हत्या, लूट, कामोत्तेजना आदि पनपाने वाले अनेक पथ बन गये हैं। नियति के जो शाश्वत नियम हैं उनके विरुद्ध आचरण क्रातिकारी कदम कहा जाता है। नैतिक आध्यात्मिक गुणो का ह्रास हो रहा है और मानवता कौडियो के मोल बिक रही है। माता-पिता एव गुरुजनो का आदर, सेवा करना दकियानूसी के दायरे मे आने लगा है। उनके लिए वृद्धाश्रम खुल रहे हैं।

जो सिद्धान्त हमारे ऋषि-मुनियो ने प्रतिपादित किये थे, जो शाश्वत एव सर्वजन हिताय गिने जाते थे, जो अपने आप मे पूर्ण एव मार्ग दर्शक स्वरूप थे, उन्हे खोखला एव ढकोसला मानने लगे हैं। आज विश्व का बृहत् समाज अपने स्वार्थ मे अन्धा होकर दूसरो को अनेक प्रकार की यातनायें देना या सम्पूर्ण विश्व को नष्ट करने के अनेक प्रयत्न करते हैं। ऐसा लगता है कि अशाति को ज्वाला तीव्र से तीव्रतम वेग से धधक रही है और उसे बुझाने का कारगर उपाय नहीं किया गया तो इस धराधाम पर मानवता का नामोनिशान ही मिट जायेगा।

ऐसे दूषित वातावरण मे धर्मरूपी पवित्र समीर की बयार अत्यन्त आवश्यक है। नैतिकता रूपी वृक्ष का सिचन तथा अध्यात्म रूपी मेघो से धधकती ज्वाला शान्त करनी है। जो धर्म शास्त्र इहलोक एव परलोक दोनो के लिये प्रकाश स्तम्भ हैं उनका पुनरुद्धार करना है और आदर्शमय सस्कार रूपी सजीवनी से जीवन का सचार करना है। अगर धर्म शास्त्र के मार्ग निर्देशन के अनुसार हम नही चलते हैं तो विनाश के कगार पर खडे मानव गहरे समुद्र मे छपाक छपाक गिरकर हमेशा के लिये नष्ट हो जायेंगे।

यह हमारा अहोभाग्य है कि आज भी अनेक साधू-सत एव साध्विया भविष्य के महान खतरे से उबारने का अथक प्रयत्न करते हैं।

आज की बहनें एवं पुत्रियाँ भावी मातायें बनेंगी। अगर हमने उनमें सही धार्मिक ज्ञान एवं मानवता के उच्च गुणों से पूरित कर दिया या उन्हें नैतिक या संस्कार मय बना दिया तो हो सकता है कि इस झंझावात पर भी काबू पाया जा सकेगा। प्रेम एवं दया के पवित्र जल से मानवता की फुलवारी खिल उठेगी।

इसी भावना से ओतप्रोत होकर जयपुर में संस्कार अध्ययन सत्र का आयोजन किया गया है। जिससे महिलाओं को एवं बालिकाओं को धर्म का मर्म समझाया जाये। उन्हें सुसंस्कारमय बनाकर धर्म के अनेक अमूल्य गुणों से अवगत कराया जाये। आदर्श जीवन की रूपरेखा तैयार कर, उन्हें सतपथ की प्रकाश किरण से अवगत कराया जावे। जिससे अत्याचार एवं अनाचार की भावना उनके हृदय सरोवर में कलरव न करे।

अगर बहनों एवं महिलाओं में सुसंस्कार नैतिकता एवं उच्च आदश की लहरें उठने लगें तो इस विश्व में जो अवगुण एवं कुकर्मो की विभीषिका है वह नष्टप्रायः हो सकती है। वर्तमान की बहनें भावी माताये बनेगी। उनके पवित्र जीवन का असर उनके पुत्र एवं पुत्रियों पर पड़ेगा और वे सुसंस्कारमय बन जायेंगे जिससे हमारी भावी पीढ़ी की उन्नति में चार चांद लग सकते हैं। सुसंस्कारमय बहनें जब वधु बन कर जावेगी तो वहां भी गुणों की महक फैलायेंगी और अवगुणों की दुर्गन्ध अपने आप ही मिट जावेगी। जो संसार में नैराश्य और जीवन के कण-कण में विष फैल गया है उसमें प्राण का संचार होगा और शनैः शनैः विष का प्रभाव खत्म हो जावेगा। परन्तु अगर हम उन्हें सुसंस्कार-मय एवं नैतिक नहीं बनाते हैं तो यह संसार भयानक से भयानकतम हो सकता है क्योंकि महिलायें ही जीवन की धुरी है जिसका सही एवं संतुलित होना आवश्यक है।

जैसे जैसे गहन विचारों में गोते लगाता हूँ वैसे वैसे अन्तर्मन पुकार पुकार कर यही कहता है कि संस्कार अध्ययन सत्र या उसके समकक्ष ऐसे आयोजन होना अत्यन्त आवश्यक है। उसे पुनीत कर्म या धर्म की संज्ञा दी जावे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

जो कार्य शास्त्र सम्मत हो, जहां नैतिकता के सरोज खिलते हैं या आध्यात्मिक धरातल पर सत्य, अहिंसा, दया, ब्रह्मचर्य आदि की अनेक वाटिकायें फलती फूलती हों उसकी अवगणना करना या उसमें दोषारोपण करना हिमाकत होगी। सुन्दर सुवासमय पुष्प में दुर्गन्ध खोजना या दुर्गन्धयुक्त पुष्प बताना मस्तिष्क की विकृति ही कहेंगे।

मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि नैतिक जागरण की लौ जलती रहनी चाहिए और उसे इतना सशक्त बना दिया जावे कि झंझावात के सामने भी वह ज्ञान दीपक टिमटिमाता रहे।

वर्तमान युग में शिविर की आवश्यकता और उसके लाभ

लेखिका शाह निरूपमा प्रमोदचद
(एस वाय बी ए शिविर की छात्रा)

-युग युग परिवर्तनशील है । नैतिक मूल्य तो सनतान है परन्तु वसत के नवपल्लवित वृक्षो की तरह उनका स्वरूप वदलता रहता है । प्रथम युग और पचम युग मे नैतिक मूल्य के स्वरूप मे अत्यन्त भिन्नता है । प्रथम युग श्रद्धा एव विश्वास का था परन्तु आज का भौतिकवादी मानव विज्ञान के सहारे आगे वढ रहा है । प्रकृति की सहायता से आज का जीवित मानव प्रकृति का रहस्य वन रहा है ।

परन्तु अध्यात्मिक दृष्टि से विल्कुल ही विरोधाभास सा लगता है । जिस आर्य सस्कृति मे हिंसा, लूट, अत्याचार को महापाप गिनते थे, जहा घरो मे ताले नही लगते थे तथा चोरी का नामो निशान नही था । राजनीति मे भी नैतिकता का समावेश था परन्तु आज अनैतिकता का ज्वलत उदाहरण देने के लिए वगला देश के अत्याचारो का तान्डव नृत्य तथा अनैतिकता देख कर रोगटे खडे हो जाते हैं । अपनी आध्यात्मिक सस्कृति के गुणो के झरणे सूखते जा रहे हैं । सत्ता एव भोग विलास की प्राप्ति ही जीवन का ध्येय वन गया है । छल कपट एव प्रपच द्वारा सिद्धि की प्राप्ति करना आज मानव का ध्येय हो गया है ।

आज के आदर्श पुरुष मनस्वी, नरपु गव देश के कर्णधार नही हैं परन्तु अभिनेता हो गये हैं । आज हमे सीता नही परन्तु 'रीटा' वनना है । राम नही परन्तु राजकपूर या दिलीपकुमार वनने के सपने देखते हैं । सिनेमा, रेडियो एव प्रणय कथा की त्रिपुटि एक भयानक चिनगारी स्वरूप वन गई है । और यह नव पीढी को स्वाहा कर रही है । आज की शिक्षा डिग्री, नौकरी एव छोकरी की प्राप्ति-होने-पर पूर्ण समझी जाती है । सह शिक्षण के कारण आर्य देश के स्त्री पुरुषो की मर्यादा में घुन लग गया है । पूर्व जन्म और पुनर्जन्म के विचार सदेह की दृष्टि से देखे जाते हैं ।

मानव ने भले ही भौतिक सिद्धियों का शिखर सर कर लिया हो परन्तु अध्यात्म के दृष्टिकोण से तो अवश्य ही अधोगति के गहरे गर्त में गिरा हुआ है। हमें जीवन रथ में अध्यात्मिक एवं व्यवहारिक शिक्षा के दो पहिये लगाने हैं जिससे जीवन का रथ अपने गन्तव्य में पहुँच सके इसलिए शिविर की अत्यावश्यकता है, जहां आध्यात्मिक शिक्षण दिया जाता है। लड़कों के शिविर तो जगह जगह होते हैं परन्तु बालिकाओं के लिए यह सुविधा अत्यल्प है। आज की पुत्रियां भावी मातायें है अगर वे सुसंस्कारी होंगी तो उनकी संतान भी संस्कारमय होगी। व्यवहारिक शिक्षा में अध्यात्मिक विषय का अभाव रहता है।

आज की उच्च शिक्षा प्राप्त बहनों को धर्म व अधर्म क्या है? ईश्वर, जगत्, पाप, पुण्य, स्वकर्तव्य क्या है? क्यों पाप देय और पुण्य उपादेय है? सदाचारी क्यों होना है? कर्म क्या है? क्या पूर्वजन्म या पुनर्जन्म होता भी है? आदि का भान ही नहीं है परन्तु शिविर के द्वारा उनको शंकाओं का समाधान हो जाता है।

अज्ञानता तथा निराशा तर्क से समझ कर दूर की जाती है तथा सच्चे ज्ञान की प्राप्ति कराई जाती है। इसी तरह अनेक गुत्थियों को सुलझा कर धर्म के प्रति श्रद्धावान बनाया जाता है। सूत्रों का अर्थ, सामायिक, देववंदन, गुरुवंदन, नवकारनीति विहार वगैरह पच्चकखान आदि की उपयोगिता बताकर उनके करने को प्रेरणा दी जाती है। रात्रि भोजन एवं कंदमूल को त्याग दिया जाता है। इस तरह गुणों का विकास कर कई बहने देश विरती एवं सर्व विरती धर्म के सोपान तक पहुँच जाती है और मोक्ष मार्ग की पथिक बनती हैं। जैसे एक दीपक से अनेक दीपक ज्वाजल्यमान हो सकते हैं इसी तरह शिविर की सुसंस्कारमय लड़किया अनेको को सुसंस्कारवान बना सकती हैं। अनेक प्रांतों को लड़कियों के सामूहिक रहने से राष्ट्रीयता की भावना को प्रोत्साहन मिलता है। एक दूसरे की संस्कृति एवं विचार का आदान प्रदान होता है। कई महान विद्वान, त्यागी, तपस्वीयो के सार गर्भित भाषण एवं संस्मरणों का भी लाभ प्राप्त होता है। जो हमारी आत्मोन्नति में सहायक स्वरूप है।

आत्मा की उन्नति एवं उपयोगिता देखते हुए शिविर बहुत ही विशाल रूप में होने चाहिए। जैन समाज में साधू साध्वियों की बहुतायत है। अगर सब गच्छ के साधू साध्वी मिलकर शिविर के कार्य में सहयोग प्रदान करें तथा धनाढ्य लोग अपनी सम्पत्ति को मौज, शौक, भोग विलास, लग्न आदि में कम करे अगर शिविर के सदुपयोग में लगावे तो उनका द्रव्य सार्थक होगा।

समापन समारोह

—मोतीलाल भडकतिया

दिनाक १४ मई से प्रारम्भ हुए सम्कार अध्ययन सत्र का समापन समारोह दिनाक ११ जून १९७२ को प्रात ८॥ बजे श्री शिवजीराम भवन के प्रागण मे श्री दौलतमलजी भण्डारी, भू० मुख्य न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। श्री चन्दनमलजी वैद, वित्त मन्त्री, राजस्थान मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थे एव् प्रसिद्ध व्यवसायी सेठ मेहताबचन्दजी गोलेच्छा ने पारितोषिक वितरण किया।

इस अवसर पर शिविर की प्राण एव प्रेरक साध्वी श्री निर्मलाश्री जी, खरतरगच्छ की साध्वीजी श्री कल्याणश्री जी एव तेरापथी साध्वीजी श्री मजुलाश्री अपने शिष्याओ सहित उपस्थित थी। यति श्री चद्रकीर्तिसागरजी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। समाज के प्रतिष्ठित नागरिको सहित भारी सख्या म जन समुदाय इस आयोजन की शोभा बढ़ा रहा था।

समारोह की कार्यवाही सुश्री पन्ना बहिन एव शिविरार्थी बहिनो द्वारा प्रस्तुत मङ्गलाचरण के साथ प्रारम्भ हुई। सघ मन्त्री श्री हीराचन्दजी वैद ने आगन्तुक महानुभावो का स्वागत करते हुए शिविर की सारी गतिविधि पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार इस शिविर मे न केवल जैन समाज के सभी वर्ग तपागच्छ, खरतरगच्छ, स्थानवासी एव तेरापथी समाज का ही पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ अपितु दिगम्बर समाज एव जैनेतर लोगो का भी किस प्रकार सहयोग प्राप्त हुआ और भगवान महावीर के आगामी २५००वें निर्वाण वर्ष मे सामाजिक एक्ता किस प्रकार कायम की जा सकती है इसके प्रारम्भिक स्वरूप का वैसा अभिनव आयोजन सम्पन्न हो सका।

इस अवसर पर प्रकाशित की गई स्मारिका का विमोचन, तपागच्छ सघ के उपाध्यक्ष श्री हीराभाई ने स्मारिका की प्रति साध्वी जी श्री को अर्पित कर, किया।

तेरापथी समाज की साध्वी जी श्री मजुला श्री ने शिविरार्थी बहिना को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहाकि उत्पत्ति और विनाश अवश्यम्भावी है उसी प्रकार शिविर का जो आरम्भ हुआ उसकी पूर्णाहुति भी निश्चित है, लेकिन हमे इस अवसर पर यह देखना चाहिए कि शिविर मे हमने क्या खोया और क्या पाया। मैं आशा करती हूँ कि जो कुछ बहिने मे सीखा है उसको वे अपने जीवन मे उतारेंगी।

शिविर का आयोजन क्यों ?

पं० ईश्वरलाल जैन, न्यायतीर्थ, जयपुर

स्कूलों और कालेजों के धर्म-संस्कार देने की पद्धति सरकार की धर्मनिरपेक्ष-नीति के नाम पर लुप्तप्राय हो गई है। अपने-अपने धर्म या सम्प्रदाय के नाम पर समाज से पर्याप्त धनराशि प्राप्त करके भी जिस नाम से वे संस्था चला रहे हैं उस धर्म की शिक्षा देने का न उन्हें अधिकार रह गया है और न ही उन मे इसका साहस। जैन समाज की पुष्कल धनराशि से चलने वाली जैनियो की सैकड़ों संस्थायें विद्यमान हैं, परन्तु वे जैनधर्म के संस्कार देने के लिए किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रहे हैं। सरकार द्वारा मिलने वाली आर्थिक सहायता के वन्द हो जाने की आशंका एवं भय से उन सस्थाओं के कर्ता-धर्ता धर्म-संस्कार देने का अवसर भी अपने हाथ मे खो चुके है। वे उन संस्थाओं में धर्म-शिक्षा अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित नही कर सकते, ऐसे विषय की परीक्षा नही ले सकते, उसे वालको के लिए अनिवार्य नही कर सकते और न ही उसमे रुचि रखने वाले विद्यार्थियो को प्रोत्साहन देने के लिए पारितोषिक आदि दे सकते हैं।

विचित्र परिस्थिति तो यह है कि इन संस्थाओ के प्रशिक्षक-अध्यापक की देख-रेख में वालकों को सामूहिक रूप से सिनेमा दिखाने का आयोजन तो कर लेते हैं, उसके लिये अभिभावको से पैसे भी मँगा लिए जाते है वहां जाने से वालकों के संस्कार बिगड़ने का भय व आशंका न अध्यापको को है और न ही अभिभावकों को। सरकार को भी इसमें कोई आपत्ति नहीं। परन्तु जिस कार्यक्रम में किसी प्रकार का खर्च नहीं, ऐसे मन्दिर या धर्म-स्थान पर बच्चों को सामूहिक रूप मे ले जाकर कुछ ज्ञान देने या संस्कार डालने का आयोजन या प्रदर्शन नहीं कर सकते।

यदि कहीं गुरुकुल पद्धति पर धार्मिक संस्थायें सरकार की सहायता के विना स्वतन्त्र रूप से चल भी रही हैं तो आजकल के विद्यार्थी स्कूल-और कालेज में प्रवेश पाने का मोह छोड़ कर वैसी धर्म-संस्थाओं में प्रविष्ट नहीं होना चाहते और न ही अभिभावक ही ऐसी रुचि रखते हैं ऐसी स्थिति में वच्चों को अच्छे संस्कार मिलें तो कहाँ से ?

ऐसी परिस्थितियों व वातावरण में संस्कार अध्ययन शिविर लगाने की परम आवश्यकता प्रतोत होती है और इसका अपना महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन को अध्यात्म की ओर प्रवृत्त करने, जीवन को उत्कृष्ट बनाने, जीवन की सफलता के सुन्दर स्वप्न सिद्ध करने, मनोदशा सुधारने मे नया परिवर्तन और नया मोड़ देने के लिये ऐसे शिविरो का महत्वपूर्ण योग है।

वर्षभर मे ग्रीष्मावकाश का ही कुछ समय ऐसा रह गया है जिस का सदुपयोग किया जा सकता है। ऐसे ही अवसर पर संस्कार अध्ययन सत्र जैसे शिविर का आयोजन करके वालकों को धार्मिक विचार दिये जा सकते है और उन्हें सुसंस्कृत किया जा सकता है।

धार्मिक संस्कारो के विना आत्मा का विकास नही हो सकता। दृढ़ मनोवल, कर्तव्यनिष्ठा, अपूर्व धैर्य और स्नेह युक्त सरल शक्ति है जो जीवन के एक-एक पद पर सहायक हो सकती है।

एक विद्वान के कथनानुसार "ससार भर मे जो भी सर्वोत्तम बातें जानी व कही गई हैं उन से परिचित करना ही सस्कृति है। शारीरिक अथवा मानसिक शक्तियो का प्रशिक्षण, दृढीकरण, प्रकटीकरण अथवा उनका विकास करना सस्कृति की देन है।

छोटे-छोटे पौधो को प्रारम्भ मे जितनी सावधानी से देख-भाल कर सिंचित करने एव पल्लवित करने का प्रयत्न किया जाता हैं, परिपक्व होने पर उनके लिये वैसे परिश्रम की आवश्यकता नही रहती।

इसमे सदेह नही कि बालको मे अनन्त शक्तिया छुपी हुई रहती है। उन गुप्त शक्तियो के विकास का साधन एव पल्लवित होने का सयोग अथवा अवसर मिलना चाहिये। बच्चो के कोमल हृदय मे अच्छे सस्कार वपन करने, मन को उज्ज्वल और उन्नत करने तथा उन्हे अपने कर्तव्य का ज्ञान कराने एव अच्छे सस्कारो के पोषण के लिये सबसे सुन्दर अवसर अथवा सबसे अच्छा साधन सस्कार अध्ययन सत्र शिविर है। शिविर मे अच्छे आचार, विचार और व्यवहार से जीवन की अच्छाई जानने का अवसर मिलेगा और उन्हे वे अपने जीवन मे अपनाने का प्रयत्न करेंगे।

शिविर तो किसी भावी तैयारी के लिये एक योजनाबद्ध अस्थायी पडाव है—जहा पर्वतारोही दल अपने शिविर स्थापित कर प्रशिक्षण और प्रोत्साहन के साथ उच्च शिखर पर पहुँचने की तैयारी करते है। क्रीडा शिविरो मे भिन्न भिन्न प्रकार के खेलो का अभ्यास एव प्रतियोगिताये होती रहती है। ऐसे अनेक शिविर आयोजनो की तरह अध्यात्म की ओर प्रवृत्ति के लिये, मोक्ष-मार्ग की प्रारम्भिक तैयारी एव बच्चो मे अच्छे धर्म सस्कारो का बीज वपन करने के लिये सस्कार अध्ययन सत्र शिविर महत्त्वपूर्ण कडी है।

—o * o—

मानव जीवन की सार्थकता के लिए जप-तप का नित्य नियमित साधन अनिवार्य है।

—तीर्थंकर ऋषभदेवजी

संस्कार अध्ययन सत्र

एक अभिनव आयोजन

ले० शिखरचन्द पालावत

विविधताओं से भरा हुआ भारत एक ऐसा देश है जहां हर प्रकार की भाषा, सस्कृति, सभ्यता और धर्म विद्यमान है और विना किसी प्रकार के वर्ग सङ्घर्ष के प्रगति की ओर अग्रसर है। धर्म के नाम पर भले ही यदा कदा सङ्घर्ष हो जावे लेकिन फिर भी हर धर्म को अपनी मान्यताओ और निष्ठा के अनुसार अग्रसर होने का पूर्ण अवसर प्राप्त है।

मनुष्य जीवन में धर्म का स्थान सर्वोपरि माना जाता रहा है। देश काल परिस्थिति के अनुसार धर्म के रूप और मान्यताए बदलती भी रहती है। धार्मिक आचार विचारों मे भी विभिन्नता होते हुए भी सभी धर्मो का मूल उद्देश्य यही है कि मनुष्य का जीवन ऐसा हो जिसमे न केवल वह सासारिक कार्यों मे रत होते हुए भी जीवन में सत्य, अहिसा, सदाचार, शील तप आदि को अपनाए जिससे न केवल उसका वर्तमान सासारिक जीवन स्वच्छ, शातिपूर्ण और निर्मल रहे अपितु वह भावी जीवन के लिए भी ऐसी पृष्ठभूमि तैयार करे जो उसे मोक्ष मार्ग की ओर उन्मुख रखते हुए कम से कम उच्च गति की ओर तो अग्रसर रखे ही। पुनर्जन्म के पश्चात् स्वर्ग की कल्पना को थोड़े समय के लिए अलग भी रख दे तो भी इसी जीवन के लिए भी इनकी आवश्यकता कम नही है। और इसीलिए हर धर्म के अधिष्ठाता, संत, मुनि, पंडित सभी का निरंतर प्रयास यही रहता है कि इस भौतिकवादी युग में, जब कि मनुष्य न केवल आध्यात्मिक विचारधारा को अपितु अपनी पारस्परिक मान्यताओ को भी तिलांजलि देकर भौतिकवादी उपलब्धियों की ओर निरंतर दौड़ रहा है, इस प्रकार के विचारों का समावेश करे कि जिससे वह सदाचार पूर्ण जीवन जी सके। अपने अस्तित्व एवं अपनी ही स्वार्थपूर्ति में आज का मानव सभी मान्यताओं को परे रखकर अपनी ही इच्छाओं की पूर्ति में संलग्न है और इसी का परिणाम है कि निरंतर उपदेश सुनने के वाद भी उनका प्रभाव मनुष्य जीवन मे दिखाई नही देता। प्रतिदिन हम व्याख्यान भी सुनते है, सेवा पूजा भी करते है, सामायिक प्रतिक्रमण भी करते है लेकिन कभी इतना विचार करने का प्रयास भी नही करते कि क्या ये केवल दिनचर्या के अङ्ग ही है अथवा इनके द्वारा मनुष्य को अन्तर्मुखी होकर अपने मूल लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए प्रयत्नशील भी होना है।

जितने भी धार्मिक कार्यक्रम, आयोजन, प्रवचन आदि होते है उनमे अधिकांशतः उपस्थिति प्रौढ व वृद्ध जनो की ही रहती है जिनकी अपनी मान्यताए और विचारधारायें परिपक्व होती हैं और जिन्हें वदलना सुगम नही है। जिस प्रकार पके हुए घडे पर पानी नही ठहर सकता अथवा दूसरी मिट्टी नही चढ सकती उसी प्रकार परिपक्व विचारधारा को प्रभावित करना कठिन है। इसी स्थिति में यह नितान्त आवश्यक हो जाता हैं कि नव-अंकुरित पीढ़ी में प्रारम्भ से ही इस प्रकार के विचारों की शृङ्खला उत्प्रेरित की जाय और उनमें सदाचारपूर्ण भावों का ऐसा सृजन किया जाय जो उन्हें जीवन पर्यन्त सही दिशा प्रदान करता रहे।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आखिर क्या किया जाय? धार्मिक आयोजनो के मेले तो निरन्तर लगते

ही रहते हैं लेकिन उनके परिणाम आशातीत नही हैं। ऐसी स्थिति मे दूसरा मार्ग यह दिखाई देता है कि सामूहिक आयोजनो की अपेक्षा व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा इस ओर प्रयत्न हो।

पू० साध्वीजी श्री निर्मलाश्रीजी म० सा० का गत चातुर्मास जयपुर मे हुआ और तभी से उन्होंने इस ओर संकेत भी दिया कि नव-पीढी के लिए जिनमे विचारो को ग्रहण करने की क्षमता तो हो लेकिन जिनके विचार परिपक्व नही हुए हो उन्ह एक स्थान पर एकत्रित कर निकट सम्पर्क द्वारा प्रयास किया जाय। इसके लिए उन्होंने शिविर आयोजन का मार्ग दिखाया। इस प्रकार के शिविरो का आयोजन वे पहले गुजरात मे कर चुकी थी और राजस्थान मे भी अपने इस प्रयोग को लागू करना चाहती थीं। जब यह चीज समाज-के सम्मुख आई तो सभी का उत्साह जाग्रत हुआ और भले ही यह कार्य यहाँ की समाज के लिए नया था, इसके परिणाम के बारे मे अनभिज्ञता थी फिर भी समाज ने इस कार्य को अत्यन्त उत्साह के साथ उठाना निश्चित किया। दिनाक १४ मई से ११ जून, ७२ तक संस्कार अध्ययन सत्र का आयोजन का निश्चय हुआ और इसका दायित्व भी मुझ जैसे निर्बल कन्धो पर सौंपा गया। शिविर आयोजन की बात प्रकाशित होते ही जितनी बडी संख्या मे, जैन, जैनेतर और विभिन्न वर्गो ने सामूहिक रूप से इस आयोजन मे सम्मिलित होने की भावना जाहिर की वह अत्यन्त उत्साहवर्धक थी। इस समय शिविर मे लगभग सवा सौ बहिनें भाग ले रही हैं जो आठवी कक्षा से लेकर एम ए तक की शिक्षा प्राप्त हैं। इस आयोजन मे जिन दानदाताओं एव निस्वार्थ सेवाभावी कार्यकर्ताओं ने सहयोग दिया है वह भी अविस्मरणीय है।

निश्चय ही शिविर की सफलता का मानदड, इसमे सम्मिलित होने वालो की संख्या, अर्थ प्राप्ति अथवा कार्यकर्ताओं का सहयोग ही नहीं हो सकता अपितु शिविरार्थी बहिनों के जीवन मे कितना परिवर्तन आ सकता हैं, शिविर में प्राप्त शिक्षा को वे कितना अपने जीवन मे उतार सकती हैं, इस पर मुख्यत निर्भर करता है। हमे आशा करनी चाहिए कि जिस पुनीत उद्देश्य को लेकर यह अभिनव आयोजन किया गया है वह अवश्य सफल होगा और यदि शिविरार्थी बहिनों मे से कुछ एक के जीवन को प्रभावित कर सके तो यह इसकी महान उपलब्धि होगी।

—**—

मन, वाणी, कर्म से अहिंसा का पालन करने पर ही मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।

—भगवान् महावीर

शिविर की भूमिका, शिविर का उद्घाटन शिविर का समापन शिविरार्थियों की नामावली

शिविर का विचार कैसे बना, आयोजन हुआ, कैसे व्यवस्था हुई व कैसे समापन हुआ।
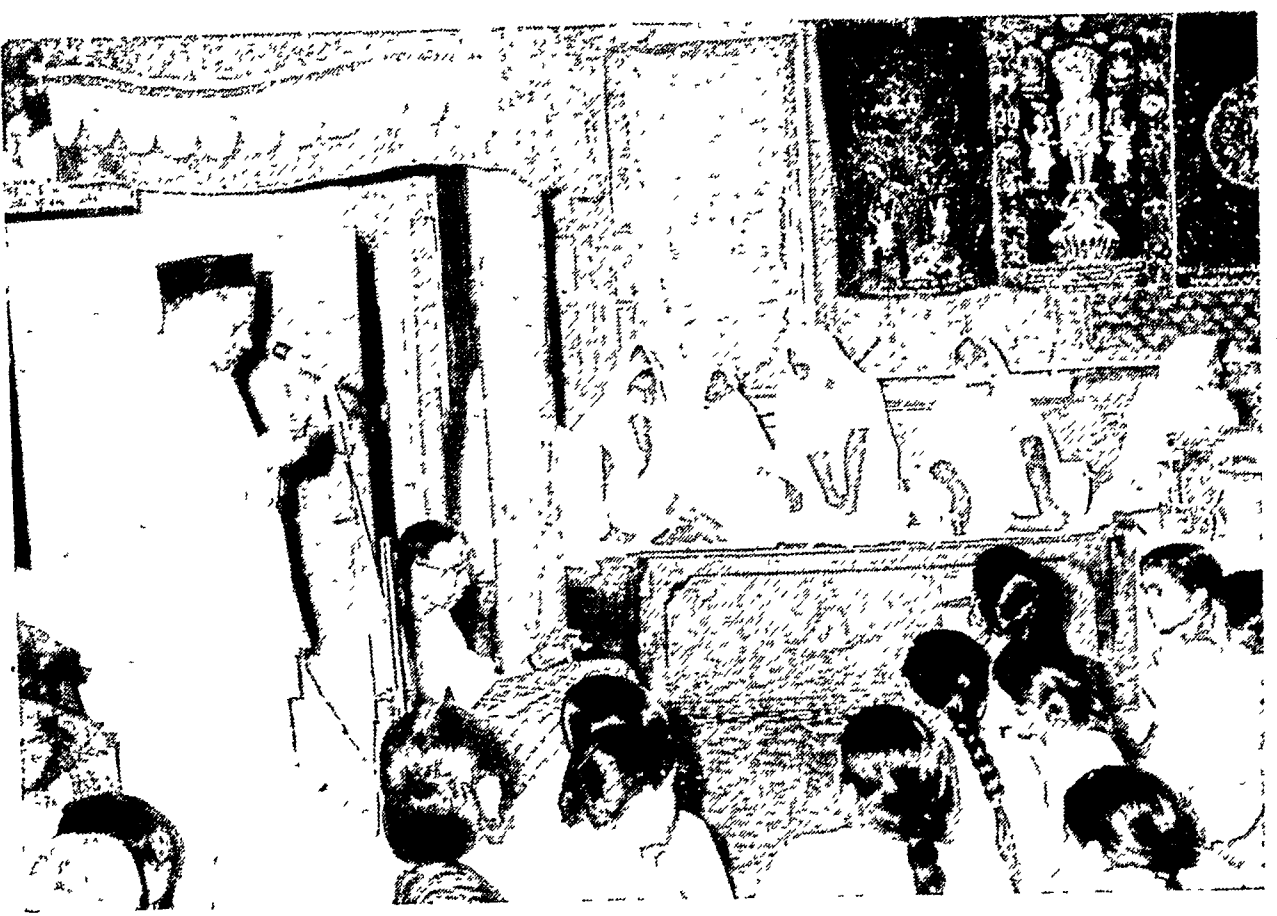
शिविर के संयोजक श्री शिखरचन्द पालावत आभार प्रदर्शित करते हुये।
सामने तेरापंथी समुदाय की साध्वीजी मंजू श्री जी बिराजमान हैं।

शिविर की बालिकायें जल-पान करती हुई।
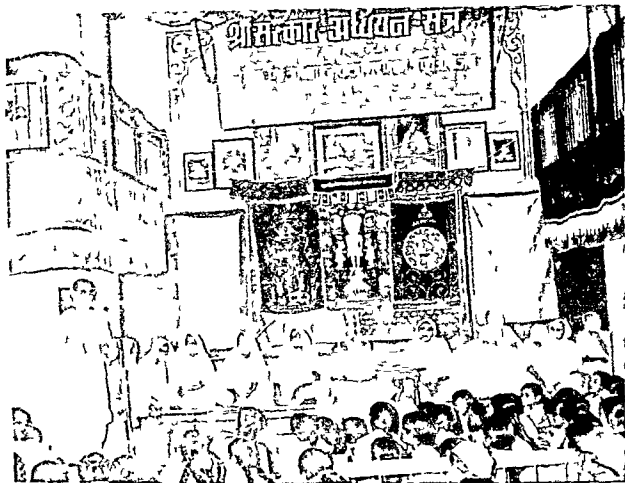
सस्कार अध्ययन सत्र के उद्घाटन समारोह मे
मुख्य अतिथि पद्मश्री खेलशंकर दुर्लभजी
भाषण कर रहे है ।
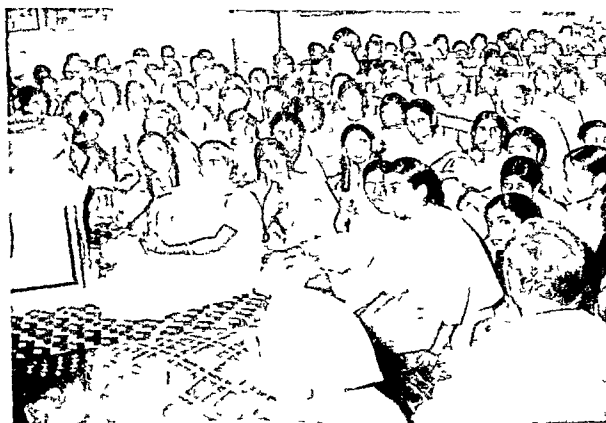
उद्घाटनकर्ता श्री राजरूपजी टाक व शिविर मे भाग लेने वाली बालिकाएं ।

मुझे इस शिविर उपस्थित होकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मैं हमेशा से यह सोचता रहता हूँ कि समाज के एक अविच्छिन्न अंग स्त्री समाज में जागृति पैदा करने एवं इन्हें सुसंस्कारयुक्त बनाने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। मैं इसके लिए अपने पास आने वाली सतियांजी एव साध्वीजी महाराज को प्रेरित भी करता रहता हूँ। जब मैं जयपुर में आया और संघ मन्त्री श्री हीराचन्दजी वैद ने मुझे बताया कि यहां साध्वी श्री निर्मलाश्रीजी के सान्निध्य में बहिनों का एक शिविर चल रहा है और मैं भी उसमें अपनी बात कहूं तो मुझे प्रसन्नता हुई। साध्वीजी का नाम ही निर्मला है और निर्मला के पास बैठने से निर्मलता ही प्राप्त होगी। उनके संरक्षण में शिविरार्थी बालिकाएं निश्चय ही अपने जीवन में मिठास, माधुर्य एवं सुशिक्षा प्राप्त कर सकेंगी।

स्त्री और पुरुप समाज के दो अभिन्न अ ग हैं। पुरुष वर्ग के उत्थान के लिए तो बहुत कुछ प्रयास किए गए हैं लेकिन स्त्री जाति के उत्थान के लिए अभी बहुत कुछ करना शेष है। वह स्त्री जाति ही है जिसने भीष्म, अर्जुन, प्रताप और शिवाजी जैसों को जन्म दिया है और यह उन माताओं की ही शिक्षा और शौर्य का प्रभाव है कि ऐसे २ महान् शूरवीर, ज्ञानी ध्यानी पैदा हुए हैं। उस धारक माता का उदाहरण हमारे सामने है जिसने चन्दनबाला जैसी महासती को जन्म दिया। उसके जीवन में कितने ही दुख आए लेकिन उसने फिर भी उसका दोष अपने कर्मो को ही माना। भगवान महावीर का उदाहरण हमारे सामने है। आधुनिक युग में भी कमी नही है और ऐसे २ शूरवीर हुए हैं जिन्होंने अपने देश और समाज का नाम रोशन किया है। जहां शिव और शक्ति दोनों साथ हो जायं वहां किसी समाज को बदलने में समय नहीं लग सकता।

मैं शिविरार्थी बहिनों को एक ही बात कहना चाहूंगा कि वे तीन बातों को अपने जीवन में ग्रहण करें–कम खाना, गम खाना और नम जाना। ये तीन चीजें यदि उनके जीवन में आ गई तो उन्हें भी सती सावित्री बनने मे देर नहीं लगेगी। भगवान महावीर की वाणी के अनुसार मृत्यु के अन्तिम क्षण तक अर्थात् दो चार स्वांस लेने में भी शेष हों, उस समय तक भी शिक्षाग्रहण कर सकते हैं। जमाने के साथ तो सभी चलते हैं लेकिन पुरुषार्थी और पुरुष तो वह है जो जमाने को बदल दे और जमाने को अपने साथ

लेकर चले। मैं तो यहा तक कहूँगा कि आज के युग मे केवल 'दया पालो' की ही आवश्यकता नही है वल्कि सदाचार के साथ शूरवीरता की भी आवश्यकता है। देश मे जिस प्रकार की हिंसा और अनाचार की स्थिति वन रही है उसको वदलने एव उसमे अपने आपको वचाने के लिए शूरवीर वनने की आवश्यकता है। जव हमारे अपने जीवन मे सदाचार, निष्ठा, शूरवीरता, दृढता सहित शालीनता होगी तभी हम जहाँ अपने जीवन का उद्धार कर सकेंगे वहाँ जैन धर्म का झण्डा भी ऊचा उडा सकेंगे। अव वह जमाना चला गया जव हम यह कहें कि यह मन्दिर मार्गी हैं, ये साधु मार्गी है और ये तेरह-पथी हैं। आज तो अपने जीवन मे वीरता रख कर जहा कही पर भी जैन नाम आए और जैन धर्म का काम हो वहा पर पूर्ण एकता के साथ जुट जाने की आवश्यकता है। हर जैन का कर्त्तव्य है कि देश मे चल रहे हिंसा और शराब के ताडव नृत्य का विरोध करने मे एक जुट हो जाय।

मैं एक वार फिर इस शिविर के आयोजन की प्रशसा करता हूँ और यह आशा करता हूँ कि समाज के सभी अ ग इस प्रकार के कार्यों मे अपना सम्पूर्ण सहयोग देंगे।

× × ×

मुनि श्री कन्हैयालालजी 'कमल'

इस प्रकार के सस्कार शिविरो की अपने आप मे बहुत वडी महत्ता है।

भगवान महावीर ने भी उत्तराध्ययन सूत्र के चौथे अध्याय मे सस्कार शब्द की व्याख्या की है। उन्होंने फरमाया है कि जीवन यदि असस्कृत हुआ तो आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता और जीवन को सुसस्कृत वनाने के लिए सस्कारो की नितान्त आवश्यकता है। सस्कार के भी दो रूप हो सकते हैं। एक सुसस्कार और एक कुसस्कार। हमारी दिन-चर्या क्या है और हम किस प्रकार का जीवन जी रहे हैं, यह देखना हर साधक का कार्य है। आत्म कल्याण की प्रगति कितनी हो रही है और हम इस भव-भ्रमण से मुक्त होने के दायरे मे कितने कदम उठा चुके हैं यह भी साधक को अपने आप मे देखना है। मानव मे यह सहज सस्कार होता है, सकल्प होता है कि वह अपने आपको देखे और इसीलिए अपने शरीर को देखने, अपनी रूपरेखा को देखने के लिए दर्पण रखता है, लेकिन कभी अपनी

आत्मा को देखने का भी प्रयास करता है ? दिन रात सांसारिक कार्यों में लगे रहने से जीवन निष्फल रहता है और अपने आपको धार्मिक कार्यों में लगाकर जीवन को सार्थक बनाने की ओर अग्रसर होना है ।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष भारतीय दर्शन के तीन पुरुषार्थ हैं । इन चारों में धर्म प्रथम और मोक्ष अंतिम है जिसका तात्पर्य यही है कि अर्थ और काम में भी सर्वप्रथम धर्म का स्थान रहना चाहिए और इसी से मोक्ष प्राप्त हो सकता है । दान, शील, तप और भाव ये धर्म के आधार हैं । जिस प्रकार एक तख्त को ऊपर उठाए रखने के लिए चार पाए होते हैं और उन्हीं पर तख्त सुव्यवस्थित रहता है और इनमें से यदि एक पाया भी नीचे ऊपर हुआ तो वह तख्त को सुगढ, सुदृढ़ और सुव्यवस्थित नहीं रख सकता, उसी प्रकार एक सुसंस्कारी जीवन के लिए दान, शील, तप और भाव ये चार पाए हैं । इनमें से यदि एक भी कम रहा या नहीं रहा तो मनुष्य का जीवन सुव्यवस्थित नहीं रह सकेगा । हमें इनकी आराधना करनी चाहिए और इन्हें अपने जीवन में उतारना चाहिए और इसके लिए इस प्रकार के शिविरों की बहुत बड़ी महत्ता है । शिविर में शामिल होने से जहां एक दूसरे के विचारों के आदान प्रदान का अवसर मिलता है वहाँ दूसरों के जीवन से प्रेरणा भी । बालिकाओं के शिविर की तो और भी अधिक महत्ता है । बालिकाओं के लिए एक परिवार को छोड़ कर दूसरे परिवार में जाना अनिवार्य है । यदि बालिका अपने जीवन को नए परिवार के अनुरूप बना लेती है तो न केवल वह अपना जीवन सुख शांति से व्यतीत कर सकती है अपितु सम्पूर्ण परिवार को सुख शांति से ओतप्रोत कर सकती है । इसके लिये परम आवश्यक है कि उसमें सहिष्णुता हो, क्षमाशीलता हो, प्रेम और अपनत्व हो और जीवन में आने वाली समस्याओं को सुलझाने की सुसंस्कारयुक्त विचारधारा हो ।

यदि शिविरार्थी बहिनें अपने जीवन में इनका समावेश कर सकीं तो न केवल उनका शिविर में भाग लेना और अपने जीवन को सफल बनाना सार्थक होगा अपितु वे दूसरों के लिये भी प्रेरणा स्रोत बन सकेंगी ।

× × ×

तपस्वी मुनि श्री रूपचन्दजी म० सा०

शिविर शब्द प्रारम्भ में सेना के शिविरों से अभिप्रेत रहता था । सेना का कार्य देश की रक्षा करना होता है और उनको सुशिक्षित, सक्षम और सुदृढ़ बनाने के लिए

शिविरो का आयोजन किया जाता था। शिविर मे तीन प्रकार है—शि, वि, र। शि का अर्थ है शिक्षा, वि का अर्थ विवेक और र का अर्थ है रमणीय। जहा शिक्षा विवेकपूर्ण और जीवन को रमणीय वनाने वाली होती हो, वही शिविर है। शरीर को रमणीक वनाना तो आज के युग की परिपाटी है लेकिन क्या कभी आत्मा को रमणीक वनाने के वारे मे भी सोचा है ?

जिस प्रकार मलमल का कपडा और चमडा दोनो ही पानी मे डालने से मुलायम वन जाते हैं लेकिन धूप मे सुखाने के वाद जहा मलमल अधिक मुलायम वन जाता है वहा चमडा और अधिक सख्त वन जाता है। उसी प्रकार शिविर मे भाग लेते समय तो सभी आध्यात्मिक धारा एव सुसस्कारयुक्त विचारो के प्रवाह मे प्रवाहित होते हैं लेकिन आवश्यकता इस वात की है कि यहा जाने के वाद हमारा जीवन मलमल के समान हो न कि चमडे के। यदि जीवन मे सहनशीलता हो जाय तो सासारिक कार्यो मे रहते हुए भी मानव अपने जीवन का उद्धार कर सकता है।

इस प्रकार के शिविरो की शिक्षा सयमी जीवन की होती है जव कि अन्य शिक्षा सस्थानो मे इसका अभाव रहता है। साधारणतया स्कूलो और कालेजो मे जो शिक्षा दी जाती है उसमे न तो शिक्षा देने वाला और न ही शिक्षा प्राप्त करने वाला लोभ रहित होता है और उसका परिणाम है कि उस शिक्षा का भौतिक जीवन मे भले ही कुछ स्थान हो लेकिन आत्मा के उद्धार के लिए उसका कोई महत्व नही है। इसके अभाव मे इस प्रकार के शिविरो के आयोजन का प्रयास स्तुत्य है।

× × ×

डा० छगनलाल शास्त्री
एम ए (हिन्दी, सस्कृत, प्राकृत) पी एच डी,
वैशाली विद्यापीठ

श्री सस्कार अध्ययन सत्र के कायक्रमो को देखते यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि मानव के अन्तरतम मे सुपुप्त सत् चित् आनन्दमयी भावना को जागृत करने का यह नि सदेह एक स्तुत्य प्रयत्न है।

धर्म के दो पक्ष हैं—उपासना एव आचार। आज के युग मे आचार का पक्ष दुर्वल दीख रहा है जो अवांच्छनीय है। धर्म के ओजस्वी रूप को हमे यदि जगत के समक्ष उपस्थित करना है तो आचार पक्ष को अत्यधिक सवल वनाना होगा।

मुझे यह प्रकट करते सन्तोष होता है कि इस प्रकार के सत्रों से ही यह संभव हो सकता है।

सत्र में भाग ले रही बालिकाओं के अनुशासन, विनय, सद्भाव एवं तितिक्षापूर्ण वृत्तियों को देखने से यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि सत्र-जीवन से वे निश्चय ही बहुत कुछ प्राप्त कर रही हैं। इसके लिये परम श्रद्धेया, विदुषी रत्न, साध्वी श्री निर्मला श्रीजी महाराज अनेकशः धन्यवाद की पात्र है, जिनकी सत्प्रेरणा एवं सन्निर्देशन में यह पावन प्रयास चल रहा है।

मैं इसकी सफलता की कामना करता हूँ तथा इसके संचालक कार्यकर्ताओं को इस स्पृहणीय कार्य के लिये बधाई देता हूँ। कितना अच्छा हो, अन्यान्य धार्मिक संस्थान भी इसका अनुसरण करें।

× × ×

डा० नरेन्द्र भानावत
प्राध्यापक हिन्दी विभाग, राज० वि० वि० जयपुर

श्री संस्कार अध्ययन सत्र की बालिकाओं के मध्य आकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। विदुषी साध्वी श्री निर्मला श्रीजी की प्रेरणा से आयोजित यह शिविर आज के युग की बड़ी आवश्यकता पूरी करता है।

आज समाज में जो उच्छृंखलता, अनुशासन-हीनता और अनैतिकता की प्रवृत्तियां हावी हो रही हैं, उन्हें दूर कर समाज में स्वस्थता, जागृति और नैतिक भावों की संवृद्धि में यह शिविर निश्चय ही सहायक होगा।

इस शिविर की दृष्टि बड़ी व्यापक है। नैतिक शिक्षण के साथ-साथ स्वावलम्बन, सेवा, संगीत, योग आदि का अभ्यास भी इस शिविर में कराया जाता है।

इस शिविर में राजस्थान के अतिरिक्त गुजरात से बड़ी संख्या में बहिनें सम्मिलित हुई हैं। राष्ट्र की भावनात्मक एकता व पारस्परिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान करने की दृष्टि से भी यह शिविर महत्वपूर्ण है।

शिविरार्थिनियों की स्वाध्याय के प्रति लगन, ज्ञान के प्रति जिज्ञासा और नियमबद्ध अनुशासनात्मक दैनिक कार्यक्रम प्रशंसनीय है।

शिविर की सफलता व उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

श्री यशवर्तसिंह नाहर
विधायक राजस्थान

मैं आज बच्चियो से बात चीत करने के लिए सस्कार अध्ययन सत्र मे आया। यहाँ का कार्यक्रम बडा लुभावना–प्रेक्टीकल व सुन्दर है। जहाँ जीवनोपयोगी है वहाँ अध्यात्म से पूरित भी है।

आज के विभ्रान्त युग मे ऐसे अध्ययन केन्द्र यदि सब जगह हो तो हमारा भटका मानव सही मार्ग पर आयेगा–क्योकि बच्चिया ही भावी पीढी की निर्माता हैं।

× × × ×

जैनार्या श्री कल्याण श्रीजी महाराज

इस सत्र मे बाहर से आई हुई एव यहाँ कि बालिकायें शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इन लोगो के बालोपयोगी जीवन को उन्नत बनाने के लिए विदुषी आर्यारत्न, साध्वी श्रेष्ठा निर्मला श्रीजी के प्रयास से बालिकाओ की शिक्षा आगे बढने की गुरुदेव से प्रार्थना करती हूँ।

× × × ×

श्री पूर्णचन्द जैन
सर्वोदय नेता

सस्कार अध्ययन सत्र मे आने का अवसर मुझे मिला। राजस्थान मे ऐसी प्रवृति का आरम्भ अभिनन्दनीय है। महिला वर्ग मे नव–सस्कार पनपते हैं तो पूरे समाज को सही दिशा मिलने मे बहुत मदद मिलेगी। आज यह समझे जाने की जरूरत है कि विश्व–मानव एक है, मनुष्य-मनुष्य अविभाज्य है, इसलिये प्रत्येक को दूसरे के हित मे योग दान करना चाहिये और विज्ञान की देन को सबके हित की दृष्टि से उपयोग मे लाया जाना चाहिये। यह ही नव-सस्कार की दिशा हो सकती है।

श्री मिलापचन्द शास्त्री

पूज्य साध्वी जी महाराज श्री निर्मला श्रीजी की प्रेरणा से मुझे संस्कार अध्ययन सत्र में आने तथा दो शब्द कहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं यहाँ की प्रवृत्तियों से अवगत होकर बड़ा आनन्दित हुआ। इस अशांत एवं भ्रामक युग में जबकि आचार पक्ष पतनोन्मुख होता जा रहा है, निश्चय ही ऐसे आयोजनों का बड़ा भारी महत्व है। स्त्री जाति के उत्थान पर ही समाज और राष्ट्र का उत्थान निर्भर करता है और इस सत्र में उसी लक्ष्य की पूर्ति का ध्यान रखा गया है। मैं पूज्य साध्वी जी महाराज की सूझ बूझ का अभिनन्दन करता हुआ सत्र की सफलता की कामना करता हूँ साथ ही सुश्री पन्ना बटन एवं अन्य व्यवस्थापकों का हार्दिक साधुवाद करता हूँ।

× × ×

श्री अमरसिंह मेहता
प्रभारी अधिकारी
सूचना केन्द्र, जयपुर

परम श्रद्धेया श्री निर्मला श्रीजी के सानिध्य में चल रहे संस्कार अध्ययन सत्र–शिविर में सम्मिलित होने का अवसर आज प्राप्त हुआ।

आध्यात्मिक शिक्षण के साथ साथ व्यवहारिकता पर भी बल दिया जा रहा है। यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि राजस्थान के धार्मिक इतिहास में प्रथम वार इस प्रकार का सुन्दर आयोजन जयपुर में हो रहा है। यह हम सब के लिये परम सौभाग्य की वात है।

श्री निर्मला श्रीजी के संरक्षण में वालिकाएं देश की सुसभ्य, सुसंस्कृत एवं सुनागरिक वनें यही मेरी इस अद्वितीय शिविर के लिये शुभ भावना एवं मंगल कामना है।

राजेन्द्रशंकर भट्ट
3, म्युजियम मार्ग, जयपुर–4

सुश्री निर्मलाजी महाराज की देख-रेख में जो संस्कार-अध्ययन शिविर चल रहा है उसे एक दो बार निकट से देखने का मुझे मौका मिला। शिविर में राजस्थान व गुजरात की कोई १५० बालिकायें भाग ले रही हैं। उनकी इतनी संस्कार के और इतनी संख्या में शिविर में उपस्थिति इसकी सफलता का द्योतक है। फिर किसी के रीति-रिवाज का जहाँ खुले, मे जब धर्म महल में प्रशिक्षण होना है तो अवश्य ही इन शिविरार्थियों के संस्कार बनाने में सहायक होगा। शिवर मे प्रशिक्षणार्थी ही नहीं व्याख्याता भी, जैनेतर आये हैं। इससे इसका व्यापक योग और दृष्टिकोण प्रकट होना है। यह प्रचार शुभ और कल्याणकारी है।

—मुनि श्री राजकरणजी

आज का नारी समाज विशेष सौभाग्यशाली है। उसने एक ऐसे युग में जन्म लिया है जहा हर आकार से उसे प्रगति करने का अवसर मिला है। आज से एक शताब्दी पहले ऐसा युग था जहां "स्त्री शुद्रौ नाधीयाताम्" जैसी युक्तिया प्रचलित थी केवल जैन साध्वी वर्ग को छोडकर नारी जाती में अक्षर ज्ञान भी नहीं था जैन साध्वियां अवश्य साक्षर एवं विदूषी रही है पर अन्य नारी समाज हर प्रकार से उपेक्षित व प्रताडित रहा है।

आज आपके लिए भी पुरुषों के समान ही शिक्षा व प्रगति का अवसर प्राप्त है। और नारी किसी से पीछे नही है।

विद्यालय महाविद्यालय मे पढ़ने वाले छात्र छात्राओ के लिए ग्रीष्माकाल मे उन्हे कुछ दिनो का अवकाश दिया जाता है। उसका सदुपयोग करने के लिए इस प्रकार के सस्कार संत्र आदि के प्रयोग किये जाते है जहां अन्य ज्ञान के साथ उन्हे कुछ आत्मज्ञान भी दिया जाए। इस मामिक सस्कार सत्र मे आपको आत्म ज्ञान अवश्यक करना है। सचमुच में इस शरीर से निम्न चैतन्य स्वरूप सिद्ध बुद्ध मुक्त एव परमात्मा के समान हमारी आत्मा इसे अवश्य पहचानना है यदि इसे भूलगये तो, ज्यो आग मे जलते घर मे से धन वैभव निकालने की धुन मे सेठ अपने अगज को भूल गया था और उसे फिर दुख के अतिरिक्त कुछ नही मिला था इसी प्रकार आपको पश्चाताप के सिवाय और क्या मिल सकता है।

हम बड़े ही सौभागी है कि मानव जीवन के साथ जैन संस्कृति मे जन्म का अवसर मिला। जोर्ज बर्नार्डशा के शब्दो में जैनदर्शन व संस्कृति सबसे श्रेष्ठ व महत्वपूर्ण है। आचार्य विनोवा भावे भी अन्य महापुरुषों राम, कृष्ण, गांधी बुद्ध, के बनिस्पत भगवान महावीर के प्रति विशेष श्रद्धा प्रकट करते करते है। आपको इस समय में जैन संस्कृति व दर्शन की भी विशेष जानकारी प्राप्त करनी है।

इस प्रकार शिविरों में एक साथ रहने मे कुछ कठिनाइयां भी आती होगी, पर इससे जो लाभ मिलेगा उसके सामने वे नगण्य ही होगी। अकेला व्यक्ति वनों मे रहने वाला चाहे जैसे रहे उसे कोई कहने वाला नही। वह चाहे दिन भर बोले या मौन रहे, खड़ा रहे या सोया रहे। चाहे दिनभर खाये या विल्कुल नहीं खाये उसकी अपनी इच्छा है पर जहां एक से दो हुए कि वहां एक दूसरे का ध्यान भी रखना पड़ता है वह सभी कार्य अपनी इच्छा-अनुसार नही कर सकता वहा एक दूसरे का अनुशासन भी मानना पड़ता है। आप कहेंगे कि साथ रहने में क्या लाभ ? साथ रहने मे जहां एक दूसरे का सहयोग मिलता है वह इतना महत्वपूर्ण होता है कि उसके सामने दुविधाये कोई मानी नही रखती।

मह जीवन में सुख शाति हम तब प्राप्त कर सकते है कि जब हमारे मे कोई विशेषतायें विकसित हो जाये। पशुओ की तरह अविवेकी व उच्छृ कल बनाने से नहीं। पशु अपनी एक धुरी बनाकर रहता है दूसरा पशु वहां आजाये तो उसके सामने लडने झगड़ने के अतिरिक्त दूसरा कोई रास्ता नही रहता पर मनुष्य इस प्रकार नही करता वह वहां विवेक से काम लेगा।

यहां रहकर आपको कुछ विशेष गुण स्वीकार करने है। जिससे पहला होगा सहिष्णुता। साथ रहमे वाले भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति के लोग होते है। खान-पान रहन-सहन वेष भूषा व्यवहार एक दूसरे के अनुकूल ही हो आवश्यक नही। वहां पर यदि सहिष्णुता नही बनी रहे तो एक महीना तो क्या एक दिन व एक घण्टा मिनट भी साथ रहना कठिन हो जाता है। सह-जीवन मे यो सोचना चाहिए

कि इसमे दो त्रुटिया तो है तो मेरे मे सौ हो सक्ती है। ये हमारी सौ त्रुटिया को सहन कर लेते हैं तो क्या मैं इसकी दो त्रुटिया भी सहन न करू ?

यह मत सोचिए कि इसकी त्रुटियो क्षमा करते जायेंगे तो सिर पर चढ बठेगा। आप यह सोचिए की सर पर चढ कर टिकेगा कैसे वहा स्थान तो बिल्कुल कम है प्रथम तो वहा कोई चढ नही सकता और कुछ समय के लिए टिक भी गया तो क्या वह सुख पा सकेगा ? शीघ्र वहा से फिसल कर नीचे गिरेगा और चोट खायेगा जबकि आपको ज्यादा कष्ट नही होगा।

सही अथ मे आपकी वास्तविक सहिष्णुता उसे भी दुजलता से सज्जनता की ओर मोड देगी। आप सहिष्णु बने रहें।

दूसरा गुण आना चाहिए उदारता। बहुधा व्यक्ति के देखने का क्रम ऐसा रहता है कि मेरे ये गुण अधिक हैं व अवगुण कम मेरे साथ रहने वाले मे अवगुण अधिक है गुण कम मैं ही हूँ इसलिए इसके साथ टिक रहा हू दूसरा तो एक क्षण भी इसके साथ नहीं रह सकता। यह मिथ्या अभिमान है। हर क्षण अपने अवगुण व दूसरो के गुणो को ही देखने का अभ्यास करना चाहिए। इसीलिए कहा है—

परगुण परमाणुन् पवती कृत्य नित्यम्
निज हृदिपि विल सन्तिसन्त किमन्त

तीसरा गुण होना चाहिए श्रम शीलता जो व्यक्ति श्रम करने मे शम महसूस करता है या शारीरिक श्रम करने वालो को छोटा समझता है वह सचमुच मे छोटा बन जाता है व्यक्ति चाहे कितना भी बुद्धिजीवी क्यो न हो उसे भी शारीरिक श्रम की तो आवश्यकता रहती ही है। वरना शरीर भी स्वस्थ नही रह सकता।

कितनी बातें बतायी जायें आप सब जानते ही है। बहुत कुछ सुनने पढने को भी मिलता है वस्तुत वे गुण जीवन मे आयेंगे तब लाभ होगा। शिविर मे रहने का खास लाभ यह होना चाहिए कि आपका जीवन बदल जायें जब आप यहा मे घर जायें तो आपके अभिभावक यह महसूस करें कि सचमुच ही यह शिविर लाभकारी होता है। यदि जीवन वैसा ही रहा तो सोचेंगे व्यर्थ ही समय व अर्थ खोया।

बहनो मे तो अपने जीवन को बदलने की क्षमता विशेष होनी चाहिए क्योकि यहा की परम्परा के अनुसार लडकियो का प्रारम्भिक जीवन पीहर मे (पिता के घर) बीतता है व पिछला जीवन ससुराल मे (पति के घर) वहा जाने पर उसे काफी बदलना पडता है घर, जाति, परिवार, और यदा कदा गाव प्रान्त भी। रहन सहन, खान पान काफी सामान होते हुए भी काफी भिन्न भी होता है वहा पर यदि उपरोक्त गुण विशेष रूप से विकसित हो तो उसका जीवन सुख शान्तिमय व्यतीत होता है।

अत सभी व्यक्ति यहा रहकर अपने जीवन को विशेष सुसम्कारित बनायेंगे।

साध्वी श्री निमता श्री जी व शिविर के सयोजक व्यवस्थापक बधाई के पात्र है जिन्होंने आध्यात्मिक सस्कार भरने का सुन्दर उपक्रम चालू किया है। मैं आशा करता हूँ यह आध्यात्मिक क्रम प्रति वष चलता रहे एव बढता रहे।

शिविर में भाग लेने वाली बहनें (उच्च कक्षा)

क्रमांक	नाम	पिता/पति का नाम	कक्षा	पता
१.	श्रीमती उर्मिला बहन H. M. वीर बालिका विद्यालय	भैरवप्रसाद श्रीवास्तव	M. A., B. T.	जयपुर
२.	,, उर्मिला बहन टीचर, वीर बालिका विद्यालय	रामेश्वरजी कक्कड़	M. A., B. T.	,,
३.	,, सुलक्षणा बहन खजानची जैन टीचर, वीर बालिका विद्यालय		M. A., B. T.	,,
४.	,, मालती बहन जैन टीचर, वीर बालिका विद्यालय	अक्षयकुमार जैन	शास्त्री	,,
५.	,, पद्मा बहन भार्गव टीचर, वीर बालिका विद्यालय		B. A.	,,
६.	कु० प्रेमलता	दिलबागराय जी जैन	M. A	,,
७.	कु० शान्ति	रतनचंद सचेती	M. A.	,,
८.	कु० नविनप्रभा	कुन्दनमल जैन	B. A.	,,
९.	कु० चन्द्रप्रभा	कुन्दनमल जैन	B. A.	,,
१०.	कु० सुपमा	तीरथदास जी जैन	B. A.	,,
११.	कु० प्रमिला	इन्दरचंद जी भंडारी	B. A.	,,
१२.	सुश्री प्रेम	शिखरचंद जी पालावत	B. A.	,,
१३.	कु० कुसुम	सौभाग्यचंद जी सुराना	B. A.	,,
१४.	कु० सुधा	केसरीसिह जी पालेचा	B. A.	,,
१५.	कु० शकुन्तला	मुगनचंद जी वाठिया	B. Sc.	,,
१६.	कु० पुष्पा	नौरतनमल जी सुराणा	B. A.	,,
१७.	कु० निरुपमा	प्रमोद भाई	B. A.	अहमदावाद
१८.	कु० कामिनी	रसिकलाल	B. A.	,,
१९.	कु० सुवर्णा	मनुभाई	B. A.	,,
२०.	कु० पूर्णिमा	मूलचंद भाई	B. Sc.	,,
२१.	कु० हर्षा	शान्तिलाल चोकसी .	B. A.	,,
२२.	कु० नीलकमल	महेन्द्रकुमार	B. A.	जयपुर
२३	कु० चन्द्रा बहन	कचुकी	F. Y.	अहमदावाद
२४.	कु० तरुलता	लालभाई सेठ	F. Y.	,,
२५.	कु० शाति	उमरावमल जी खवाड़	इण्टर	जयपुर
२६.	कु० मंजू	केसरीचंद जी सीगी	इण्टर	,,
२७.	कु० विमला	हजारीमल जी मेहता	इण्टर	,,
२८.	कु० अनिला	गुलावचद जी खवाड़	इण्टर	,,

क्रमांक	नाम	पिता/पति का नाम	कक्षा	पता
२९	कु० स्वीटी	दिलबागराय जैन	इण्टर	जयपुर
३०	कु० उषा	नूतनदास जी जैन (शिवपुरी)	इण्टर	"
३१	कु० रश्मि	जयन्तीलाल		अहमदाबाद
३२	कु० दिप्ती	रजनीकान्त भाई	P U C	"
३३	सुश्री कमला बहन टीचर	दुलीचन्द जी जैन	S S C	जयपुर
३४	कु० मीनाक्षी	बाबूलाल मेहता	S S C	"
३५	कु० सूर्यबाला	परमानददास	S S C	अहमदाबाद
३६	कु० प्रफुल्ला	परमानद दास	S S C	"
३७	कु० सुचिता	परमानद दास	S S C	
३८	कु० भारती	कान्तीलाल दोशी	S S C	"
३९	कु० हर्षिदा	अमृतलाल दोशी	S S C	"
४०	कु० रीटा	मूलचद भाई	S S C	"
४१	कु० श्रीमति	कान्तीलाल	S S C	"
४२	कु० मृदुला	रमणलाल	S S C	"
४३	कु० पूर्णिमा	जसवतलाल मुनसफ (सूरत)	S S C	सूरत
४४	कु० मीना	रसिकलाल	S S C	अहमदाबाद
४५	कु० पन्ना	चदूलाल	S S C	,
४६	कु० कल्पना	शान्तिलाल	S S C	"
४७	कु० हर्षा	कामदेव भाई	S S C	"
४८	कु० शकुन्तला	ईश्वरलाल जी	S S C	जयपुर
४९	कु० निमला	लक्ष्मीचद जी भनसाली	S S C	,
५०	कु० इन्दुमती	जसवनमल जी माट	१०	"
५१	कु० राजकुमारी	मक्तावरमल जी जैन	१०	"
५२	कु० उर्मिला	जुगलकिशोर भणसाली	१०	"
५३	कु० पुष्पा	जुगलकिशोर भणसाली	१०	"
५४	कु० उषा	लक्ष्मीचद जी	१०	"
५५	कु० सरला	बाबूलाल मेहता	१०	"
५६	कु० विमला	हीराचद जी सींधी	१०	"
५७	कु० अजना	गुलाबचद जी सींघी	१०	"
५८	कु० मजुला	गुलाबचद जी सींघी	१०	,
५९	सुश्री विमला	अभयकुमार चोरडिया	१०	"
६०	कु० कुसुम	अमरचद भणसाली	१०	,
६१	कु० वीना	धर्मचद जैन	१०	"
६२	कु० अनिला	हुकुमचद जी नाहर	१०	"
६३	कु० निशी	शिखरचद जी पालावत	१०	"

क्रमांक	नाम	पिता/पति का नाम	कक्षा	पता
६४.	कु० निशा	रतनलाल पालावत	१०	जयपुर
६५.	सुश्री पारसदेवी	ज्ञानचंद जी सचेती	१०	"
६६.	कु० सुचित्रा	सौभाग्यचंद जी नाहटा	१०	"
६७.	कु० आशा	धनपतसिंह जी सुखलेचा	१०	"
६८.	कु० लता	अमरचंद जी फोफलिया	१०	"
६९.	कु० रीटा	ताराचंद जी शाह	१०	"
७०.	कु० पुष्पा	सतोपचंद जी बैद	१०	"
७१.	कु० गायत्री	वालचंद जी मेंमवाल	१०	"
७२.	कु० नगीना	वालचंद जी मेंमवाल	१०	"
७३.	कु० मधु	ताराचंद जी सेठी	११	"
७४.	कु० लता	रिखवचंद जी	१०	"
७५.	कु० निम्मी	रिखवचंद जी	१०	"

शिविर में भाग लेने वाली छात्रायें (मध्यम कक्षा)

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	कक्षा	पता
१.	उषा	विजयचन्द जी धाँधिया	९	जयपुर
२.	उर्मिला	इन्दरचंद जी भंडारी	९	"
३.	सुनीता	ज्ञानचंद जी कर्नावट	९	"
४.	लेखा	मनसुखलाल शाह	९	"
५.	ज्योत्सना	पूनमचंद शाह	९	"
६	शशि	नथमल जी झाँझरी	९	"
७.	अनिता	रमणीकलाल शाह	९	"
८.	भारती	कान्तिलाल शाह	९	"
९	सुलेखा	ज्ञानचंद जी संचेती	९	"
१०.	सुरेश	नेमिचंद जी जैन	९	"
११.	दर्शना	वावूलाल महेता	९	"
१२.	नीलम	शादीलाल जैन	९	"
१३.	निर्मला	राजेन्द्रकुमार लुणावत	९	"
१४.	रेणु	महेन्द्रकुमार जैन	९	"
१५.	हर्षदा	डाह्याभाई शाह	८	"
१६.	सविता	कुंदनमल जी जैन	८	"
१७.	निर्मला	लाभचंद जी मेमवाल	८	"
१८.	प्रेमलता	सौभागमल जी सुराणा	८	"

क्रमांक	नाम	पिता का नाम	कक्षा	पता
१६	आशा	राजेन्द्रसिंह जी लोढा	८	जयपुर
२०	पुष्पा	केसरीचद जी सिंघी	८	„
२१	नूतन	दिलबागराय जी जैन	८	„
२२	मञ्जू	प्रेमचद जी वैद	८	„
२३	विजयलक्ष्मी	श्रीचद जी महता	७	„
२४	उषा	सतोषचद जी वैद	७	„
२५	मजु	अमोलकचद जी मुरणा	७	„
२६	मनु	मोतीचद जी टाक	७	„
२७	निमला	प्रेमचद जी बाँठिया	७	„
२८	जतन	मुनीलाल जी जैन	७	„
२६	मृदुला	गुलाबचद जी सिंघी	७	„
३०	मञ्जू	फतेहचद गाधी	३	„
३१	रमा	डाह्याभाई शाह	७	„
३२	पन्ना	नरसिंह भाई शाह	८	अहमदाबाद
३३	हेमागिनी	प्रमोदचद शाह	७	„
३४	स्वाति	लालभाई शेठ	७	„
३५	हीता	विनोदचद्र कचुकी	६	„
३६	माला	रमणलाल शाह	६	„
३७	वर्षा	सेवतिभाई शाह	६	„
३८.	मीना	हीराभाई शाह (मडार वाले)	६	जयपुर
३६	फालगुनी	अरुणकुमार शाह	५	अहमदाबाद
४०	शीनपा	रमणलाल शाह	५	„
४१ (वैष्णव)	केली	कचुकी	३	„
४२	पद्मा	बाबूलाल जी महेता	६	जयपुर
४३	प्रभा	अजु नमल जी लोढा	६	„
४४	उर्मिला	उदयचद जी लोटा	६	„
४५	नीना	नानकचद जी कर्नावट	८	„
४६	आशा	मोहनलाल जी जैन	८	„
४७	सुशीला	धमचद जी नाहर	८	„
४८	वीना	फतेहचद जी गाधी	३	„
४६	सुशीला	कैलाशचद जी भाँभरी	६	„
५०	शशिकान्ता	राजमल जी कोठारी	८	„
५१	मीनु	जवरीलाल जी पारेख	७	„

समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री चन्दनमल जी वैद, वित्तमंत्री राजस्थान को शिविर की एक बहिन स्वागत कर पुष्पहार पहिनाते हुये।

संघ मंत्री श्री हीराचंद वैद शिविर के एक माह के कार्यक्रम का सिहावलोकन करते हुये

समापन समारोह के अध्यक्ष श्री दौतलमल जी भण्डारी, भूतपूर्व मुख्य न्यायधीश, उच्च न्यायालय, राजस्थान, भाषण करते हुय।

राजस्थान के वित्तमंत्री श्री चन्दरामल जी वैद समापन समारोह में प्रवचन करते हुये।
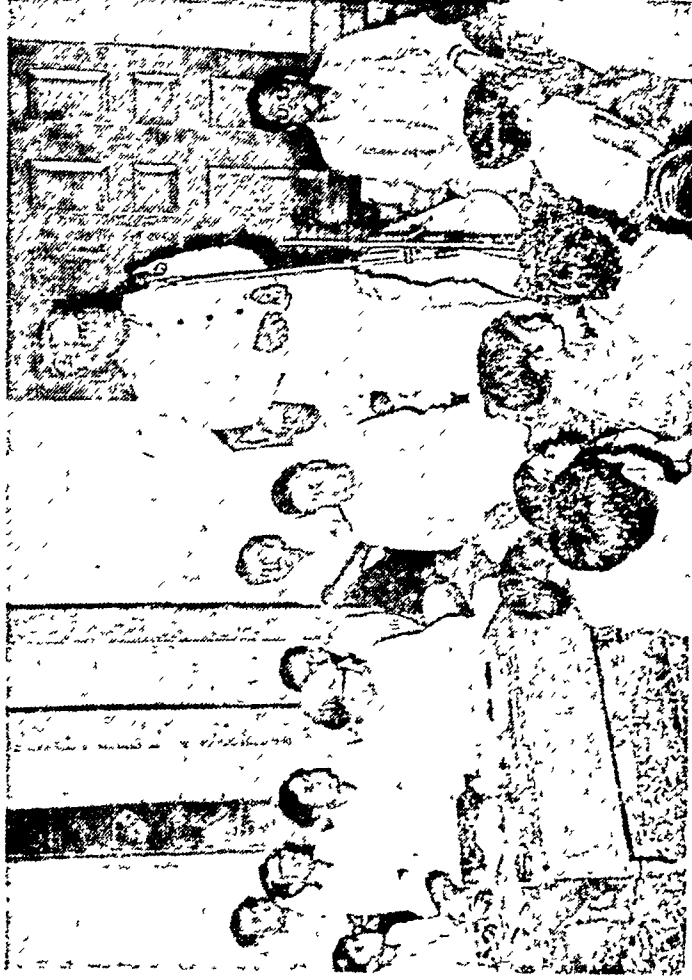
सेठ श्री महताबचंद जी गोलेछा शिविर की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा को पारितोषक वितरण करते हुये।

संघ के उपाध्यक्ष श्री हीराचंद जी एम शाह (मंडार वाले) इस अवसरपर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन प्रथम प्रति साध्वी जी म० को भेंटकर, करते हुये।

भवंरमल रतनचंद सिंघी

जोहरी बाजार

जयपुर

शिविरार्थी बहिनो

का

हार्दिक-अभिनन्दन

करते है ।

राष्ट्र

का बल ही

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण

है, उसमें ही हमारी सुरक्षा

निहित है। इसका दायित्व केवल

कुछ लोगों के कंधो पर ही आश्रित नहीं

वरन् आप में से हर एक भाई-बहन पर है ?

शुभकामनाओं सहित

शिविरार्थियों

को

हार्दिक शुभ कामनायें
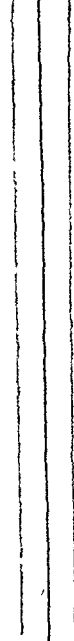
व्यवसाई बंधु

शिविर का प्रयोजन

—हीराचन्द वैद

करीव २ वर्ष पूर्व अंग्रेजी की एक पत्रिका "Femina" देखते वक्त अनायास ही कुछ चित्रों और उससे सम्वन्धित लेख पर ध्यान केन्द्रित हो गया।एक जैनेतर लेखिका सुश्री विमला पाटील का यह लेख एक वालिका शिविर जो उन दिनो अहमदावाद मे आयोजित हुआ था, के सम्बन्ध में था। एक जैन साध्वी के द्वारा नैतिक जागकरण का इतना महत्वपूर्ण कार्य गुजरात में हो रहा है जिसे न केवल जैन समाज का वल्कि जैनेतर एवं सरकारी क्षेत्र का भी अपूर्व सहयोग मिल रहा है यह जानकर प्रसन्नता व्याप्त हो जाना स्वभाविक ही था। तव से ही एक स्वप्न मस्तिष्क में चक्कर लगाने लगा कि क्या कभी ऐसा सुप्रयास जयपुर मे भी संभव है। इन साध्वीजी महाराज से तव तक हमारा कोई परिचय भी नहीं था, पर उस लेख मे आप श्री का नाम श्री निर्मला श्री जी एम० ए० साहित्यरत्न पढ़कर किसी भी तरह जयपुर लाकर चातुर्मास कराने व इसी तरह के सत्र का आयोजन करने की लग्न सवही के, जिनसे भी इस सम्बन्ध मे चर्चा की, लग गई।

सीधा सम्पर्क तो था ही नहीं। जयपुर में यादगारी चातुर्मास कर चुकने वाले एक संत से इस सम्बन्ध में चर्चा आ गई तो उन्होंने फरमाया—"हमारी राय है कि यदि उनका चातुर्मास जयपुर करा सको तो वहनों मे विशेष तौर से अच्छी जागृति आवेगी।" प्रयास चालू किया। यद्यपि ये महाराज श्री इससे पूर्व कभी राजस्थान मे पधारे नहीं थे—चातुर्मास तो दूर की वात थी पर जयपुर का सद्भाग्य—जो स्वीकृति मिल गई और तुरन्त ही अहमदावाद से आपश्री ने विहार कर दिया—राजस्थान की सीमा के पास आते-आते आपके साथ के साध्वीजी के साथ एक दुर्घटना घट गई और आपको काफी समय तक आवू विराजना पड़ा।

गत वर्ष की यह घटना है—शिविर के सारे मन्सूवे धरे ही रह गये! ग्रीष्मावकाश पूर्ण हो गया और आप चातुर्मास काल के समीप ही यहां पधार सके। चातुर्मास शालीनता से सम्पन्न हुआ, और आपश्री के विहार का निश्चय हो गया। पर विधि को तो कुछ और ही मंजूर था। यकायक भारत-पाक युद्ध छिड़ गया। आपश्री का विचार जैसलमेर आदि तीर्थों की यात्रा करते हुये वापस गुजरात की तरफ पधारने का था, पर उस क्षेत्र की स्थिति अनुकूल नही होने से संघ ने आपको यहां से विहार नहीं करने दिया। स्थिति के सामान्य होने पर यकायक आपका स्वास्थ्य काफी खराव हो गया। चिकित्सकों ने विहार के लिये स्पष्टत: मनाकर दिया। काफी कष्ट उठाने के वाद धीरे-धीरे आपका स्वास्थ्य ठीक हुआ। तो संघ ने समय की पकावट को ध्यान में रखकर यहाँ शिविर कराने की विनती की। कारण—गत वर्ष की भावना तो थी ही। फिर ऐसा सानिध्य वार-वार कहा मिल पाता है। संघ के दृढ़ निश्चय को देखकर आपश्री को भी विनती स्वीकार करनी ही पड़ी।

शिविर का निश्चय तो हो गया। पर शुभ काम मे समस्यायें तो आती ही है। गुजरात–राजस्थान के ग्रीष्मावकाश का अन्तर ! राजस्थान की कडी गर्मी तथा इस सम्बन्ध का किसी भी तरह का अनुभव नही होने तथा शिविर के लिये स्थान आदि की समस्या ने सबके दिलो को थोडा झकझोर दिया। पर जब निश्चय दृढ होता है—काम श्रेष्ठ होता है तो भावना सफल होती ही है। और फिर यह काम तो नैतिक जागरण का जो है। धार्मिक दृष्टि से इस सघ ने अनेक आयोजन गत वर्षों मे सम्पन्न किये वे काफी महत्वपूर्ण भी थे ही। २ ३ वर्ष पूर्व ही मन्दिर जी के ऊपर के कक्ष मे महावीर स्वामी आदि भगवतों की अलौकिक भव्य प्रतिमाओं की स्थापना, इससे पूर्व जयवर्द्धन पार्श्वनाथ की महान् प्रतिष्ठा और उससे भी पूर्व भमती मे जैन कलाचित्र दीर्घा की स्थापना आदि भी अपने मे महत्वपूर्ण कार्य रहे है। वर्धमान आयम्बिल शाला की कायमी व्यवस्था, धार्मिक पाठशाला की व्यवस्था भी इस सस्थान के आकर्षक, साथ ही धार्मिक आराधन के प्रतीक रहे है। पर शिविर के आयोजन का काम तो विशेष महत्व का बन जावे ऐसा है। एक बहिन को यदि सुसस्कार प्राप्त हो जावे तो एक घर सुसस्कारी बन जाता है, पर मुझे माफ करें, एक भाई के सुसस्कारी बन जाने से जरूरी नहीं कि पूरा परिवार सस्कारी बन जावे। गुजरात मे इस तरह के आयोजन होते रहते हैं और उसका परिणाम भी आता ही है। राजस्थान अपेक्षाकृत इतना जागरूक नहीं है—यहां की बहनों मे जीवन जीने की कला आ सके, उनमे सुसस्कार आ सके इसलिये इस तरह के आयोजनो का यहा के लिये विशेष महत्व है। अभी इन कार्य की महत्ता को हमने समझा नही है यह पहला प्रयास है—हो सकता है इसका परिणाम अपेक्षाकृत न भी आवे पर बीज जमीन में अन्दर रह जाता है वह किसी को दिखाई भी नहीं देता फिर भी जल, वायु और प्राकृतिक सहयोग से अपने में से अकुर को प्रस्फुटित करता हैं और वही भविष्य मे बडे वृक्ष का रूप लेता है। यह प्रारम्भिक प्रयास चाहे छोटे स्तर पर दिखाई दे पर यदि १० ५ बहनो में भी सुसस्कार आ गये तो इन परिवारों मे तो शिविर का असर दिखाई देने लगेगा ही।

अब तक गुजरात मे ६ शिविर साध्वीजी महाराज के सानिध्य में लग चुके हैं—सैंकडो बहिनो ने उनसे लाभ उठाया है। अनेक मुनीवरो ने, समाजसेवियों ने और राजनेताओ ने उन्हें निकट से देखा है और अपनी टिप्पणिया दी हैं वे हम लोगो को प्रेरणा दने के लिये काफी हैं।

हाल ही में महावीर जन्म दिवस के अवसर पर इस योजना को कार्यरूप देने हेतु एक परिपत्र (Folder) निकाला गया जिसमे गत शिविरो का सक्षिप्त विवरण, टिप्पणिया व शिविर के उद्देश्य के सम्बन्ध मे प्रकाश डाला गया था। इस प्रकाशन का एक ध्येय यह भी था कि इस सम्बन्ध मे जनता मे कितनी रुची हो सकती है यह भी ज्ञात हो जावे। इस परिपत्र के प्रकाशन के बाद जयन्ति के अवसर पर ही राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री बरकत साहब ने इस विषय मे पूज्य साध्वीजी म० से बातचीत की और इस आयोजन की काफी सराहना की साथ ही अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन भी दिया। अनेक विधायको ने जिसमे श्री यशवन्तसिहजी नाहर मुख्य हैं इस सम्बन्ध मे अत्यधिक रूचि जाहिर की व हर सम्भव मदद एव सहयोग देने की भावना जाहिर की।

इन सब विचारो से प्रेरित होकर ही इस दृढ निश्चय को कार्यरूप मे परिणित करने का सुअवसर आज प्राप्त हो रहा है।

स्थान की समस्या सहज ही सुलझ गई जब इस सम्बन्ध मे श्री वीर बालिका विद्यालय मे मन्त्री श्री राजरूप जी टाक के सामने यह चर्चा आई उन्होंने तत्काल स्थान के लिये स्वीकृति दे दी और

संचालक मण्डल ने भी उस स्वीकृति की अनुमोदना में काफी उदारता बरत कर हमारे साहस को बढ़ाया—शिविर संचालन समिति उन सबके प्रति हार्दिक आभारी है ।

आज के इस समारम्भ का उद्घाटन समाजरत्न श्री राजरूपजी टांक के हाथों सम्पन्न हो रहा है ! यह भी एक शुभ चिन्ह है । श्री वीर-बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आज जिस रूप में भी है आपके ही सुप्रयासों का फल है—हजारों बालिकाओं ने वहाँ से शिक्षण प्राप्त कर अपने जीवन को सुसंस्कृत किया है । आज उसी कन्या सस्थान के मन्त्री वर्ग द्वारा संस्कार अध्ययन सत्र का उद्घाटन हो रहा है तथा वीर बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे ही यह आयोजन हो रहा है साथ ही वहां की बालिकाये भी अच्छी सख्या मे भाग ले रही है यह सब हमारे लिये हर्ष का प्रसंग है ।

मुख्य अतिथि के रूप में हमे पद्मश्री खेलशंकर दुर्लभजी का सौजन्य प्राप्त हुआ यह भी काफी प्रसन्नता का विषय है कि श्री खेलशंकर भाई जयपुर जैन समाज के गौरव है—आपके परिवार ने वर्षो से जयपुर मे समाज उत्कर्ष के कार्यो मे योगदान किया है । हाल ही मे निर्मित श्री सन्तोख बा दुर्लभजी अस्पताल न केवल जयपुर की शान है बल्कि उसका निर्माण व संचालन अकेले श्री खेलशंकर भाई कर रहे है—यह भी गौरव की बात है ।

समाज की भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों में आज के दोनों ही मनिषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है और आज का यह समारम्भ भी दोनों की उपस्थिति से गौरवान्वित हुआ है ।

इस तरह के नैतिक जागरण के महान् यज्ञ में हरेक ही समाज-प्रेमी अपना हाथ बँटाना चाहता है और यह लाभ लेने का उसका अधिकार है भी । और ये सब आयोजन अर्थ से सम्बन्धित तो रहते ही है । बाहर से आने वाली बहनों के आवास, निवास, भोजन, मुद्रण सामग्री, पारितोषक वितरण व अन्य कार्यो मे खर्च तो स्वभाविक है ही और उसमे योगदान देने मे कौन पीछे रह सकता है ? रहना भी नहीं चाहिये । इसके लिये भी समिनि ने एक नई व्यवस्था सोची है—शिविर के समापन के अवसर पर एक सुन्दर स्मारिका प्रकाशित की जाये, जिसमें शिविर के लिये प्राप्त-लेख, संदेश, आशीर्वाद तो छपें ही साथ ही शिविर का सारा घटना-क्रम, कार्य व परिणाम भी प्रकाशित किया जावे जिससे भविष्य में ऐसे आयोजन करने की प्रेरणा हमको भी मिलें व औरों को भी मिले । साथ ही इस स्मारिका में एक विज्ञापन कक्ष भी हो जिससे जहां हमारे व्यवसाय के प्रति लोगों की रुचि जागृत हो तो साथ ही इस स्मारिका मे प्राप्त विज्ञापनो की राशि से शिविर के सचालन मे हमारा योगदान भी हो । हमारी यह भावना है कि इसके लिये हम या समिति प्रयास न करे पर स्वतः ही आपको यह प्रेरणा हो कि इस महान् कार्य मे मुझे भी योगदान करना है और इस हेतु आप स्वतः ही संयोजक या सम्पादक मंडल से सहयोग करे । यह नया प्रयास है पर अब तक जैसा विश्वास और सहयोग आपका प्राप्त हुआ है, वैसे ही इस नये प्रयास में भी सफलता प्राप्त होगी—यह पूरा विश्वास है ।

सत्र के दिनो में विशिष्ट विद्वानों को यहाँ बुलाकर उनके विचार जानने के लिये भी प्रयास होगा, साथ ही आप सबका भी पूर्ण सहयोग इस कार्य में मिलेगा ।

इस सत्र में भाग लेने के लिये आठवीं कक्षा से एम० ए० तक की करीब १२५ स्थानीय छात्राओं ने फार्म भरा है इनमे जैन व जैनेतर पाठशालाओं के साथ कालेजों में अध्ययन कर रही

शिविर का उद्घाटन समारंभ

—मोतीलाल भड़कतीया

साध्वीजी श्री निर्मलाश्रीजी महाराज साहब की प्रेरणा एवं उन्ही के सानिध्य मे श्री संस्कार अध्ययन सत्र का प्रारम्भ दि० १४-५-७२ को प्रात: ६ बजे श्री आत्माराम जैन सभा में हुआ। सत्र के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता राजस्थान विधान सभा के सदस्य श्री यशवन्तसिंहजी नाहर ने की एव श्री राजरूपजी टांक ने सत्र का उद्घाटन किया। पद्मश्री श्री खेलशंकर दुर्लभजी समारोह मे मुख्य अतिथि थे एवं गणमान्य अतिथियो सहित प्रचुर मात्रा में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थी।

समारोह की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि साध्वीजी श्री निर्मलाश्रीजी अपनी शिष्याओं सहित तो उपस्थित थी ही, साथ ही खतरगच्छ की साध्वी जी महाराज साहब श्री **कल्याणश्रीजी** एवं तेरापंथी सम्प्रदाय की सतीजीश्री मन्जुश्रीजी अपनी शिष्याओं सहित समारोह मे उपस्थित थी।

सर्वप्रथम साध्वीजी श्री कल्याणश्रीजी म सा. द्वारा मंगलाचरण किया गया एवं बाद मे मुश्री पन्ना बहिन द्वारा भजन प्रस्तुत किया गया।

संघ मत्री श्री हीराचन्दजी वैद ने शिविर की रूपरेखा एवं इसके आयोजन पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। आपने बताया कि उन्हे फैमिना अखबार में लगभग दो वर्ष पूर्व इस प्रकार के शिविर आयोजन का समाचार देखने को मिला था और उसी से प्रेरित होकर उन्होंने साध्वीश्री निर्मलाश्री जी का जयपुर में चातुर्मास कराने का प्रयास किया। जयपुर श्रीसंघ के अहोभाग्य एवं साध्वीश्रीजी की सहृदयता एवं सहानुभूति से अनेक कठिनाइयों के पश्चात् ही उनका जयपुर मे पधारना हुआ एव पिछला चातुर्मास सानन्द सम्पन्न हुआ। चतुर्मास समाप्ति के साथ ही इस शिविर के आयोजन का विचार चल रहा था लेकिन चूंकि राजस्थान मे इस प्रकार के शिविर का आयोजन करने का प्रथम अवसर था अत: अनेकों शकाएं, सदेह और कठिनाइया थीं लेकिन जिस प्रकार जयपुर श्रीसंघ उठाए हुए किसी भी कार्य को सम्पन्न करने में सफल रहा है, श्रीजयवर्द्धन पार्श्वनाथ भगवान एवं जयपुर मण्डल भगवान महावीर की प्रतिमाओ की स्थापना के कार्य में सफल रहा है, उसी प्रकार आज इस शिविर का आयोजन करने मे भी सफल हो रहा है। इस शिविर मे लगभग सवा सौ बालिकाएं स्थानीय एवं २७ बालिकाएं जो कि अभी तक गुजरात से यहा आ चुकी है, भाग ले रही है। कुछ और भी बालिकाओं के आने की सम्भावना है। शिविर के आयोजन का मुख्य उद्देश्य बहिनो में नैतिक एवं अध्यात्मिक जागरण की भावना जागृत करना है। भाग लेने वाली बहिनों मे से यदि १०-१५ बहिने भी शिविर मे प्राप्त शिक्षा को अपने जीवन मे मूर्त रूप देने मे सफल होती है तो यह शिविर की बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

सघ मन्त्रीजी ने शिविर की सफलता के लिए प्राप्त संदेशो मे से कुछ के उद्धकरण भी पढ़ कर सुनाए। जिनके सदेश प्राप्त हुए है उनमे आचार्य भगवन्तो, मुनिराजों सहित केन्द्रीय गृह राज्यमन्त्री श्री रामनिवास मिर्धा, मैसूर के राज्यपाल श्री मोहन

लाल सुखाडिया, राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री बरक तुल्ला खाँ, उदयपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री एस पी सिंह भण्डारी, यशपाल जैन, सेठ इन्दुमल विमनलाल, विस्तूरभाई लालभाई सहित लगभग ८० विद्वानो के सदेश प्राप्त हुए हैं।

श्री सघ के अध्यक्ष शाह विस्तूरमलजी द्वारा आगन्तुक विशिष्ट मेहमानो का मालार्पण द्वारा स्वागत किया गया एव सुश्री पद्मा बहिन द्वारा तिलक किया गया।

समाजसेवी श्री राजरूपजी टाक द्वारा पाच ज्ञान के प्रतीक पाच द्वीप-मालिकाओ को प्रज्वलित कर शिविर के उद्घाटन की रस्म अदा की गई। इस अवसर पर उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि—

"आज इस पवित्र मौके पर मुझे याद किया गया इसके लिए मैं आप सबका बहुत आभारी हू। मैं इस पद के योग्य तो नही था लेकिन मित्रो के आग्रह स मैं यहा उपस्थित हो गया। यहा पर महान् आध्यात्मिक और धर्मप्राण व्यक्ति उपस्थित हैं जब कि मैं आध्यात्म के आस पास भी नही हूँ, फिर भी मुझे यह अवसर दिया गया इसके लिए मैं आप सबका आभारी हू।

मुझे इस बात की खुशी है कि जयपुर म इस प्रकार का पहला शिविर आयोजित किया जा रहा है। गुजरात और मध्यप्रदेश मे इस प्रकार के शिविरो का आयोजन हुआ करता था लेकिन जयपुर मे और मैं समझता हू कि राजस्थान मे सम्भवत यह पहला अवसर है। शिविर म नैतिक एव आध्यात्मिक जागरण का काय तो होगा ही लेकिन साथ ही इस अवसर पर मैं भी कुछ निवदन करना चाहता हू।

आज जो हम धार्मिक क्रियाए और काय करते हैं उनका महत्व हम नही समझते। इसका मुख्य कारण यह भी है कि जितने भी हमारे धार्मिक ग्र थ हैं वे प्राकृत भाषा मे हैं। श्वेताम्बर समाज के ग्र थ प्राकृत भाषा मे ह और उनका अनुवाद हिंदी मे करने का अभी तक कोई सगठित प्रयास नही किया गया ह। दिगम्बर समाज ने इस ओर काफी काय किया है और जयपुर के विद्वानो न काफी हिन्दीकरण उनका कर दिया है लेकिन श्वेताम्बर समाज इस ओर अभी तक कुछ नही कर सका है। इसलिए मैं इस मौके पर निवेदन करना चाहता हू कि जो कुछ भी हम धार्मिक क्रिया करें, चाह पूजा करें, सामायिक करें, पोषद करें, स्नात्र पूजा करें, या और भी कोई धार्मिक क्रिया करें तो हमे उसका मतलब मालूम होना चाहिए कि जो कुछ हम कर रहे हैं वह किसलिए कर रहे हैं, क्यो कर रहे हैं और इससे हमे फायदा क्या है। जब तक हम इसका मतलब नही समझेंगे इसको अपने अन्दर मन मे किस प्रकार उतार सकेंगे ? सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र का अथ क्या है, किसे कहते है, इनका उद्देश्य क्या है, यह जानना हमारे लिए नितान्त आवश्यक है। मैं न तो कोई विद्वान् हू और न ही कोई महापुरुष हू लेकिन फिर भी मैं यह कहना चाहता हू कि जो भी शिविरार्थी बहिनें यहाँ आई हैं उन्हे इस बारे मे जानना चाहिए और जो चीजें हमारे दैनिक काय मे आती हैं उनका मतलब समझना चाहिए, यह उनका पहला काम होना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि आज के बदलते हुए जमाने म चारो तरफ, चाहे श्रावक हो, श्राविकाए हो या और कोई हो, चारित्र्य का काफी ह्रास हो गया है। इन शिविरो के माध्यम से ही हम अपने जीवन मे परिवर्तन ला सकते हैं। क्योकि आज का जो साहित्य हमे पढने को मिलता है वह इस प्रकार का नही हैं और जो साधन उपलब्ध है, सिनेमा वगैरा, वे सब हमारे चारित्र्य को दूषित करने वाले ह। जैसी सगत होती है, वैसी ही रगत आती है। आज पाश्चात्य सस्कृति का प्रभाव हम लोगो पर ज्यादा पड रहा है, पाश्चात्य रहन-सहन ही हम

अधिकतर अपना रहे हैं और अपनी संस्कृति को धीरे-धीरे भूलते जा रहे है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि हम अपनी संस्कृति को भूल कर दूसरों की संस्कृति अपनाते जा रहे है। धीरे-धीरे हम आध्यात्मिकता से दूर होते जा रहे हैं और हमारे जीवन में संयम का अभाव होता जा रहा है। आज शिक्षा बढ़ रही है, अध्ययन में रुचि भी बढ़ रही है लेकिन जीवन में मानवता और नैतिकता देखने में नहीं आती। इसलिए आवश्यक है कि शिविर में इन सब बातो पर विचार हो और हम अपनी संस्कृति के सम्बन्ध में कुछ सीखें, अपने जीवन का विकास करें। नई पीढ़ी इससे कुछ प्रेरणा प्राप्त करें। इन्ही शब्दों के साथ मैं इस शिविर का उद्‌घाटन करता हूं।"

तत्पश्चात् शिविरार्थी बहिनों में से सुश्री **सुवर्णा** एवं कुमारिका चन्द्रा बहिन कचुकी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर तेरापंथी सम्प्रदाय की महा सतीजी श्री **मंजुश्रीजी** ने उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा—

आज इस अवसर बोलते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। यह मेरा प्रिय सब्जेक्ट है कि इस प्रकार के शिविरों का आयोजन हो और नारी उत्थान के कार्य हों। निकट भविष्य मे ही हम भगवान महा-वीर का २५००वाँ निर्वाण दिवस मनाने जा रहे हैं और उसकी शुरूआत में जो निर्माण कार्य चल रहे है उनमें इस प्रकार का शिविर का आयोजन होना बहुत प्रसन्नता का विषय है। हर समय यह कहते जरूर हैं कि ऐसा करना चाहिए, वैसा करना चाहिए, लेकिन अभी तक कुछ कर नहीं पाए। इसी का परिणाम है कि आज जो हमारा महामंत्र नवकार मंत्र है उसके बारे मे भी बहुतों को पता नही है। जैन–दर्शन की बात तो क्या जो हमारे देव है, हमारे तीर्थंकर और भगवान महावीर हैं उनके बारे मे भी हम कुछ नही जानते, उनका नाम तक हम नहीं बता सकते, यह कितने बड़े दुःख की बात है। इस प्रकार के जो शिविर आयोजित किए जाते है उनमे ज्ञान, विज्ञान और साधना योग आदि के बारे में विशेष रूप से बताया जाता है। आचार्य श्री तुलसी ने भी इस प्रकार के शिविरों का आयोजन किया था और आज साध्वीश्री निर्मलाश्री के सानिध्य में लड़कियों का यह शिविर आयोजित किया जा रहा है। यह प्रशंसनीय बात है।

जिस प्रकार एक पक्षी के दो पंख होते है और उससे वह उड़ान भरता है उसी प्रकार स्त्री और पुरुष जीवन के दो अभिन्न अंग है। लेकिन आज तक पुरुष ने स्त्री को कूप मण्डुक ही रखा है, पुरुष ने स्त्री को अपनी सम्पत्ति बनाकर घर की चार दीवारी मे बन्द रखा है लेकिन भगवान महावीर ने ढाई हजार साल पहले यह दिव्य संदेश दिया कि स्त्री और पुरुष समान है। जब तक स्त्री का उत्थान नहीं होगा—समाज का उत्थान नही हो सकेगा। आज संसार की नैतिकता नारी जाति पर ही टिकी हुई है। जब तक नारी जाति में जागृति नही आवेगी, संसार मे जागृति नही आ सकती। आज दुनियाँ प्रगति की राह पर है और नारी जाति भी उस ओर अग्रसर है। हमारे देश में प्रधानमन्त्री नारी जाति की है और वे जिस प्रकार देश का सचालन कर रही हैं वह हमारे लिए गौरव की बात है। मैं इस युग का स्वागत करती हूं कि जिसमें नारी जाति को जगाने का अवसर आया है साथ ही साथ भगवान महावीर की वाणी को भी घर-घर पहुँचाने का अवसर आया है। अगर बहिनो में जागृति आ जाती है तो जहां एक बहिन सुधरेगी वहाँ सारा घर सुधरेगा। एक घर सुधरेगा तो समाज सुधरेगा और समाज सुधरेगा तो सारा राष्ट्र सुधरेगा। आज महिलाएं बहुत ऊंचे-ऊंचे पदो पर हैं, ज्ञान–विज्ञान से परिचित है लेकिन अगर उनमें आध्यात्मिकता भी आ जावे तो बहुत कुछ हो सकता है। आज हम भौतिकता की ओर ही दौड़ रहे हैं और इसी से सारे झगड़े हैं, अगर हम ज्ञान–

विज्ञान के साथ आध्यात्मिकता अपने जीवन मे अपना लें तो बहुत सारे झगडे मिट सकते हैं। जीवन को बनाने वाला ज्ञान ही है और ज्ञान के सहारे ही जीवन चलना चाहिए, ज्ञान से ही नैतिकता जीवन मे आ सकती है और नैतिकता बिना प्राण रहने वाले नहीं हैं। शिविरार्थी बहिनें भौतिकवाद को तो देख चुकी हैं अब वे आध्यात्मिकता को देखें। भगवान महावीर की वाणी को समझें और उनके द्वारा बताई हुई आध्यात्मिकता को जीवन मे उतारें तो भगवान महावीर की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर यह बहुत सफल काय हो सकेगा।

शिविर की प्रेरक एव प्राण साध्वीश्री निर्मलाश्रीजी ने शिविर की रचना, आवश्यकता एव कार्यकलाप के बारे मे विस्तार से बताते हुए कहा—

आज ऐसा महान् दिन है कि जिसमे हम लोग आत्म अध्यात्म जागरण को समझने के लिए इकटठे हुए हैं। इस प्रसग मे महान् जीवन की रक्षा करने के लिए व्यक्ति जिस प्रकार के काय करता है उसको दो भागो म बाट सकते हैं। एक व्यक्ति वह है जो प्रेरणा प्रधान विचार वाला है, जब खाने की इच्छा हुई खा लिया, जब पीने की इच्छा हुई पी लिया, जब सोने की इच्छा हुई सो गया, या जैसा भी कुछ करने की इच्छा हुई कर लिया। एक तरह से पशुवत् जीवन उसका रहता है। लेकिन एक विवेक प्रधान, विचार प्रधान जीव है जो अपनी कमजोरियों को आगे बढने नही देता। विचार हमको भटकाता है लेकिन विवेक उस पर काबू पाता है और जीवन को सही माग पर चलने की प्रेरणा देता है। इस शिविर के आयोजन का भी मुख्य उद्देश्य यही है कि विचार प्रधान से विवेक प्रधान बनाना। लडकियो पर विशेष ध्यान इसलिए दिया जा रहा है कि हमारे शास्त्रकारो ने भी कहा है कि दस उपाध्यायों के बराबर एक आचार्य है, सौ आचार्यों के बराबर एक पिता है और हजार पिता के बराबर एक माता है। माता का महत्व इतना अधिक है। एक माता अगर सस्कारी हो जाएगी तो सारा घर सस्कारी हो जाएगा। आप यह नही समझें कि आज कल ही महिलाए पढती हैं और बी ए, एम ए करती हैं, प्राचीनकाल मे भी महिलाए पढी-लिखी हुआ करती थीं। बीच का काल ही ऐसा था जिसमे कहा जा सकता है कि स्त्री शिक्षा नहीं रही। प्राचीन काल की शकराचार्य और मण्डन मिश्र की कथा मशहूर है। शकराचार्य और मण्डन मिश्र मे जब शास्त्रार्थ हुआ और मण्डन मिश्र जब शकराचार्य से हारने लगे तो उनकी अर्धागिनि ने कहा कि अभी तक तो मण्डन मिश्र आधे ही हारे हैं, मैं उनकी अर्धागिनि हू जो अभी शेष हू। मेरे से शास्त्रार्थ करो। उसने शकराचार्य से ऐसे ऐसे प्रश्न किये कि आखिर उनका उत्तर देने के लिए शकराचार्य को छ माह का समय लेना पडा। ऐसी ऐसी विदुषी महिलाए प्राचीन काल मे हुई हैं। जिसको आज अबला कहा जा रहा है, वास्तव मे वह अबला नही है। मैं समझती हू कि रामायण के रचियताओ ने नारी के बारे मे भले ही कुछ कहा हो लेकिन मनुस्मृति और अन्य ग्रथो ने महिला को यथोचित स्थान दिया है। उन्होंने तो यहां तक कहा है कि जहा स्त्री की पूजा होती हैं वही पर देवताओ का निवास होता है। दिवाली के प्रसग म आज भी हम लक्ष्मी और सरस्वती की ही पूजा करते हैं।

आज पाश्चात्य सस्कृति पर हमारा प्रभाव पड रहा है और जैसी हमारी सगति होगी वैसा ही हम पर रग चढेगा। वैसा ही हमारे रहन सहन विचारधारा पर प्रभाव पडेगा। आज पाश्चात्य सस्कृति के रग म रग कर हम अपनी सस्कृति को भूलते जा रहे हैं, उसी का परिणाम है कि हम अपनी सस्कृति को भूल कर दूसरो की सस्कृति अपनाते जा रहे हैं। धीरे-धीरे हमारे मे आध्यात्मिकता, सयम पालन और नैतिकता का अभाव होता जा रहा है। आज के आधुनिक युग मे शिक्षा बढ रही है अध्ययन बढ रहा है लेकिन जीवन से मानवता और नैतिकता का ह्रास हो रहा है। इसी प्रसग मे

श्री श्रीप्रकाशजी की अध्यक्षता में एक कमेटी बनी थी और उसने अपनी रिपोर्ट में यही कहा था कि व्यवहारिक शिक्षण के साथ साथ आध्यात्मिक शिक्षा की भी अनिवार्यत: आवश्यकता है। राधाकृष्णन् और आधुनिक विज्ञान के अलबर्ट आस्टीन ने भी आध्यात्मिक जीवन पर बल दिया है। जीवन की सबसे बड़ी समस्या मानव को मानव बनाने की है। जीवों में दुर्लभ जीवन मानव का है लेकिन मानव जीवन पा कर भी वह वास्तव मे मानव बन पाता है या नहीं, यह सबसे विचारणीय है। शिविर मे मुख्यरूप से इसी पर विवेचन होता है और बहिनों को यही सिखाया जाता है कि वे किस प्रकार मानव बनें। शिविर में प्रात: साढे पाँच बजे प्रार्थना से दिनचर्या प्रारम्भ होती है। प्रार्थना क्यों की जाय और प्रार्थना करने से क्या फायदा है, हमारे जीवन मे इसका क्या महत्त्व है, उसके फायदे लाभ क्या हैं, ये ही बाते शिविर मे बतायी जावेंगी। साथ ही साथ शरीर, काया और वचनों के बारे मे भी बताया जावेगा।

भगवान महावीर ने भी कहा है कि हम यह पहचाने कि हम कौन हैं, हमारा उद्देश्य क्या है और हमारा जीवन क्यों है, हमारा जीवन किस प्रकार का हो ? इसी विषय मे एक प्रसग आता है कि एक पिता ने अपने पुत्र मे पूछा कि तुम जीवन मे क्या करना चाहते हो, तो उसने बताया कि मैं पढ़ाई करूंगा, शादी करूंगा, काम काज करूंगा, रिटायर हो जाऊंगा और आखिर में मर जाऊंगा। तो निष्कर्ष निकला कि केवल मरने के लिए ही सारे प्रपंच करते रहोगे तो इस जीवन को प्राप्त करने का फल क्या हुआ ? इस जीवन का महत्व और उपयोगिता क्या हुई ? इसलिए शिविर मे इस जीवन के महत्व और हमे अपने जीवन काल में अपने आत्मा के उद्धार के लिए क्या करना चाहिए, इसको बताया जावेगा। भगवान महावीर की वाणी ऐसी है कि जिसे हर कोई अपनी भाषा मे समझ सकता है। जिस प्रकार आधुनिक युग में एक बार एक भाषा में बोली हुई बात को एक ही समय में अन्य भाषा में सुना और समझा जा सकता है उसी प्रकार भगवान की वाणी को भी अपनी अपनी मान्यताओं के अनुसार समझा जा सकता है। जिस प्रकार एक हैप्टोनिज्म वाला किसी को भी हैप्टोनाईज कर अपनी भाषा मे उसको मोहित कर अपनी बात समझने के लिए विवश कर सकता है उसी प्रकार भगवान महावीर की वाणी में भी इतनी शक्ति है कि वह मनुष्य को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर सकती है। शिविर में बताया जाएगा कि भगवान की वाणी का क्या महत्व है, धर्म ग्रन्थों का क्या महत्व है, नवकार मंत्र का क्या महत्व है, इसका क्या वैज्ञानिक आधार है, ये सब बातें शिविर में बताई जावेंगी।

खेलूभाई से मिलने का मेरा प्रथम अवसर है। मैंने सुना है कि वे शरीर के रोगों को दूर करने के लिए अस्पताल आदि बनवाकर सेवा कर रहे है। रोग दो प्रकार के होते है, एक बाहरी रोग और एक आंतरिक रोग जिस प्रकार बाहरी रोगों को समझने के लिए उसके कारणों की खोज की जाती है उसी प्रकार आन्तरिक रोगों को समझने के लिए जो इसके कारण क्रोध, मान, माया, लोभ है, उनको समझने और उनका निराकरण करने का प्रयास किया जाना चाहिए। मैं आशा करती हूं वे बाहरी रोगों को दूर करने के साथ साथ भाव रोगों को या आंतरिक रोगों को दूर करने का भी प्रयास करेंगे।

राजरूपजी साहब भी धार्मिक व्यक्ति हैं, उनकी धर्मशाला है और धार्मिक कार्यों में रुचि रखते हैं। उन्होंने ज्ञान की ज्योति आज जलाई है और उनकी विचारधारा के अनुसार ही आज का यह कार्य प्रारम्भ हो रहा है।

आशा है कि आप सब के सहयोग और परिश्रम से शिविर का आयोजन सफल होगा।

समारोह के मुख्य अतिथि पद्मश्री खेलशंकर दुर्लभजी ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—

इस शिविर के बारे में महामतियाजी एव मार्त्वीजी महाराज साहब ने जो कुछ फरमाया है, शिविर की उपयोगिता के बारे मे कोई दो राय नही हो सकती। जयपुर समाज को आज यह सौभाग्य मिला है कि यहा इस प्रकार के शिविर आयोजन हो रहा है और इसमे मेरा भी सौभाग्य है कि मुझे भी यहा आकर कुछ सेवा करने का लाभ मिल रहा है। मैं थोडा स्पष्टवादी हू और इससे समाज मे थोडा बदनाम भी हू लेकिन जो कुछ मेरे विचार हैं उनको मैं कहे बिना नहीं रह सकता भले ही किसी को अच्छा लगे या बुरा।

महामतियाजी ने आध्यात्मिक ज्ञान के बारे मे कहा लेकिन मेरा यह अर्ज करना है कि आज जैन समाज इस तरह विभिन्न सम्प्रदायो मे बट गया है कि हमें यह भी नही मालूम कि हिन्दुस्तान मे जैनियो की कुल सख्या क्या है। कोई दस लाख बताता है तो कोई पचास लाख। वह समय अत्यन्त दुर्भाग्य का था जब हम एक ही मत को मानने वाले अलग २ भागो मे बट गए। कोई स्थानकवासी हो गया तो कोई मदिर मार्गी और मदिरमार्गियो मे भी कोई तपागच्छी तो कोई खरतरगच्छी, कोई तेरहपथी हो गए और सभी अपनी बात करते रहते हैं। आज हम अपने बच्चो का दोष देते हैं कि वे धर्म की ओर रुचि नहीं रखते, मदिर या स्थानक मे नहीं आते। लेकिन जब हम उनसे यहा आने के लिए कहते हैं तो उनका जवाब यह होता है कि फला साधु फला साधु की बुराई कर रहा है, फला समाज मे मुकदमे चल रहे हैं, फला समाज मे फला झगडे हो रहे हैं तो हम वहा जाकर क्या करें। ऐसी स्थिति मे हम उनसे कैसे कह सकते हैं कि वे यहा पर आवें ही। मैं भी अपने बच्चों को जब कहता हू और वे मुझे यह जवाब देते हैं तो मुझे भी चुप हो जाना पडता है।

जब तक हम इस व्याप्त बीमारी को नहीं रोकेंगे तब तक हम युवा पीढी को इस ओर प्रेरित नहीं कर पायेंगे। आज की सबसे बडी आवश्यकता इन्टीग्रेशन की है। कुछ ही दिनो मे हम भगवान महावीर की जयन्ती मनाने वाले हैं और उसी प्रसग मे मैं भी दिल्ली गया था। सभी सम्प्रदायो के लोगो ने मिल कर एक कॅसोलिडेटेड स्कीम बना कर भारत सरकार के सामने पेश की है और उस पर भारत सरकार ने अपनी ओर से पचास लाख की स्वीकृति दी है। आप जानते हैं कि जब सिखो के गुरु नानक की इस प्रकार की जयन्ती मनाई गई तो ७ करोड रुपया उन्होंने इकट्ठा किया था और जगह जगह जहाँ पर गुरुद्वारे नही थे वहाँ पर गुरुद्वारे बनाए गए और स्थायी कार्य किए गए। इसी प्रकार इस मौके पर हम भी कुछ स्थायी कार्य करना चाहते हैं लेकिन इसका भी विरोध किया जा रहा है और जो कुछ अपने विचारो के अनुसार है उसी को हम धर्म मानते हैं और उसी को करना चाहते हैं। इसका परिणाम आज तो यह हो रहा है कि अगर कोई विदेशी हमारे यहाँ आता है और जैन धर्म के बारे मे पूछता है तो स्थानकवासियो मे कोई आचार्य श्री आनन्दऋषिजी को अपना मुखिया बताता है तो कोई हस्तीमलजी और नानालालजी को मुखिया बताता है। कोई आचार्य तुलसी को बताता है तो कोई अपने सम्प्रदाय के आचार्यों को ही जैन धर्म के मुखिया बताते हैं। इससे वह आने वाला भी गुमराह हो जाता है और वह यही नही समझ पाता कि इनका वास्तव मे स्पोक्समैन कौन है। जैनियो का असली धर्म कौनसा है। इसलिए आज की आवश्यकता यह है कि हम जैन धर्म का इन्टीग्रेशन करें। भले ही हम अपनी अपनी मान्यताओ के अनुसार अपनी क्रियायें करें, अपनी रोजमर्रा की दिनचर्या करें लेकिन जैन धर्म के जो महान् प्रवर्तक हैं भगवान महावीर उन्ही को सर्वेसर्वा मान कर चलें। अपने झगडो को मिटायें।

दूसरी बात मै यह निवेदन करना चाहता था कि वास्तव मे धर्म का आधार क्या है? क्या प्रति-

दिन सामायिक कर लेना,मन्दिर ग्रा जाना, उपाश्रय मे ग्रा जाना, ग्रौर कोई धार्मिक क्रियायें कर लेना ही धर्म है या धर्म मानव की सेवा में है । ग्राज हमे धर्म का स्वरूप भी ग्राधुनिक धारा के ग्रनुसार वदलना पड़ेगा । ग्राज एक मरीज की सेवा करना सवसे वड़ा धर्म है । ग्रापने मिशनरीज को देखा होगा । किस प्रकार वे एक कुष्ठ रोगी की सेवा करते हुए ग्रपना जीवन वलिदान कर देते हैं । ग्रापने ग्रपने यहाँ जयपुर में देखा होगा कि एक प्रेमजी सिंघी हैं, जो प्रतिदिन सुवह ही सवाई मानसिंह ग्रस्पताल मे जाते है ग्रौर सारे रोगियों से सम्पर्क कर इनकी सेवा करते है, उनकी दवाई ग्रादि की व्यवस्था करते है ।कोई ऐसा गरीव हो कि जो दवाई तक नहीं खरीद सकता उसकी कहीं से भी व्यवस्था कराते हैं । तो ऐसा व्यक्ति मै समझता हूं कि हम सव में महान् है । इसलिए ग्राज की समय की पुकार है कि हम ग्रपने तौर तरीकों में सुधार लावें ग्रौर समय के ग्रनुसार उनमें तवदीली लावें । ग्राज ग्रगर हमारी साध्वीजी जनाना ग्रस्पताल में जाकर रोगिणियों से सम्पर्क स्थापित करती है, उनकी सेवा ग्रौर दुख दर्द को दूर करने की व्यवस्था करती है तो वे उनको ग्रधिक प्रभावित कर सकेंगी वजाय इसके कि यहाँ बैठकर उनको उपदेश देते रहें ।

ग्राज जैन समाज मे प्रगतिशीलता की भी कमी नही है, लोग हिन्दुस्तान से वाहर भी जाते है, विलायत जाते है, व्यापार करते हैं, पढे लिखे हैं, प्रतिष्ठित हैं । जो ग्राज वारवार यह कहा जाता है कि इस प्रकार के रहन सहन से ग्रौर कार्यो से जैन धर्म समाप्त हो जाएगा तो मै कहना चाहता हूं कि जैन धर्म की नीव वहुत मजवूत है । धर्म, क्रियाग्रों से नही विचारो से वनता है । जैन धर्म की विचारधारा इतनी सुदृढ़ है कि ग्राज वह सदियों के वाद भी उसी प्रकार विद्यमान है । लेकिन जो ग्राज भी हमारी रुढ़ीवादी विचार धारा है उसको हमे वदलना पड़ेगा । हमे ग्राज १९७२ की विचारधारा से ही सोचना होगा । ग्रगर हम १८७२ की विचारधारा से सोचना चाहेंगे तो हम ग्राज की युवा पीढ़ी को ग्राकर्षित नहीं कर पायेंगे । ग्राज की हमारी जो पीढ़ी मौजूद है वह तो भले ही इन मन्दिरो एव उपाश्रयों मे ग्राती रहेगी लेकिन ग्राने वाली पीढ़ी इस ग्रोर ग्रग्रसर होने वाली नहीं है । इसलिए ग्रावश्यकता इस वात की है कि हम ग्रपने विचारों को समय के ग्रनुसार वनावें ग्रौर ग्रपने ग्राचरण से उनको प्रभावित करे ।

मैं ग्राशा करता हू कि जयपुर में जो शिविर का ग्रायोजन किया जा रहा है उसमे ग्राप इस वारे में विचार करेंगे ग्रौर वालिकाग्रो मे इसके ग्रनुरूप विचारधारा का पोषण करेंगे कि जहाँ वे ग्राध्यात्मिकता को जीवन में ग्रपना कर ग्रपना मानव जीवन सुधार सकें वहाँ जीवन मे नैतिकता ग्रौर सदाचार का पोषण कर ग्राज की ग्रावश्यकतानुरूप ग्रपना जीवन वना सके ।

समारोह के सभापति **श्री यशवन्तसिंहजी नाहर** ने ग्रपना समापन भाषण प्रारम्भ करते हुए कहा—

ग्रव समय इतना ग्रधिक हो गया है कि वोलने की इच्छा होते हुए भी ज्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता । लेकिन एक दो वातें वहुत उलझी हुई है जिन पर मै जरूर कहना चाहूंगा । जव कभी ऐसे स्थानों पर ग्राते है तो कुछ वातें दिमाग को परेशान कर देती हैं । कभी कभी हम ग्रपने ग्रापको इतना धार्मिक समझ लिया करते हैं कि धर्म का ग्रर्थ ही जो कुछ सोचते हैं, जो हमारे विचार हैं उन्हीं को हम धर्म मानते है ग्रौर वाकी सवको ग्रधर्मी मान लेते हैं । ग्राज का युग भौतिकवादी कहा जाता है, पाश्चात्यवाद का नमूना कहा जाता है लेकिन कहाँ भौतिकवाद नही है , कहाँ परिग्रह नही है । ग्राज जिस प्रकार का जीवन हम जी रहे है, जिस प्रकार के साधन ग्रौर सुविधाएं हमारे पास हैं क्या वे ग्रपरिग्रह में है । हमारे धर्म मे ग्रौर हमारे विचारों एक कमजोरी हमेशा से रही है । हमे धर्म व

आफरा चढा करता है और उस आफरे मे हम सब कुछ भूल जाते हैं।

आज का युग विनान का युग है। एक वैनानिक ठोक वजाकर किसी बात को मानता है। इसलिए अगर हम धम के मामले मे भी बीच का रास्ता अपनाएगें और समन्वय का रास्ता अपना कर चलेंगे तो ही हमारा रास्ता सही रास्ता होगा। इन्हीं शब्दा के साथ मैं शिविर की सफलता की कामना करता हू।

शिविर के सयोजक श्री शिवरचद्रजी पालावत ने सभी उपस्थित महानुभावो के प्रति एव शिविर के आयोजन मे जिन जिन ने सहयोग प्रदान किया उनके प्रति आभार प्रदर्शित किया।

सुश्री पन्ना बहिन के गायन के साथ समारोह की कार्यवाही का समापन हुआ।

शिविर समापन

पर

हार्दिक बधाई

साराभाई कुटुम्ब सखावत ट्रस्ट

साहीबाग हाउस, साही बाग,

अहमदाबाद-४